जय श्रीधूनीवाले दादाजीकी ॥

भारतकी दशा ।

॥ पद. ॥

निज हृदपद्मे स्मरि देव दयामय ।
श्रीधूनिवाले दादाकी बोलो जय जय ॥
महाउच्च स्वरे कहो जय जय जय ।
जय जय जय बोलो जय जय जय ॥

गजल ।

रक्षा करो हमारी दादाजी धूनिवाले ।
ॐकार निर्विकारं शंकर कैलासवाले ॥
भक्तोंके हेत प्रभुने अवधूतभेष धारा ।
कलियुगचारित्र अपना सबको दिखानेवाले ॥
ऋषभदेव नाम धरकर सतयुग स्वरूप धारा ।
वृत्ति अखंड धारी परमहंस कहानेवाले ॥
त्रेतामें राम होकर क्षितिभारको उतारा ।
लीला दिखाई अपनी ऊँचे निशानवाले ॥
द्वापर दिखाई क्रीडा श्रीकृष्ण नाम धारा ।
सखियोंके साथ खेलें वंशी बजानेवाले ॥
तुम्ही विराजे काशी जगदीश मौन धारा ।
दर्शन दियो मुरारी धूनी रमानेवाले ॥

रेवाखंडमें प्रगट हो कृष्णानंद नाम भाग ।
लडकोंके साथ खेलें दादा कहानेवाले ॥
अयोध्यामें जाके देखा ब्रजभूमि छानडाली ।
फिरभी पता न पाया दादाजी धूनीवाले ॥
मन्दिरमें जाके देखा मसजिदभी ढूंड डाली ।
गिरजों पता न पाया शंकर कैलासवाले ॥
कहिं रामजी कहाये कहिं मीन रूप धारा ।
कहिं कृष्णरूप धरकर लीला दिखानेवाले ॥
मुहम्मदका रूप धरकर इसलामको प्रचारा ।
ईसामसीहा बनकर उपदेश देनेवाले ॥
नानक कहीं कहाये कहिं बौद्ध जा कहाये ।
कबिरा कहीं कहाये साहब कहानेवाले ॥
चारों धाम ढूंड डाले तोभी पता न पाया ।
रेवाके उत्तर तटपर धूनी रमानेवाले ॥

गज़ल ।

सत्ता तुम्हारि दादा जगमें समा रही है ।
तेरी दया सुगन्धि हरगुलसे आरही है ॥
रवि चन्द्र और तारे तूने बनाये सारे ।
इन सबमें ज्योति तेरी इक जगमगा रही है ॥
विस्तृत वसुन्धरापर सागर बनाये तूने ।
तह जिनकी मोतियोंसे अब चम चमा रही है ॥

दिन रात्रि प्रात सन्ध्या और मध्याह्न भी बनाया।
हरऋतु पलट २ कर कर्तव दिखा रही है॥
हे ब्रह्म विश्वकरता वर्णन हो तेरा कैसा।
जल थलमें तेरि महिमा हे ईश छा रही है॥
सुन्दर सुगंधिवाले पुष्पोंमें है रंग तेरा।
यह ध्यान फूल पत्ती तेरा दिला रही है॥
भक्ति तुम्हारि दादा क्योंकर हमें मिलेगी।
माया तुम्हारी स्वामिन हमको भुला रही है॥
सेवक चरण शरण है तुझसे यही विनय है।
हो दूर यह अविद्या हमको भुला रही है॥

"प्रार्थना"

करमकर मेरे हालपर अय करीम।
तुही दोनों जहानोंका सुलतान है॥
फना होनेवाला है सब कारोबार।
रहे नाम तेरा जगह आशकार॥
कोई खुदा कहो हम दादाका नाम लेंगे।
काबा कहो या काशी गुरुधाम हम कहेंगे॥
कोई पंच वक्त पढता करता त्रिकाल संध्या।
भोलेका नाम प्यारा हम आठों याम लेंगे॥
कोई करे इबादत कोई बन्दगी करेगा।
कर जोड़ सद्गुरुको परणाम हम करेंगे॥

गफलत छोड उठो रे भाई, अब तो हुआ सवेरा है ॥ टेक० ॥
तन मन शुद्ध करो तुम वेगि, यही भजनकी वेरा है।
काम क्रोध लोभ मद छांडो, तब तन पाक हो तेरा है॥
करो बन्दगी उस साहिबकी, जिसका बना तू चेरा है।
बिना भजन भगवानके प्यारे, सिरपर पाप घनेरा है॥
दया भाव सब पर तुम राखो, जो जग कीन्ह बसेरा है।
सेवक द्विज कहे सुन प्यारे, अब तो चेत सवेरा है ॥१॥
सूरज निकला हुआ सवेरा, तू क्यों अबतक सोता है ॥ टेक०॥
काम क्रोध लोभका बोझा, तू सिरपर क्यों ढोता है।
भवसागरमें आकर बन्दे, क्यों तू खाता गोता है॥
तन पवित्र अपनेमें प्यारे, पाप बीज क्यों बोता है।
कोई संग न जावे तेरे, क्या बेटा क्या पोता है॥
कहे भक्त जन सुन प्यारे बन्दे, उमर मुफ्त क्यों खोता है ॥ २ ॥
क्या सोवे गफलतके माहीं, जाग जाग नर जागरे ॥ टेक० ॥
तन सरायमें आय मुसाफिर, करता है दीमागरे।
रैन बसेरा करले डेरा, चला सवेरा त्याग रे॥
उमदा चोला पाय भया अमोला, लगा दागपर दाग रे।
दो दिनकी महिमा तुम प्यारे, तजो जगत्की आग रे॥
कर्म कांचुली चढ़ी चित्तपै, भया मनुष्य ते नाग रे।
सूझे नहीं सज्जन सुखसागर, बिना प्रेम वैराग्य रे॥
हरि सुमरे सो हंस कहावे, कामी क्रोधी काग रे।
आनन्दघन महबूब सांवरो, प्रगट्यो पूरन भाग रे॥
कोई नाविध मनको रमावे, मनके लगा हो हरि पावे रे।

जैसे नटनी चढत वरदपर, ऊंचे ढोल घुमावे रे ॥
अपनो भार धरे सिर ऊपर, सुरत वरदसों लगावे रे ।
जैसे तिरिया जात भरन जल,चुंगली डुलन न पावे रे ॥
बाट चलत तिरिया बात करत है,सुरत गगरसे लगावे रे।
जैसे सूर चढ़े रन ऊपर, मनमें संशय न लावे रे ॥
टूक २ हो गिरत धरनपर, पीछे पाव न धारे रे ॥ ३ ॥

दुनियांके परदे पै केशव दादा अयां ॥ टेक० ॥
फर्शे जमीपे हिन्दके ये एक मुकाम है ।
सारे जहांमें हर जगहपै इसका नाम है ।
कर्ता दास है हालत उसकी बयां ॥ ० ॥
भारत उधारका अधार इनसे नजर आता है ।
आसार विजय देशका कुछ रंग दिखाता है ॥
प्रभु करके कृपा अब करेंगे दया ॥ ० ॥
दे करके शक्ति दासोंको, असुरन नसायेंगे ।
मर्य्याद वेद शास्त्रकी खुद ही बचायेंगे ॥
भेरी रणकी बजेगी, बजेगी यहां ॥ ० ॥
कुदरतके करिश्मेको दिखा,शान दिखा देते हैं ।
आदर्श जमानेमें प्रभु, सबको सिखा देते हैं ॥
कहता है दास, है दादाकी राज न्याहां ॥ ० ॥
ऐसी खबर सुनके तेरा दास, यहां आया है ।
करके कृपा नाथ, तुम्हीं मुझको बुलाया है ॥
लज तेरी शरण अब जाऊं कहां ॥ ० ॥

शीघ्र दया करके करो काम जगतका।
वर्दान देके राखिये अब लाज भगतका॥
नहीं दुःखका सितम अब जाता सहा॥ ७॥

कलांमें क़लंदरीमें कहा है—

आंज़मा सूफी किदर सिफत रसीद—
जुमले आलम वेखवर गुम गश्तः दीद।
गर सखुन गोयन्द न नुवद मानई—
वाज़र मुहताज़ अन्द सुई सानई॥

जब सूफी—ब्रह्मज्ञानी—ब्रह्मकी अवस्थाको पहुँच जाता है—ब्रह्ममय-सर्वं खल्विदं ब्रह्म—हो जाता है उस वक्त उसके मुँहसे जो सखुन—कलाम शब्द—अक्षर—निकलते हैं—उनका मतलब वाहिर मुल्कोंकी समझमें नहीं आता—याने तालीम उस दर्जे तक जिसने नहीं पाई है—जिन्होंने अपने अपनेको जाना है—उन्हींके समझमें आता है—मौलाना रूमका कलाम है।

मन काफ़िरे खुदा येम खुदा-काफिर मां।
मन मुर्शद खुदा येम-खुदा मुर्शद मां॥

याने मैं खुदाको पैदा करनेवाला हूँ और खुदा मुझको पैदा करने वाला है "मैं" खुदाका मुर्शद हूँ—गुरु हूँ और खुदा मेरा मुर्शद है।

श्लोक—यत्कर्म्म कुर्वतः स्यात्तु परितोषोऽन्तरात्मनः।
तत्प्रयत्नेन कुर्वीत विपरीतं तु वर्जयेत्॥

जिस कर्म्म करनेसे अन्तरात्माको सन्तोष होता है, प्रयत्नपूर्वक वह कर्म्म करना चाहिये—किन्तु उसके विपरीत कोई भी कर्म्म न करे

चाहिये। उस गूढ़ सत्यको जान लेनेपर तू स्वयं अपने लिये सत्यशील याने सच्चा हो—

गर न बूदी जाते हक अन्दर वुजूद—
आबो गिलश कय मलिक करदा सुजूद।

अगर खुदाका नूर अन्दर नहीं होता तो पानी और मिट्टीको कौन फरिश्ता सिजदा (प्रणाम) करता—अगर हम सच्चे ख्यालोंके सच्चे गहरे भावका अच्छा फोटू अपने दिलपर नक्श करलें तो उसी वक्त विश्वदृष्टि प्राप्त होकर हम पूर्ण आशावादी होकर सबको पूर्ण कर सकते हैं—इस लिये कुरानशरीफमें भी लिखा है "सुरतुललाइल" में रातको बन्दगी करनेपर जोर दिया गया और किसी आयत्का मतलब है कि इस विशाल जगत्की सब धन दौलतसे उषःकाल (ब्राह्ममुहूर्त्त) की प्रार्थना अधिक क़ीमती है—आदमी खुदाका अंश है जब वह अपना अंश ईश्वरमें मिलाकर एक रूप हो जाता है—तो फिर उसकी विचारशक्तिका साम्राज्य जगत्पर होनेमें क्या शंका है? विचारशक्ति अत्यन्त बलशालिनी है—यह विद्या सीखनेसे होती है—यह विद्या सिवाय धूनीवाले दादाके और कोई इस समय नहीं जानता है।उसके सीखनेको उसके पीछे इतने सैकड़ों मजनूं बने फिरते हैं—"दिलबुतोंको देदीया—कावे चलें किस दिलसे हम" धर्म्मकी तालीम इस लिये दी गई है, कि लोग एक दूसरेकी हिंसा न करें—याने एक दूसरेको नुक़सान व तकलीफ न पहुँचावे इसलिये जिससे हिंसा दूर हो वह धर्म्म ड्युटि इन्साफ है, (बंबोम् बंबं बोम् बंबंबं बोम्)—

केशव दादाकी चरणोंमें मेरी शरण ॥ ० ॥
आकरके दुखी दीन यां त्राण पाते हैं।
मनकी मांग पाय २ इनकी गुणन गाते हैं ॥
इनके दर्शनसे होते हैं पाप हरण ॥ ० ॥
है अपार भेद कोई पार नहीं पाता है।
और ब्रह्मानन्दका आनन्द दरश पाता है ॥
होते भक्तों हैं देखके मनमें मगन ॥ ० ॥
निष्कर्मताकी वेश देख चित्त चाकित होती है।
अज्ञान भरी आत्माकी मैल सकल धोती है ॥
करते भगतोंको अपने तारन तरन ॥ ० ॥
खट दर्शनोंकी हेत यां जमात आती है।
मुस्लिम ईसाई देख इसे होश चकर खाती हैं ॥
शुद्धि पाते हैं यां पर चारों वरन ॥ ० ॥

नोटिस।

"हर खासोआम व श्रीधूनीवाले दादाके भक्तोंको संदेश"

हे गौ साधू ब्राह्मणके रक्षको! भारतवर्षीय हिन्दू जनता!! नई रोश नीवालो!!! आप लोगोंको विदित है कि दादाजी महाराज २५ वर्ष से सांईखेड़ा ग्राममें विराजमान थे और अब उज्जैन पुरीमें पधारे हुये हैं- इस २५ वर्षके समयमें आदिसे लेकर अभी तक उनके शिष्यों भक्तों द्वारा वे गुरु तथा शंकररूपमें पूजे जाते हैं। क्योंकि वे षड् ऐश्वर्य्यसंपन्न हैं- किन्तु कुछ समयसे कई सज्जनोंके समाचार पत्रोंमें निर्मूल आक्षेपोंसे भरे

हुये लेख देखनेमें आते हैं जिनका कि प्रेमी भक्तोंपर तो कुछ भी असर नहीं पड़ सकता—लेकिन भोली भाली जनता भ्रममें पड़ जाती है—यहां पर यह प्रकाश कर देना अनुचित नहीं होगा कि, दादाजीके भक्तोंमेंसे अधिकांश संख्या राजा—महाराजाओं तथा रईसानों—सुशिक्षित—प्रतिष्ठित—धनाढ्यों—सरकारी मुलाजमानों व सभी मतमतान्तरवालों भारतीय जनोंकी है, इसलिये सर्व श्रीदादाप्रेमियों व भारतियोंसे नम्र निवेदन है कि वे तारीख माह सन् हालको " शांकरी मत " के जीर्णोद्धार करनेको यह एक दिगम्बर अवतारी शंकर इस कलियुगमें उपस्थित हो प्रकाश हो रहा उसके प्रेमी सज्जन हिन्दूभक्त—सनातन धर्म्मी जो सर्वव्यापक—जगन्नियन्ता जगत्-पिता दादाके सच्चे भक्त सेवक हैं—त्रेता—द्वापरी अवतारोंके कथनानुसार "धर्म्म ग्लानी" के समय अवतार होना साबित है, उसी प्रकार कलियुगमें शंकरअवतार" आसाढ़मास गुरुपूर्णिमा उत्सवपर पधार कर उपस्थित सज्जन-भक्तोंको वर्ण धर्म, वर्ण आश्रमानुसार—काशी व उज्जैनपुरीके शास्त्रियोंसे व्यवस्था लेकर उज्जैनपुरीमें व नर्मदा किनारे आंवलीघांट व खर्राघांट होशंगाबादमें अवधूताश्रम स्थानको बाकायदा पंचोंकी हैसियतसे त्रष्टी बनकर दरबारका इन्तजाम कर अपने कल्याणार्थ स्थानकी स्थापना करनेकी शीघ्र व्यवस्था करें—जिनको अपने हिन्दूसनातनधर्मकी लज्जा रखनेके लिये २४—२५ वर्ष क्या ? जिसने आजीवन सुखदुःख सह २ कर संसार भरकी पबलिकपर प्रभुत्व दिखाते हुए—सुख देते हुये—सबोंकी इच्छायें पूरी करते हुए क्लासें कायम करते हुये, सच्चे दरबारकी स्थापनाका हर वर्ष गुरुपूर्णिमा उत्सव मनाते हुये नियम नियत कर कार्य्य करते रहें—विलम्ब न करें।

हे वर्णधर्मानुसार आश्रम माननेवाले सनातनी वीरो ! धर्म और देश-की रक्षाके लिये परमात्माके फरमानमें फर्क न दिखाते हुये "भारतियोंको" संसार भरके योगियोंको ५६ लाख साधुओंको स्वतंत्रतामें परतंत्रताका निःसार तुच्छ ख्वाब निकाल नई रोशनीके चंचल चपल नवयुवकोंको सनातनधर्म्मका निचोड़—सीतापादरी—वैरागी-उदासी-संन्यासी-लालपादरी व आपा पंथियोंको कमरकस—तिरस्कार सहना—दिलखोल दिलशाही देना चाहिये कि, हिन्दुस्थानकी महान आत्माओंके साथ विदेशी—भाषा-भाषी नास्तिक क्या क्या वर्ताव कर रहे हैं—" सनातनधर्म्म " सच्चा वेद है सबको सुनाना—धर्म्मके प्रचारमें तनमन लगाना—अच्छे कर्म्मोंके लिये यह मानुष जन्म मिला है, हर्गिज व्यर्थ जीवनको नहीं बिताना चाहिये। राजनीतिज्ञोंको भी इस धर्म्म नीतिके ग्रहण करनेमें देर न करना चाहिये। जनता भ्रममें न पड़े इसलिये हरखासो-आमको इत्तला दीजाती कि "दादाजी महाराज शंकरअवतारके दरबारमें" "दण्डीस्वामी—" नाम-को-आमदनकी केदी व्यभिचारको बढ़ाता हुआ "धर्म्मकी आड़में ढोंगकर" भोलीभाली जनता आस्तिककी—पबलिकको नास्तिक बना—भ्रममें डाल अपनेतईं जितेन्द्रियबन—जितेन्द्रियोंके सरताज शिरोमणि हो सनातनधर्म्मके साधु-ओंको लजा रहा है—उसको दादाजीने नंगा नहीं किया—न उसका नाम ही रखा—जबरदस्ती देखादेखी नङ्गा हो छोटे दादाकी बराबरी कर उनका प्राईवेट सेक्रेटरी बना हुआ दादा—भक्तोंको लूटखसोट—" साधु-ओंसे हमदर्दी न रखते हुये—" गुण्डोंके गिरोहको एकत्र कर शिव निर्मा-ल्यको सद् उपयोग न करते हुये—जगत् गुरु शंकराचार्य्य संन्यासका परि-चय दे रहा है, तीनों भेषके साधूमण्डल व ब्रह्मचारी आध्यात्मिक विद्व-ज्जन व दादाभक्त जनता व गवर्मेन्टसरकारके कर्म्मचारीगण—इस ओर

ध्यान दे इन्तजाम कर सावधान रहें; यही स्वराज्य है—"पाखंडकी पोल" नम्र यौवन अवस्थामें हो जितेन्द्रिय बन भोलेभाले सनातनियोंको धोखा दे दे जनताकी दृष्टिमें तूफान खड़ाकर रखा है—लेकिन अब वह सांई-खेड़ाका जमाना निकल चुका है—जब कि गुण्डे बदमाशोंकी करतूत—ब्रह्म-वाक्य व रेखमें मेख मारना :" दालभातमें मूसलचन्दकी तरह " समझा जाता था, हालमें इस बातका एक पुष्ट प्रमाण मिल गया—जो महंकाल-की उज्जैन पुरीमें—उज्जैनकी जनताने "कर्म्मवीर समाचारपत्रमें" इज्जत अफजाई गुण्डोंकी गुंडाई संसारभरके सामने धर धमकी ।

प्रभासपट्टनके जगत्गुरु शंकराचार्य्यके शिष्य भास्करतीर्थ नानको आप्रें-शनका कैदी सजायाब-अपने गुरुसे गुरुद्रोही-नुगरा-अपनेको जितेन्द्रिय मान नम्र हो सनातनधर्मको बट्टा लगा। छोटे दादाकी अध्यक्षतामें अंग्रेजी व संस्कृतका विद्वान बन काबुलके बच्चे सक्काकी तरह बुद्धिवान बन चंच-लताकी चपलतासे चतुर बना हुआ—दिन दुपहर सबकी आँखोंमें धूल झोंक सनातनी अपने दण्डी गुरुको लजा—एक महान योगीकी भी ले दे करा रहा है—अपने अवगुणोंको छिपानेके लिये—दादाजी महाराजका आसन छुडा-सांईखेडा, आंवलीघांट, बुधनीघांट, खर्राघांट, होशंगाबाद नर्मदा किनारा छुड़ा सप्तपुरियोंमें श्रेष्ठ उज्जैनपुरीसे भी हटानेके इरादेसे जा बजा लिये २ फिरता है-उस वृद्ध योगीकी इच्छा कुछ नहीं है तिस पर भी अवधूत आश्रम उज्जैनपुरीमें ही स्थिर होना चाहिये,समाधी नर्मदा किनारे होना चाहिये क्योंकि वह नर्मदातीर्थके वासी समझे जाते हैं ।

अछूतोद्धारके प्रतिष्ठित नेताओंसे टक्कर लगा—लागू न हो-साधुओंके व्यभिचारके समर्थनमें समग्र भारतके पन्थाभिमानी-देशाभिमानी दलोंको-हिन्दूपंचोंको, शैवमतावलम्बियोंको एकत्र हो धर्मकी जड़ें—धर्म्मादे खातेकी

आमदनियां-ज़मीनें-जायदादोंका सदुपयोग करनेका डेपूटेशन भारतके विद्वान शास्त्री काशीपुरी व उज्जैनपुरीके पास भेजकर व्यवस्था ली जाय और कहा जाय कि उक्त "धर्मके नाशक विरोधी" दलको सच्चे धर्मानुयायी न समझ सप्तपुरियोंमें श्रेष्ठ उज्जैनपुरी काशीपुरीके सच्चे-निष्पक्ष-समझदार भारतके हिन्दू धर्म्मप्रेमी निश्चय कर "महंकाल विश्वंभर"को सराहते हुए, धर्मकी आड़में भारतके व्यभिचारी गुण्डोंका यथायोग्य समर्थन कर दण्ड दें व दिलावें,संसारभरमें यह धर्म अपनी झलकसे झलकता हुआ स्मारक चिह्न प्रकाश हो, सब मतोंको स्वतंत्रता स्थिर करा यशके भागी बनें।

उन्हें यह सिद्ध कर देना चाहिये कि दादावली अल्लाहके साथी लोग व्यभिचार जोरशोरके साथ मचा रहे हैं, वह व्यर्थ है या लाभदायक है-और क्या हिन्दू जनता इस रीतिसे प्रसन्न है वा अप्रसन्न है—व्यभिचारियोंकी हकीकत तो इस तरह खुल ही गयी। अब रही कुछ सच्चे जितेन्द्रियोंकी, यह चिल्लाहट कि इस व्यभिचारसे सनातनधर्म्म ध्वंस होजायगा। आश्चर्यकी बात है कि सनातनधर्म्मीय गुण्डोंके गुप्त व्यभिचार करनेसे वे नाशको क्यों नहीं प्राप्त होते ? कुवारेपनमें गर्भहत्या—सती साध्वी बालिकाओंपर पाशविक अत्याचार- अबोधस्त्रियोंसे पूजकर उनके साथ व्यभिचार कर "धर्म्मकी आड़में ढोंगी" नहीं- तो जितेन्द्रिय नग्न अवधूत कैसे—बनावटी साधू धर्म्मका भय खड़ा कर हिन्दू जनताको उल्लू बना अपना मतलब साध रहे हैं, लेकिन क्या ? भारतके ७६ लाख साधु अपनी छातीपर हाथ रखकर कह सक्ते हैं कि प्रत्येक साधु सनातनधर्म्मियोंने किसी पराई स्त्रीसे व्यभिचार न कर अपने ब्रह्मचर्य्यको अखंड धारणकर सच्चे वैराग्यमें रत हैं-इसका क्या सुबूत है? वैराग्य शब्दको सत्यानाश करने-

वाले धर्म्मकी आड़में व्यभिचार–इच्छा रखनेवाले प्रेमी–साधू धर्मके नामपर बहुत ज्यादा उछल कूद मचानेवाले पाखंडियोंकी पोल हम भारतसरकार व हिन्दुस्थानकी हिन्दूजनतामें जगत् गुरु ब्राह्मण–ब्राह्मण गुरु–संन्यासियोंसे इतना कह देना अपना परम कर्तव्य समझते हैं कि दादा दरबारके साधुओंकी हनुमत बाग उज्जैनमें निगरानी करते हुये भारतवर्षके व्यभिचारियोंकी–कि जिनको नई रोशनीवाले ऊंचको नीच और नीचको ऊंच बनानेकी चिन्तासे चिन्तित हो रहे हैं,उनकी गलतियोंपर ध्यान दें, दण्ड दें। इन गुण्डोंने अपने मतलबसे योगियोंको आसनसे डिगमिगाकर भारतियोंके सामने "समाचार पत्रोंने" व उज्जैनपुरीके "नवयुवक दलने" यह तूफान खड़ा कर रक्खा कि जो भारतके नेताओंकी दृष्टि पड़ते ही थोड़से समयमें स्वराज्यके सच्चे हकदर अपने हकको पा समयानुसार गवर्न्मेण्टसे शान्त करा जिना व इगलाम करनेपर कलियुगी दफा कानूनी लगा–कृष्ण भवनका सैर करा दुनियवि व पारलौकिकी जनताको स्पष्ट हो जायगा कि त्याग–दिगम्बर–नागोंकी साधुता क्या पदार्थ और किस खेतकी मूली है।

(नोट) दादाजीने छोटे दादा हरिहरानन्दके सिवाय और किसीको चेला नहीं बनाया है क्योंकि सैकडों लड़कोंमें दादाजीने कहा था कि हाथ पकड़ो, यह सब तुम लड़कोंके बीचमें एक लड़का देते हैं–दादाजीके नामपर सैकडों शिष्य बनगये हैं।

हिन्दू जनता सावधान रहो! सावधान रहो!! सावधान रहो!!!

प्यारे भाइयो! आप लोगोंसे यह बात किसी भांति छिपी नहीं है कि वर्तमान समयमें "धर्म्म और देशहित" रक्षाकी आड़में अपने उल्लूको सीधा करनेवालोंकी संख्या कम नहीं है। स्वार्थ परतामें रंगे हुये व्यक्ति ही

बड़ी २ लम्बी चौड़ी बातें हांककर संसारकी आँखोंमें धूल झोंक अपना स्वार्थ करते हैं। गिरगट समान समय समय पर रंग बदलना उनका खेल है—आजकल धर्मके नामपर बहुत अत्याचार, अनाचार और दुष्टाचार होता है। धर्म्मकी आड़में अधर्म्म फैलाया जाता है। सिद्धान्त रक्षाके दम भरनेवाले मिरजापुरी लोटेके समान ढुड़का करते हैं। जहां दृष्टि डालो वहां धर्म्मको लोगोंने स्वार्थ साधनका एक सुयोग्य साधन बना लिया है। जेलसे भागे हुये-पोलिससे डरे हुये—संसारी लोगोंकी नजरोंसे गिरे हुये—कार्य्य क्षेत्रके निराश व्यक्ति आज धर्म्मके पंडे पुजारी बननेका दम भरते हैं—जिसे घर खानेको न मिला—या कुटुम्बी झगड़े पैदा हुये-वह धर्मका ढोंग रच संसारको धोखा देनेके लिये निकल खड़ा हुआ।

धर्म्मनिष्ठ बननेमें अधिक व्यय भी तो नहीं होता। सिरमुंडा-गेरुआ वस्त्र रंगा—एक दो मालायें गलेमें डालीं-कमण्डलु सामग्री उपलब्ध हो जानेसे धार्मिक नौकाके कर्णधार बन सक्ते हैं, हां मुँहपर राम २ कृष्ण २ हरे राम २ शिव २ दादा २ इत्यादि शब्दोंसे तो मानों साक्षात् धर्म्मात्माजीके ही उद्गार हैं, देशके दुर्भाग्यसे धर्म्मकी नोकरी सबसे सस्ती और आसान है। आलसी,लोभी, ढोंगी, कामी सभी धर्म्मकी ओटमें चोट करते हैं न तो विद्याकी आवश्यकता न बुद्धि न कोई सनद और न कोई सार्टीफिकेट—साधारणसे साधारण नौकरीके लिये—योग्यता और अनुभवकी आवश्यकता है—उसका सच्चरित्र होना नितान्त अनिवार्य्य है, किन्तु यह कहते हुये असीम दुःख होता है कि धर्म्मके लिये किसी भी गुणकी आवश्यकता नहीं मानी जाती, यदि किसीने गुण जाननेकी इच्छा भी की तो वह नास्तिक और धर्म्मद्रोहीके नामसे कलंकित किया जाता है। अभागी हिन्दूसमाज—जाग और फिर जाग—मोह निन्द्रा त्याग—अन्धकार-

से प्रकाशमें आ—और देख तू कहां जा रहा है—अपने आदर्शसे कितना गिर गया है—जिस धर्म्मके लिये हमारे पूर्वजोंने अतुलनीय त्याग किया—अपने प्राण होम दिये—आजीवन पर्वतों, गुफाओं और जङ्गलोंकी राख छानी, वही धर्म्म आज स्त्रीभक्त स्वार्थ पुजारी—पेटार्थियोंकी इन्द्रियलिप्त व्यभिचारियोंके सामने हाथ जोड़े खड़ा है—सत्य और धर्म्मका सचमुच खून किया जा रहा है, और हम अधर्म्मको धर्म समझ गर्वसे फूले नहीं समाते हैं। जिस तरह बरसातमें कीड़े मकोड़ों और मेंढकोंकी संख्या वृद्धि होती है—उसीप्रकार हमारे देशमें इस कलिकालमें नकली साधुओं, महात्माओं, संतोंकी और भिखारियोंकी भरमार हो रही है—एक अक्षर पढ़े नहीं—बीसतककी गिन्ती जानते नहीं—बाप दादोंसे बेईमानी मक्कारी और जालसाजी विश्वासघातीसे पेट भरते आनेवाले अपने माता-पिता—धर्मगुरुओंसे द्रोह कर अपनेको धर्मगुरु प्रकाश करके स्वयं पूजते पुजातेसे बन रहे हैं।

हे विश्वंभर काशीविश्वनाथ ! जगत् पिता—विश्वके आधार तुम्हारी जय होय, दादाजीमहाराज आपकी जय होय, हे कालोंके काल महंकाल आपकी जय होय, सप्त पुरियोंमें श्रेष्ठ काशीपुरी, उज्जैनपुरीके उपस्थित हिन्दूमण्डल—पंचगौड़—पंचद्राविड़ "ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः" वर्णधर्म्मवर्ण-आश्रमी प्रेमी समाज, मनुष्यसमाजके सनातनी विद्वानों मुझ पागलदादा-दरबारके एक विदूषक कुत्तेकी भौं भौंपर, कुछ समयके लिये कोयलोंकी कूक और हंसोंकी किल्लोलोंमें कौवेंकी कांव कांवकी इस ओर ध्यान देंगे।

भारतके भारतियोंने—उपस्थित सज्जनोंने सांईखेड़ेवाले दादाके नामको अवश्य सुना होगा (एक वर्षसे उज्जैनमें ही उपस्थित हैं) यह कौन हैं वेही जाने, लोकोक्तिसे परमहंस, अवधूत, योगी, धूनीवाले दादा कृष्णा-

नन्दजीस्वामी कहे जाते हैं । त्यागके भंडार, मनके जाननहार, भविष्यके वक्ता, रोगोंको नाश करनेवाले, मोक्षमार्गदर्शी, एक आसनसे नहीं हटनेवाले, सांईखेड़में एक आसन २५ वर्षसे मालगुजारकी परछीमें विराजमान थे । हजारों राजा रंक धनाढ्य सरकारी कर्म्मचारी आपके भक्त हैं, सवहीने लाभ उठाया और उठा रहे हैं, उनके पास कई हिर्सी जवान योगी जितेन्द्रिय वननेको एकत्र होनेसे वहांकी प्रजाने न्यायका विचार न करते हुये, अन्यायके साथ नंगे अवधूत वेंड़पर चील झपट्टेकी तरह अपनाही प्रभुत्व रखनेके लोभसे अनेक कारणों-उपायोंसे खलवली डाली गई-जिसका नतीजा यह हुआ कि आज एक वर्षका व्यवधान होनेको आया कि उज्जैनपुरीमें ही निवास है । यहांकी प्रजा और विद्वान् हिन्दू मंडल व कर्म्मवीरपत्रने "नर्मदा तीर्थवासी योगीकी" जो जो निन्दा स्तुति और इज्जत-अफजाइयां-कई पत्रोंने भी की हैं वह किसीसे छिपी नहीं हैं क्या ? वर्तमान दशाको देखते हुये भूत और भविष्यपर विचार करते हुये भारतके हिन्दूवर्ण धर्म्माश्रमी मतमतान्तरी पक्षपातरहित हो उस योगीकी ड्युटि कर्तव्यपरायणतामें हस्तक्षेप कर होली सरीखी वातें-कवीरोंकी डींगें मार रहे हैं। इस वालस्वरूप-वालक्रीडाधारी वालब्रह्मचारी-अवधूत योगीकी कि जो सदाशिवसदृश-त्रैगुण्य त्रिगुणी मायाके रचैता-मायावी इस कलियुगमें षड् ऐश्वर्य्य संपन्न हैं इस योग्य अतिथिके साथ गृहस्थगण-नई रोशनीवाले-नवयुवकदल हाथ धोकर इस काफलेके साथ ऐसा क्यों व्यवहार करनेपर उतारू हो पीछे पडगये हैं ? क्या उज्जैनपुरीके गृहस्थ यही अतिथि सत्कार धर्मपुरीमें सीखे हैं, उज्जैनपुरी व काशीपुरीके सत् विद्वान्-वृद्ध--व्यवस्था देनेवाले पंडितवर्य्य क्यों मौन साधे हुये हैं ? भारतके ७६ लाख साधू जिनकी आँखोंमें खटकते हैं, वह इस योगीसे

योग्यता क्यों नहीं सीखते ? भारतके वीर क्षत्रिय लोग क्यों नहीं अधर्म्मका नाश करते ? क्या क्षत्रियोंके राज्यमें यही धर्म्म न्याय है ? धर्म्म और देशकी रक्षाके लिये परमात्माके फरमानमें फर्क न दिखलाओ, भारतके योगी स्वतन्त्र हैं या परतंत्र ? वैश्यगण अपना धर्म्म ब्रह्मचर्य्याश्रम-गायत्री वेदमाताका पुरश्चरण-यज्ञ हवन आदि गौशालाओंमें तनमन धन क्यों नहीं लगाते ? अछूतोद्धार-विधवाविवाह-अमर्य्यादा कार्य्योंसे वर्णसंकरी प्रजाकी उन्नति करते हुये शंकरवर्णकी प्रजाका क्यों नाश कर रहे हो? हे गौरक्षको ! भारतमें वर्णधर्म्म वर्ण आश्रमकी चाह रखनेवालोंके लिये कलियुगी कानून नामसे स्कीमें क्यों नहीं तैयार की जातीं? यातो प्रकृतिके अनुसार चलो या खुल्लम खुल्ला—क्यों कि इस परमहंस योगी धूनीवाले दादाजी महाराजने मुझे सन् १९१७ ई० श्रावणमास द्वितीयाको त्रिलोचन घांट काशीमें दर्शन दिया तो सालभर ढूण्ढने बाद नागपुरमें ताजउद्दीन वलीने सांईखेडेका इशारा दिया। सांईखेडेवाले दादाजीने नागपूरसे अपने पास आकर्षण कर लिया और शिखासूत्र लेकर एक मट्टीका खप्पर देकर कहा कि अपनी किस्मत्में दो सूखी रोटियां हैं, अपने गंगाजीकिनारे विजया होम करते हैं। इस बातको उनके पास ग्यारह वर्ष गुजरे मुझसे एक वर्ष पहले छोटे दादा और उनसे भी दो चार वर्ष पहलेसे फरफरानन्द हैं। मेरे बाद कई चंट जितेन्द्रिय अपने अवगुण छिपानेके लिये उस वृद्ध योगीको आसनसे हटा कचहरी दरवारमें लेगये। आसन भंगकर तीर्थोंके बहाने इधर उधर लिये २ फिरते हैं। नर्सिंगपुर जानेके पहले "दादाजी महाराजने" मुझे संकेतकर यह उपदेश दिया था "न चहिये तेरा रुपया पैसा, न चहिये तेरी खिचडी" "कुए पै आसन जोगी का जल भरूं कि रीति जाऊं"--बाजोज पिया बाजरे २ लडेसे घर गांव-

जीतिया २-बाजरके-गाजरके-माजरके-साजरके-बाजोज पिया बाजरे ३-होशंगाबाद खर्राघाट रहेंगे। जल्दी करो २ इधरका रास्ता साफ करदिया अब पहाड तोडेंगे, नवा कमिश्नर बुलाते हैं, इसमें आग लगाय देते हैं अरे लडको रोटियां सीधी तरहसे खाओ—नहीं तो चार छे लडकोंको हथकडी डाल चालान करदूंगा-और मुझे दो चार लडकोंकी तरफ इशारा कर बताया कि यह अशुद्ध हो गये हैं, इनको समझाओ तुम्हें काहे के लिये पढाया है-जल्दी २ करो-कमलानन्दके दो चार डंडे लगाये और दो चार मुझे और कहा जाओ जल्दी जाओ—मैंने होशंगाबादका इन्तजाम किया मगर स्वार्थी मदान्धोंने नरसिंगपुर लेजाकर इस बालक्रीडाधारी वृद्ध योगीको दुर्दशासे फजीहतमें डाल अपने २ गुलछरोंमें मस्त हुये लापरवाहीसे समाचारपत्रोंकी इज्जत अफजाईसे पेटार्थी बने अपने धर्मके कुठाराघात बन स्वयं हस्तक्षेप करा रहे हैं—चार छे सजायावोंमें नानकोआप्रेशनका कैदी प्रभासपट्टन जगत्गुरु शंकराचार्य्यका चेला-चुगरा भास्कर तीर्थ अपनेको जितेन्द्रिय नंगा-त्यागी-साबित करता हुआ अवधूत भेषको कलंकित कर रहा है! इसलिये यह टुकडखोर आषाढ मासंसे दरबार उज्जैनपुरीको छोड जाबजा फिरता२ विश्वंभरकी शरण ले चीख२ जीवन व्यतीत करना—बंबईमहालक्ष्मी खाकचौक वार्डनरोडमें रहना—भारतके व काशीपुरी उज्जैनपुरीके विद्वानोंसे व्यवस्था लेना, अधर्मियोंको धर्ममें लानेका उपाय सीखना, गंगानिवासी-शिपरानिवासी गंगापुत्रोंसे यही भिक्षा मांगता हूं कि भारतमें वर्णधर्माश्रमियोंकी आठों किलासें सुसज्जित होजांय—या आठों कक्षा एक ही घाट उतरें—शीघ्रता करें—घोर कलियुग है—सतयुग होना मुश्किल क्या असंभव है—इस मेरे रिजूलेशन नम्र निवेदन पर भारतीय विद्वान् मंडलोंने जरा भी ध्यान दिया तो आशा करता हूं कि भारतका

जीर्णोद्धार हो स्वराज्य ही स्वराज्य प्रतीत होगा—दादा दरबारका भारतमें एक नमूना हो नगीनेकी तरह उज्जैनपुरी विशेषरूपसे संसारमें चकाचौंधी कर दिखायगी—इति।

आ मेरे प्यारे! घडीभर इस जीवन निकुंज कुटीरमें विश्राम ले ले!! अपने अलौकिक मुख—सौन्दर्य—सरोवरमें विकसित नयनाम्बुज—मकरन्दका पान इस विरह-दग्ध श्याम भ्रमर जोडीको कर लेने दे—आ मेरे समीप बैठ जा!!! अपना सुमृदु करकमल मुझे स्पर्श कर लेने दे—मैं तेरी धूल-धूसरित अलकावलिका केशकलाप कर दूं। तेरे स्पर्श! माधुर्य!! जल-दान!!! से यह नीरस, परिश्रम—जीर्ण-जीवन-लता हरित हो जायगी और उसके सुगन्धित सुमन तेरे पवित्र चरणोंमें अर्पित करदूंगा—ऐ प्रिय-तम! आज इतना सुअवसर दे दे!! कि मैं घंडीभर तेरे सम्मुख बैठकर तुझे प्रेम!!! आलिंगन कर लूं और तुझे प्रेम सर्वस्व कहकर कंठसे लगालूं। भारतका पुराना संन्यास अवधूतोंका नंगापन आजके दिन मसखरी कराता हुआ परिचयके राज्यमें आलोकित हो गया।

हे नाथ!आपकी कृपानौकाका अवलम्बन पासक्ते हैं और तिरस्कृत अन्त्यज तथा पतित जन आपके विरह—जलसे अपना कलुष—कलंक धोकर परम पवित्र होसक्ते हैं। आपके वांछनीय विरहसे आर्द्र इस कठोर और नीरस हृदयसे सरलस्रोत निकलने लगे जो आज तरंगोंके रूपमें दिखाई दे रहे हैं—इस दीन हीन हृदयसे यह निःसरित—सरित आपके पद—पद्म-पयोधिकी ओर बहरही है। सुना है—वहां जानेसे इसका पुनरा-वर्तन न होगा—जो हो मेरी तो केवल यही अभ्यर्थना है, कि

इस निदाघ नयन—नीरको अपने पुनीत स्पर्शसे शुद्ध शिवोदक बना दीजिये। समालोचना हरीभरी हो उठी—समाचार पत्रोंके झन्डे फहराने लगे—उसको अब यमराज भी नहीं मेट सकते—इन्हीं दिनोंके फेरमें कुछ लोग अब तक फूले नहीं समाते। चट चिन्तामणिके चाचा या मतीरामके मामा बन जाते हैं। सच्चे प्रेमी लोग भी कलिकालकी गतिको देखकर निराशा और निरानन्दकी नदियोंमें प्रत्येक सभा—समाज—सुसाइटी—सम्मेलनके अवसरपर नैमित्तिक नियमसे दो चार डुबकियां लगा ही लेते हैं। जिन उमंगों और जिन तरंगोंकी कलकल नये हृदयोंमें आजकल हलचल मचा रही है—उनसे मुझे पूरी आशा है, उन्होंने समाज—समय—स्वभाव और स्वदेशका वह चित्र नहीं खींचा जो उनका असली अङ्ग है। यदि संसारके परिवर्तनमें संसार भारतवर्षका भी कुछ भाग हो—आशा है आजकलकी हवा भी उनके ऊपर कुछ कृपा करेगी। जिस समय चराचरके चमत्कारसे भरी किसी मुरलीकी धुनि सुनाई पड़ेगी उसी क्षण यह सारा कोलाहल शांत हो जायगा। परिवर्तन सर्गका स्वयं परिवर्तन हो जायगा। छोटे २ सरल सबल सुन्दर स्वाभाविक लेखोंसे लेखकके हृदयका—आत्माका—संदेशका—भाषाके भेषका दर्शन कराना निबंधोंहीका काम है—वे गद्यके गहने हैं—हृदयकी किरनोंसे छुये हुये अधखिले फूल हैं—आत्माके रसकी विरल तरंगे हैं। लेखनीकी सैर है—अपनी सीधी साधी सरल धारामें भांति भांतिके बुलबुलों चक्करों और हिलोड़ोंकी कला दिखलाई है—इन्हीं चक्कीके पाटोंके बीचमें आकर कवि कभी रोता और कभी हँसता है, लेखनीसे रस टपकता है, तरंगोंके तीरपर यदि, किसीको कुछ ताजी हवा लगे—दिल ठंडा हो—मुँह खिल उठे—पतेकी बात मिले—तो लेखकका श्रम बहुत कुछ सफल हुआ सम-

झना चाहिये, परन्तु यदि वह संसारके झकोरोंसे झुरराय हुये पाप—ताप-के प्रचंड मार्तण्डसे बौराये हुये बटोहियोंके हृदयोंको कुछ भी हिला डुला सके तो अपने आपको कृतकृत्य मानें इसमें क्या सन्देह है ? " श्री-दादाजी महाराज धूनीवाले " अलौकिक दिव्य—शक्तिके दर्शन हुये। वह शक्ति निःसन्देह हे माता—पिता! आपकी ही प्रति मूर्ति है। उस समयसे मेरा काया कल्पसा हो गया—उसी परमाराध्य शक्ति देवीका प्रतिरूप चराचरमें प्रतिबिम्बित समझकर मेरे पंचप्राण—प्रपन्नता—पूर्ण—प्रसन्नतामें परिणत हो गये क्या ? इसी प्रसादको जीवित—जीवन कहते हैं।

आपका सरस—स्नेह तथा सरल स्वभाव मेरे हर्ष—हीन हृदयके जिस कठोर—कोणमें विराजित हुआ—वहांसे अकथनीय—आल्हादके सुभग स्रोत बहने लगे—आपके स्तन्यदानसे पुष्टी और तुष्टीकी चरम सीमाका पूर्णानु-भव हो गया। करकमलकी छाया छायासे माया—मय आवरण हटाकर आज नितान्त—निर्भयता—निरत—निद्रामें जीवन जागृति ज्योतिर्मयी कर रहा हूँ। हे परम पूज्ये! जब जब मैं आपका धवल ध्यान इस दूषित एवं दुर्द्धर्ष हृदयमें करता हूँ तब मेरी व्यक्तिता न जाने किस प्रदेशको प्रयाण कर जाती है। और यह आजन्म—भिन्न आत्मा किस सहज—सम्बन्ध सूत्रमें आ बद्ध हो " मुक्ति मार्गमें " खड़ा रहता है। मैं नहीं कह सकता कि मेरा भ्रम कहां तक सत्य है? क्योंकि कभी कभी जब आपके चरणारविन्दोंको चपल चम्पा और कंटीली केतकी सौहार्द्‌रूपसे कपटाच्छादित करलेती है तब मेरा चित्त चञ्चरीक उत्कंठित हो चिन्ता—चय तथा विषम—विस्मयकी तीक्ष्णताके कारण उनका मधुपान नहीं कर पाता! किन्तु हे भक्तवत्सले! मैंने सुना है कि दीन मधुकरका पिपासा-कुल हृदय आपको किसी न किसी प्रकार स्नेहसिक्त करना ही पड़ता है।

इसी आशासे कालरञ्जकणका त्याग इस अगर वंशमें महापाप एवं गर्हणीय समझा गया है। अरे क्या क्या कह डाला—किन्तु कुछ चिन्ता नहीं—बालकोंकी ऐसी ही प्रकृति होती है। मेरा स्वभाव भूलनेका ही है। आप उपदेश दीजिये, क्योंकि ! आप गुरु हैं।

हां गुरु ! भाव आपके चरणोंमें न मानकर किस स्थानमें स्थापित किया जाय ! आपके कृपाकल्प-तरुमें मुझे वैराग्य-विवेक-भक्ति तथा शान्तिके मधुमय फल आकलित हुये और कानन-कूजित-कोकिलके कलकण्ठोपगश्रवणसुखद एवं प्रमोद-मोदके व सुन्दर-मधुर सुधाकन-चिरचन्दन-चर्चित-चन्द्रिकामें दृष्टि मत्त हुये—बस मेरी क्षुद्र अहंताका पूर्ण पतन हो गया और तबसे यह मञ्जुल मानस-मराल आपके पद-पद्म-पञ्जरमें आश्रित रूपसे निवास कर रहा है। हे अम्ब ! क्या भक्त-पुष्पांजलि आपके चरणोंपर चढ़ानेके विचारसे ये हाथ कलुषित हो गये, जो उन्हें पुनीत-पूजाका अधिकार न मिल सका ! ठीक है—बालकके विचार चाहे विवेकान्वित भी हो—तथापि वे बच्चेके अज्ञानमय हृदयके ही कहायेंगे ! फिर अविश्वास और कपटको स्थानही कहां ! जो हो इस कोमल-कमल-कलिका-कलित हृदासनपर आपके चरण-युग्मकी-अर्चा करता हुआ इस असार जीवनको सतत सेवाका अधिकारी बनाऊंगा। हे जननि ! अपने चिर-चरण-अनुचर अधम बालककी तुच्छ सेवा स्वीकार कीजिये। यह तरंगे-तदीय हंसावलीकी विहारस्थली हो, बस यही आशीर्वाद दीजिये। हे मातः ! क्षम्यताम् ! क्षम्यताम् ! ! आपका स्नेहभाजन ! ! !

चरणसेवी वही पाखण्डी नंगा
पागल चन्द्रशेखरानन्द अवधूत।

संयम।

यदि आप अपना सांसारिक जीवन सफल करना चाहते हैं—परोपकारकी चेष्टा करना उचित कर्तव्य समझते हैं—किसीको हानि न पहुँचाकर अपनी भी भलाई करना चाहते हैं—संसारके लोगोंको आदर्श चरित्र दिखलाना चाहते हैं—पाप और दुःखसे बचना चाहते हैं—भवसागरसे अपनेको तथा औरोंको भी उद्धृत किया चाहते हैं—उन्नतिका सच्चा मार्ग खोज रहे हैं—मित्र शत्रु सबके श्रद्धा पात्र बनना चाहते हैं—किसीसे द्वेष नहीं रखना चाहते हैं—स्वार्थशून्य होनेकी अभिलाषा है—चंचल चित्तको एकाग्र रखनेकी तीव्र इच्छा है—यशोधन हूजियेगा, सच्चे वीर कहलाइयेगा—पंडित बनियेगा—गौरक्षा—वर्णधर्म—वर्णआश्रमका जीर्णोद्धार करियेगा। लोगोंके सच्चे गुरु बनके कल्याण पथप्रदर्शक होना अभीष्ट है। परब्रह्मके ज्ञानकी वास्तविक वांछा है तो अविद्या—मायादिके बन्धनोंको तोडियेगा—दूसरोंके बन्धनोंको छिन्न भिन्न कीजियेगा—पतित पावनकी अनपायिनी दादा शंकर अवतारीकी भक्ति प्राप्ति करना ही इष्ट है, लोकोत्तर चरित्र बनियेगा तो केवल एक उपाय यही है कि "इन्द्रियोंका संयम" "जितेन्द्रियता" कीजिये—आपकी इच्छायें सिद्ध होनेमें फिर कुछ बाधायें अधिक समय तक ठहरनेवाली नहीं, परन्तु इन्द्रियां प्रत्येक सत्कार्य्यमें अद्भुत रीतिसे बाधक हैं। इस विपत्तिके मार्गपर चकराकर भटकाके प्राणीको अत्यन्त शीघ्र ही पहुँचा देती है। इन्हीका संभालना परम पुरुषार्थ है। जातिका जीवन होवे, चाहे व्यक्तिका, इन्द्रियोंका "संयम" सभी दशामें अत्यन्त ही आवश्यक है। अर्थात् इंद्रियोंका न रोक सकना ही विपत्तिका मार्ग खास बताया गया है। और उन्हींका विजय संपत्ति अथवा उन्नतिका मार्ग है। मनुष्यकी इच्छा जिस मार्गसे जानेकी होवे

जावे, केवल ध्यान रखनेकी वात है कि विपत्तिके मार्गपर जाना किसे इष्ट है ? और उन्नतिके पथपर चलनेकी अभिलाषा किसे नहीं है, परन्तु हाय ! संसारमें विपत्तिसे कौन वच सकता है, या वच सका है, उन्नतिके सन्मार्गपर चलनेवाले कितने मनुष्य सफल होते, देखनेमें आये हैं । इनकी गिनती इतनी थोडी क्यों ? और विपत्ति भोगनेवाले सभी संसारके जीवमात्र हैं । उन्नति पानेवाले विरले ही हैं, ऐसा क्यों ? "शुको मुक्तो वामदेवो वा" ? ऐसा ही क्यों सुन पड़ता है । इसका एक ही उत्तर है "इंद्रियोंका असंयम"—शब्द थोडे हैं । परन्तु समझनेवालोंके लिये वडे सारगर्भित हैं । इंद्रिय संयमका पन्थ अत्यन्त कठिन है किन्तु है चलने योग्य, लोहेके चने हैं परन्तु लोगोंने चवाये हैं । "यह मार्ग कल्पित नहीं है वास्तविक है"—अन्धकार नहीं है यह तो है ज्योतिर्मय—तो भी इसपर चलनेवालोंकी संख्या वहुत ही थोड़ी है क्योंकि लोग अदूरदर्शी हैं । सद्बुद्धिवाले लोग इसी पन्थपर चले और संसारमें अक्षय कीर्तिके भागी वने । उनकी सन्तान भी जव तक इस पथपर चली पूर्ण प्रकार संभली रही और अब फिर भी संभल सकती है । क्या मुस्लेईमानों और अंग्रेजोंके राजत्वकाल होनेसे भारत संतानें उस पथको जानते नहीं हैं ? या वह पूर्वजोंका पंथ ऐसा है कि जहां वे पहुँच नहीं सकते हैं । "वास्तवमें शुद्ध रज वीर्य्य" शुद्ध रक्त वीर्य्यकी सन्तान-माता पिता गुरु भक्त ही सन्तान ऐसे हैं, जो इस मार्गको कुछ जानते हैं और उसपर पहुँचनेकी चेष्टामें भी हैं । इतना कहना गैर मुमकिन न होगा कि सव कोई सब कुछ जानते हुये भी इस पंथकी दिल्लगी करते हैं और भटके हुओंकी तरह "अनर्थमार्ग रास्तोंको" सेवन करने लगते हैं । कारण यही है कि "अप्राप्त मधुर" फलान्तरोंके दर्शनमात्रसे लुभाय रहते हैं । इस लिये

परिणाम अनर्थ होगा । मनोनिग्रह अभ्याससे होता है, मनोनिग्रहका अभ्यास रखनेवाले सदा सफल रहे हैं। भारतवर्षमें मनोनिग्रहकारी आदर्श चरित्र अनेकों हैं उनको देखके अनुकरण करनेवालोंकी भी संख्या अधिक नहीं है। हां अनुकरण करना भी थोड़े समयमें स्वयं आदर्श चरित बन जा सकते हैं इसमें सन्देह नहीं, देखिये ! दण्डी स्वामी सरीखे नम्र चार दिनके आये हुये छोटी अवस्थावाले इंद्रियनिग्रह हमारे दादाजी महाराजके अनुकरणीय लोग कैसे वयोवृद्धोंके सदृश संयमी प्रकाशमान हो रहे हैं।

जिन जितेन्द्रियोंका चित्त सुन्दरी स्त्री—ललनाओंके सौन्दर्य्यपर इतना मोहित है कि उधरसे हट नहीं सकता। जिन्हें स्वादिष्ठ भोजनकी रुचि है—जिन्हें सुगंधियुक्त पुष्प इत्र तेल इत्यादिकी प्रतिक्षण आवश्यकता है, जिन्हें मृदु और सुखस्पर्श शय्या रेशमी वस्त्र दुशाले चाहिये वे बेचारे भला क्या इन्द्रियसंयम कर सकेंगे ? क्या ऐसे महान दिल चले नवयुवक इंद्रिय संयम कर सकेंगे। अवधूतमार्गकी क्या यही श्रेणी—प्रथम कक्षा है। क्या ऐसे धर्मकी आड़में ढोंगी इंद्रियसंयम कर सकते हैं ? वे लोग जो सुन्दरी स्त्रीसे विवाह करके भी संसारमें फलते फूलते संतरोंके झाड़ोंपर कांटे डाल अपयश फैलते देख ठीक युवा अवस्थामें भी उस निरपराधिनीको परित्याग करनेमें "झेल" देर नहीं लगाते हैं। कहनेका तात्पर्य्य यह न समझा जावे कि सुन्दरी स्त्रीका परित्याग इंद्रियोंका संयम है, परन्तु यह कि जिसे इंद्रियोंका संयम अभीष्ट है वे सुन्दर स्त्रियोंका तृणवत् परित्याग कर सकते हैं। जैसे रामने सीताका त्याग किया था, ऐसे ही स्वादिष्ठ भोजन, संगीत, पुष्प, इत्र, तैल, सुख—स्पर्शवाली शय्या आदिकी अपेक्षा संयमीको नहीं रहती है। अवस्थाविशेषके अनुसार प्राणीको ये सब

पदार्थ सुलभ हैं; परन्तु संयमी असंयमीमें भेद इतना ही है कि संयमी उनकी अपेक्षा नहीं रखता है, उनमें आसक्ति नहीं रखता, उनके अभावमें दुःख भी नहीं होता। असंयमी उनकी अपेक्षा रखता है, उनमें आसक्त है, और उनके अभावमें दुःख भी रखता है—"अरे मेरे जितेन्द्रिय कहलानेवाले नंगे भाइयो! अवधूत या अवधूतके बच्चे बनने व कहलाना चाहते हो तो संयमका अभ्यास करके दुःखके फन्देसे छूटनेकी चेष्टा करो और शीघ्र करो । उज्जैन नगरीमें श्रीधूनीवाले दादाजी महाराज अवधूत कृष्णानन्द परमहंसके नामसे "अवधूताश्रम कायम कर" अवधूत आश्रम सुखकी प्राप्ति केवल ईश्वरद्वारा हो सकती है; ईश्वरको प्राप्त करना मनुष्यजीवनका खास उद्देश्य है, इस उद्देश्यकी सिद्धि कर्म्मानुष्ठानसे चित्तशुद्धिद्वारा ज्ञान लाभ करके सर्वोपरि भक्तिमार्गसे हो सकती है और सबका सारांश एक धर्म्मशब्दसे बोधित किया जा सकता है । अर्थात् धर्म्महीके सम्यक् पालनसे ईश्वरकी प्राप्ति हो सकती है ।

कलियुगमें दादाजी महाराज शंकरप्राप्तिके मार्गका निदर्श कर दिया गया, उससे साफ प्रगट होता है कि मानों यह अवधूत—मार्ग बडा ही सुगम और—"निष्कण्टकं राज्यं न दहति पावकः" है जरा विचारका विचार करके देखा जावे तो शीघ्र समझमें आ जावेगा कि बात है भी ऐसी ही, पर संसार बडा ही विचित्र नाटयस्थान है। त्रिगुणात्मक होनेसे निस्त्रैगुण्य होना नहीं चाहता; यही करण है कि वह इतना समाचार पत्रों द्वारा भयंकर—भयानक हो रहा है । वर्तमानकालीन धर्म्म—जिज्ञासू यह देखकर सन्देहमें पडजाता है । आज संसारमें कितने ही धर्म्म प्रचलित हैं ? शंका होती है, कौन धर्म्म स्वीकार करना, कौन श्रेयस्कर है, कौन नहीं ? धर्मके प्रतिपादक ग्रन्थोंके अर्थ एक दूसरेके प्रति-

कूल किये जाते हैं और अनेक उपदेश एक दूसरेके खण्डनादि कर जाते हैं। ऐसी दशामें धार्मिक प्रश्न उसके लिये अति जटिल हो जाता है। उस धर्म्मके मूल्यमें सन्देह हो उठता है और बहुधा उसके हृदयमन्दिर से श्रद्धादेवी देवपुरी को चल देती है-और उसकी प्रवृत्ति नास्तिकताकी ओर होने लगती है। मानों पिशाच ही अड्डा जमाकर जीवनोद्देश्यकी प्राप्तिसे अतिदूर करदेती है। हा! जिस मनमन्दिरमें श्रद्धा और विश्वासका वास होना चाहता था—जिस हृदयरूपी मानसमें भक्तिरूपी हंसनी "दादा शंकर" ईश्वररूपीमुक्ता चुगती उसीमें अश्रद्धा रूपी पिशाचनी नास्तिकतारूपी पिशाचही अड्डा जमाकर उस बेचारेको जीवनोद्देश्यकी प्राप्तिसे अतिदूर कर दिया—जैसे—"भला चटनी का स्वाद बंदर क्या जाने"।

पाठको! देखिये जरा सोचिये विचारिये! ऐसे२ लोग अभी हालही में हुये हैं और मौजूद हैं। हा! भारत भूमि!! क्या तुझे लज्जा नहीं आती कि जिस देशमें ऐसे ऐसे सत्पुरुष होगये हैं वहांके लोग आलस्ययुक्त और मूढ़ हों, बड़ेही आश्चर्य्यजनक बात है—"सन् १८८१ ई० में भारतमें मुरारी बाबाके आश्चर्यप्रद काम" थियो सोफ़िस्टके एक पत्रप्रेरक का कथन है, कि जब मैं अपने देशसे बम्बईको चला तो प्रायः मेरे मित्र और कुटुम्बके लोग मुझे रेल तक छोड़ने आये, धूप बड़ी होनेके कारण हम लोगोंको मार्गमें प्यास लगी और उसी क्षण मुरारी बाबाने जो हम लोगोंके साथ थे, झुक कर थोड़ेसे कंकर पत्थर उठाये और क्षणभरमें चार कूजे मिश्रीके बना दिये, यह देख बहुतोंहीके होश उड़गये। उस प्रांतके लोग मुरारी बाबाको योगी कहके पुकारते थे। एक बार नागपूरके डिप्टी कमिश्नरकी उनसे भेट हुई, ये साहब उनके आश्चर्य्यके

कामोंका हाल पहले ही सुन चुके थे, सो उन्होंने बाबाजीसे प्रार्थना की कि कृपा करके कुछ हमें भी दिखलाइये। बाबाजीने कहा अच्छा कहिये आप क्या चाहते हैं? उन्होंने कहा कि हम इस नीमके वृक्षमेंसे जो हमारे सामने हैं आम तोड़ा चाहते हैं। बाबाजीने कहा बहुत अच्छा चाहे जितने तोड़लो—यह कुछ कठिन बात नहीं है!!! उनका इतना कहना ही था कि वह समस्त वृक्ष सुन्दर आमके फलोंसे लद गया—कि जिसके देखनेसे डिपटी कमिश्नरको बड़ा ही आश्चर्य हुआ।

एक समय बाबासे एक मनुष्यने कहा कि आप ऐसी कोई खानेकी वस्तु मँगाइये जो किसी दूरके देशमें बनती है—प्रश्नकर्ताने एक प्रकारकी मिठाईका नाम लिया जो केवल सूरतके नगरमें बनती थी और कहा कि वह मिठाई गरमागरम आवे। उसके कहनेही की देर थी कि बाबाजीने अपने वस्त्रमें हाथ डाल उसी क्षण वही मिठाई गरमागरम निकाल दी। इन मुरारी बाबाकी वयस२५—३० वर्ष जान पड़ती थी। वस्तुतः वे बहुत वृद्ध थे—लोग कहते थे कि जबसे देखते हैं उन्हें वैसे ही पाते हैं। इन मुरारी बाबासे भी बढ़कर श्री धूनीवाले दादा कहीं अधिक बढ़े चढ़े हैं। अंधोंको आंखें, आन्तरिक व बाह्यक दृष्टि देते हैं, होनीको अनहोनी और अनहोनीको होनी कर दिखाते हैं।सबसे बड़ी बात इनमें यह है कि आत्मप्रवेश प्रबल शक्तिशाली हैं, भविष्य वक्ता हैं—अभी हालमें हनुमान बाग उज्जैनमें उपस्थित। हैं वृद्ध होनेपर भी जवान दृष्टि आते हैं, हजारों लाखों आपके प्रतिष्ठित गुप्त सेवक हैं—आपकी लीला अपरंपार है—" योगी गति विलोकि विस्मयमें आ रहे हैं केवल दर्शन मात्रसे भाग्य उदय हो उठता है"। आप श्रीमान् १००८ श्रीगौरीशंकर महाराज ब्रह्मचारी नर्मदा—परिक्रमावासीके तीन शिष्योंमेंसे कृष्णानन्दजी

धूनीवाले दादाजी भी हैं, रेवानन्दजी—दयानन्दजी सहित तीन चेले थे। रेवानन्दजीके ब्रह्मानन्द और ब्रह्मानन्दके राघवानन्द और राघवानन्दके गणेशानन्द। दयानन्दजीके दुर्गानन्द नरबदानन्द। दुर्गानन्दके दो शिष्य बालानन्द—रामानन्द। बालानन्दके प्रियानन्द और प्रियानन्दके रामेश्वरानन्द। रामानन्दके केशवानन्द—गोपालानन्द—गजानन्द—अखंडानन्द। नरबदानन्दजी महन्तके चेले-हरिहरानन्द। हरिहरानन्दके चार चेले बालकृष्णानन्द—शेखरानन्द—परमानन्द—काशीनन्द जमात चला रहे हैं और धूनीवाले दादाजी महाराजके हैं तो बहुतसे चेले परन्तु—फरफरानन्द—शंकरानन्द—नित्यानन्द—हरिहरानन्द छोटे दादा—चन्द्रशेखरानन्द। शंकरानन्दके रामानन्द—कमलानन्द—मङ्गलानन्द—सेवानन्द। नित्यानन्दके भास्करानन्द जबलपुरवाले मुख्य हैं।

गौरीशंकर महाराज कशमीरके रहनेवाले थे, ब्राह्मण—शरीर था—नर्मदाकी परिक्रमा २० वर्षकी उम्रमें शुरू की थी—"११समयकी—" ४—५ परिक्रमाके बाद नरबदाजीका दर्शन हुआ—और कई बार साक्षात् हुआ। विभूति व काली मिर्चसे सबकी इच्छायें पूर्ण करते रहे—और परिक्रमाका नियम जारी किया, अब तक कायम है—नर्मदानन्दजीके बादसे काशीनन्द चला रहे हैं। उत्तरतट नर्मदाकिनारा-९०वर्षके अन्तर्गत कई समय दर्शनका लाभ हुआ। फल मिला,शक्ति बढ़ी-कुल परिक्रमा३४वर्षमें दिया। सं० १९४५ विक्रममें गौरीशंकर महाराजने मुकाम कोकसरपर समाधी ली। नरमदा माहात्म्य इन्हीं गौरीशंकर महाराजके प्रकाशसे कलियुगमें प्रकाश हो उठा इसलिये हे महाशयो ! ! और धार्मिक सज्जनोंके प्रति सविनय निवेदन—" नर्मदाकिनारे एक अतिथिसत्कार मन्दिर " अवधूत आश्रम गायत्रीकी प्राणप्रतिष्ठा अन्नक्षेत्र नर्मदा घाट बनानेके

लिये यह कार्य्य समक्षमें उपस्थित है। चन्द्रशेखरानन्द अवधूत धूनीवाले का चेला ब्रह्मचारी और सच्चा धार्मिक संन्यासी है—चारों वर्ण व चारों आश्रमोंसे कुछ द्रव्यके संचयके विषयमें अनुरोधकर एक पवित्र स्थान " अतिथि सत्कार भंडार " स्थापन कराना है। अवस्थाका कोई ठिकाना नहीं है। पचास वर्षकी आयु होगई है मालूम नहीं कि किस समय ये प्राण पखेरू उड़जांय ? मेरी इच्छा है कि जीतेजी मनुष्यशरीरसे नर्मदा तटपर अब बाकीका समय एक जगह नर्मदा किनारे शांति पूर्व्वक धर्म-रक्षाके वास्ते आखरी जीवन धर्म संबन्धी बातें प्रचलित करनेके लिये धर्म उपदेश—ईश्वरभजन और शिक्षाके लिये व्यतीत हो, हम ब्राह्मण-बालक हैं। बचपनसे ही ब्रह्मचारी धर्म अवलंबन किये हैं। हमारी किस्मतमें बचपनसे ही हिन्दुस्तानमें मुसाफिरत करना लम्बा चौड़ा सफर करना लिखा था, सीलौन लंकाके अलावा भारत भ्रमण कर सब हिन्दुस्थानमें फिरा हूँ—किस लिये कि धर्म्म ढूंढनेको, कि धर्म्म क्या चीज है। और मैंने हरएक तीर्थ स्थान भी देखा, नर्मदा परिक्रमावासियोंकी सुबिधाके लिये ठहरनेको व भोजनके लिये—उन प्राणियोंको कहीं आरामगाह नहीं है—इसलिये, ठहरने खाने बनानेका स्थान तैयार हो जाय—ताके संन्या-सी—ब्रह्मचारी—कोई सद्गृहस्थ—गरीब तीर्थयात्री परिक्रमावासियोंके लिये विशेषकर एक आश्रमकी होशंगाबादमें अत्यन्त आवश्यकता है-ताके उन-को भोजन और विश्राम अच्छी तरह मिल सके। तीर्थस्थानोंपर इस प्रकार प्रबन्ध हो जानेसे—ईश्वर भजन—शास्त्रचर्चा--ब्रह्मचर्य्याश्रम व पाठशाला-ओंका भी नियम जारी किया जावे। द्रव्यके बिना धर्म काममें विघ्न अनेक उपस्थित होते रहते हैं। समस्त सज्जनोंकी चेष्टासे काम पूरा हो सकता है

आजकलके कलियुगी समयमें एक योगाश्रम जमीनके अन्दर गुफा—उसके ऊपर कमरा—उसके ऊपर छत याने तितल्ला भी होना चाहिये।

नर्मदाका दृश्य एक रमणीय शोभाको प्राप्त है—नरमदामहाराणीजी बड़े वेगसे पत्थरोंसे टकराती हुई कई जगह समताका प्रकाश डालती हुई बहती हैं। कहीं २ सदा पानी पत्थरोंके संग्रामका कोलाहल मचता रहता है। यह पवित्र स्थान जी-आई-पी रेलवेके मेल लाइन याने बंबईसे दिल्ली जानेकी सड़कपर मध्य भारतमें एक होशंगाबाद नामक तीर्थ-स्थान स्टेशन है—पासही श्रीनर्मदानदीपर एक शोभनीय पुल बँधा है। श्रीनर्मदाजीकी परिक्रमाका फल सबसे श्रेष्ठ माना गया है—" शास्त्रोंमें भी कहा गया है कि सब पापोंसे मुक्त होनेके लिये श्रीगङ्गाजीमें एक दिन—सरस्वतीजीमें ३ दिन और जमनाजीमें सात दिन स्नान करना पड़ता है,परन्तु केवल श्रीनरमदा माईके दर्शनहीसे मुक्ति प्राप्त होती है।" धूनीवाले दादाजीने नर्मदा किनारे निमावरमें मुझे मोक्ष दिया। ऐसा भी लिखा है कि कलियुगमें ५००० हजार वर्ष बीत जानेपर श्रीगङ्गाजीका माहात्म्य श्रीनर्मदाजीमें आ जायगा—सन् १८९५ ई०में कलियुगके पांच हजार वर्ष पूरे होनेपर श्रीनरमदाका माहात्म्य और भी बढ़ जायगा। नर्मदा का जल लेकर कसम खाई जाती है—" वह सर्वथा मान्य है " इस देवीकी पूजा भी हरजगह किसी न किसी रूपमें प्रचलित है—श्रीदुर्गाजी जगद्धात्रीजी—श्रीकालीजी-श्रीचंडिकाजी-श्रीभैरवीजी—श्रीताराजी—श्रीभुवने-श्वरीजी—श्रीबगलामुखीजी—श्रीकमलाजी——श्रीमातंगीजी——श्रीषोड़सीजी—श्रीमातादेवी इत्यादि—भिन्न २ नामसे संसारमें सब जगह प्रचलित हैं। यह पवित्र इस तेजका सच्चा साक्षात् प्रत्यक्ष फल देनेवाली नर्मदादेवी अमरकंटकसे कलकल करती हुई पश्चिमी दिशासे जा समुद्रमें जा मिली है—

" स्थापित है " मध्य भारतमें यह स्थान केवल एक ही दृष्टि पड़ता है । हजारों सनातनी भक्तोंने पुराण पढ़ प्रत्यक्ष किया होगा—इसके किनारे २ ब्रह्मचारियोंकी जमातें फिरती रहतीहैं और कर्म अनुष्ठान शीघ्र फल देता है। इसलिये सज्जन धार्मिक महाशयोंसे निवेदन है कि ऐसे पवित्र स्थानको जगह २ घाट क्षेत्र धर्म्मशाला तैयारकर रक्षा व उन्नतिके लिये आप लोग सहर्ष तनमन धनसे सहायता करें और दूसरोंसे भी सहायता करायें । श्री-नरवदाजीके आशीर्वादसे आपका सर्वथा मंगल हो, और सर्व मनःकाम-नायें सिद्ध हों, नर्मदा किनारेके ग्रामोंको शहरोंकी तरह वसा कपडोंकी मिलें कायम कर दीनहीन दरिद्रियोंको निरोग रखते हुए सदैव निरोग प्रजा हो जायगी । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

"अतिथिसत्कार भंडार होशंगाबाद खर्राघांट"

एक नंगा—चन्द्रशेखरानन्द अवधूत ।

प्रिय पाठको !"मनुष्यका धर्म है मनुष्यकी विपत्ति दूर करना" परंतु शोक है !! हम जन्मदुःखियोंकी वही दशा है जो प्रथम थी । कोई विचार नहीं करता, कोई नहीं समझता, इस दशामें हमारा पड़ा रहना कितना हानिकारक है । आंखें मींचे हुये स्वार्थियोंकी नांई अपनी ही उन्नति और भलाई चाहते हैं । विद्वानोंका कथन है कि चाहे भूगोल-भरकी विद्या जानता हो जब अविद्वान मूर्खके संग बैठेगा उसका संग अवश्य कुछ न कुछ फल देगा । भारतखंडमें धनाढ्योंसे लेकर कंगालोंतक अविद्याके अन्धकारमें पडे हुए सिरसे पांवतक मूर्खताका पुतला बन रहे हैं, आज कोई ऐसा मनुष्य मात्र नहीं जो अपने वर्ण धर्म—वर्ण आश्रम—गौरक्षा धर्मसे सच्चा प्रेमकर घृणा न करता हो, न कोई ऐसा कि जिसको

धर्मका संग न हो, न कोई ऐसा दिन, कि धर्मका विचार न हो, न कोई दिनका ऐसा भाग कि धर्म विषयसे बात चीत न की जाती हो।

बचपनमें मातासे, युवा अवस्थामें भार्य्यासे, वृद्ध अवस्थामें लडकियोंसे—रात दिनके २४ घंटे होते हैं, ६ घण्टे धन उपार्जनमें, ३ घण्टे मित्र, २ घण्टे विद्वानोंसे मिलनेमें और बाकी १३ घण्टे स्त्रियोंके संगमें व्यतीत होते हैं। तो अब विचारना चाहिये कि दो घण्टे विद्वानोंका संग १३ घण्टे मूर्खोंके संगसे क्या लाभ उठाने देगा ? बहुतसे स्वार्थी ऐसे कह देते हैं कि स्त्रियोंसे ही प्रयोजन है उसीकी आज्ञामें दिन रात रहना वही स्वर्गकी निसेनी है। याद रखना जब तक धर्मनीति—विद्या—ब्रह्मचर्य्याश्रम—गौरक्षक—धर्म आचरणी—अपनी भाषाभाषी न होंगे तब तक भारतखण्ड कदाचित् उन्नतिको न पहुँचेगा चाहे कितना ही उपाय करो। आजकल भारतको सुख पहुँचानेवालोंके यह तरीके हैं जैसे ज्वरसे पीडित रोगीका अन्तःकरण जल रहा हो और बाहरसे ठंढी वायु की जावे, तो कब शांतिकी आशा हो सकती है जब तक कि औषधि न दी जावे।

हे भारतखंडियो! तुमको यह कहते हुये लज्जा नहीं आती कि ३६० दिन एक वर्षके होनेमेंसे—" एक दिन गौ कुर्बानी होने दो" या इस गौ बछडेको गोलीसे मार दो। गौरक्षक गौभक्षकोंके संगसे सर्पके समान डरना चाहिये। क्या आप लोगोंको अपने हिन्दूपनेका अपने पूर्वजोंका विचार नहीं रहा। क्या केवल लोगोंके मन बहलानेको अखबारोंमें कोरी डींगें ही डींगें लगा देते हो—" गौ रक्षा—अनाथालयोंपर दया" हेडिंग दे देकर कह देते हो कि गौ रक्षा धर्म्म क्या है ? अन्धपरंपराकी खान है, यह दशा देख सुनकर सच्चे सनातनी देशी आंसू बहाते हैं क्या उनका इसी दुर्दशामें पड़ा रहना, और हिन्दुओंको अच्छा

लगता है ? भारतकी हमदर्दी इसीका नाम है। वीर क्षत्रिय ! धनाढ्योंके मन किञ्चित नहीं उकसाता कि, धर्म्मोंकी तरफ झुकैं। अब अन्तमें मेरी हिन्दू मात्रसे, सब सज्जनोंसे प्रार्थना है कि जो परोपकारी और देशोन्नति चाहते हों उन्हें उचित है कि सबसे पहले ब्रह्मचर्य्याश्रम व गौ-रक्षा धर्म ग्रहण करने करानेका शीघ्र उपाय करें। नबावोंने हिन्दुओंके विरुद्ध पक्ष करनेके लिये गौभक्षकता इखत्यार की है। निश्चय है कि जिन्होंने संपूर्ण हिन्दुओंके दुःख देनेको यही उपाय सोचा है। अभी तक हमारे दुःख देनेके प्रयत्न कर रहे हैं। परंतु हमको पूर्ण आशा है कि भारतीय राजा सब मिलकर गवर्मेण्टसे धर्म्ममें हस्तक्षेप न करनेके "कहनेको" खडे हो जांय तो किसीकी कुछ भी पेश न जायगी। गौरक्षाकें सदृश-गौभक्षक विपक्षी पुरुषोंसे सम्मति न ली जायगी, यथार्थ न्याय होगा-और होना ही चाहिये।

धन्य है हिन्दुओंको जो आज सैकडों वर्षोंसे मुसलमानोंके वार सहते२ अंग्रेजोंके भी हिन्दू धर्म्मपर वार होने लगे, मतोंको नष्ट भ्रष्ट करनेको प्रायः उपदेशजनक पुस्तकें छपाईं और उनमें हमारे देवता ऋषि मुनि शिष्ट पुरुषोंको हमारी पुस्तकोंके विरुद्ध मिथ्या दोष लगाये उनपर आज तक कहीं दंड न हुआ जो हिन्दू अपने मतकी रक्षाके लिये उनकी किताबोंका उत्तर लिखा और उनको कुरान आदि प्रमाणीय पुस्तकोंहीसे उनके शिष्योंके कम्मोंका वर्णन किया तो उनपर दंड किया गया। हाय-शोक ! ! क्या ताजीरात हिन्दकी दफा केवल हिन्दुओंहीके लिये बनाई गई है ? हम न्यायाधीशसे यही प्रार्थना करते हैं, कि यदि हिन्दू ही काफिर और दंडके ही योग्य हैं। या नियत रहें, तो जिन २ मुसल-मानों अंग्रेजोंने हिन्दुओंके विरुद्ध पुस्तकें छापी हैं उनपर भी सम्यक् दृष्टि

करके यथार्थ दंड किया जाय, नहीं तो बुतपरस्त हिन्दू गौ रक्षकोंको जो कि अनेकों अत्याचार सहते२ इस कमजोर भारतके अनाथ होजानेपर भी इस मिथ्यादोषसे पवित्र किया जाय अर्थात् "हिन्दुओंके हिन्दोस्थानमें हिन्दूओंके सिवाय कोई गैर जाति, गैर मजहब दस्तंनदाजी करनेका कोई हक नहीं रख सकती, यदि इरादा भी हो तो अन्याय है । गवर्मेन्ट रिपोर्टर साहवसे कहना कि इस विनयको गवर्मेन्टके हुजूरमें पेश करें ।

अंग्रेजोंके कुचक्र पूर्ण शासनसे आजतक शिक्षित भारतीय लोग "अपने स्वदेशीय आन्दोलनोंके विचार सोतेमें बहे जाकर मोहमयी निद्रासे जाग जानें परभी शंकित हृदयसे जेल जानेसे नहीं हिचकिचाते और हमारे—अबाध्य ब्राह्मण नेताओं व पटेल सरीखे नेता आखिर कारागारमें फँसही गये" यह क्या अन्याय नहीं है ? भारत भरपर यह अत्याचार है, पक्की अनीति है. देशसेवाकी आड़में शिक्षित विद्वान भी आमोद प्रमोदके अपूर्व कौतुक कृत्रिम रमणीयताका बाजार गरमागरम प्रधानताकी हाटमें देशकी कैसी शोच्य दशा होरही है—गौ ब्राह्मण कैसा त्रास पा रहे हैं और ७६—५६ लाख साधू भिखमंगे होगये ये हर प्रकारसे सताये जा रहे हैं, इनकी स्टेटें धर्म्मकी जागीरें बैठनेके आसन-मन्द्रों पर कब्जा होता चला जाता है, जब्बरन व लालच देकर धुतकार बता दी जाती है—और भारतकी प्रजा व काश्तकारान कैसे दुःखी हो रहे हैं और भी आगे कैसा परिवर्तन होनेवाला है ? ईश्वर जाने ! प्रत्येक देशकी उन्नति युवक मंडल पर निर्भर है जिस देशके राजा गण—युवा मंडल—विलासी व कायर होते हैं उस देशका अधःपतन होना कोई कठिन नहीं है । जिस देशके युवा कर्तव्यपरायण व बीर होते हैं—उसकी उन्नतिके मार्गको कोई रोक नहीं सक्ता ।

बुद्धिभ्रष्टलोगोंकी बुद्धि सुधारनेके लिये "बुद्धिवर्द्धनी" सनातनी शास्त्र वृद्ध पूर्वजोंके कर्तव्य वीरता–मधुर–भाषी उपदेशोंको–उनकी सादगी गंभीरताको–सहनशीलताको विचार कर अपने देशके पदार्थ अपनेही देशमें रहें–स्वदेश वस्तु प्रचार–कपड़े खादी बुनेके मिल–गरी-बोंको अनाजोंकी सहायता मय काश्तकारान गरीबोंको बीजकी सहा-यता–गौरक्षा करते हुये डेरीयोंका प्रबन्ध और भारतीय बालकोंको ब्रह्मचर्य्याश्रमका उत्साहित करना–ऐसे विषयोंकी सभाओंकी अत्यन्त आवश्यकता है कि जिससे निज कुटुम्बका भरण पोषण देशका प्रत्येक बालक भी करसके । धुरन्धर मदान्ध धनाढ्योंको अपनी तिजोरियोंके द्वार खोल देना चाहिये, दुःखियोंकी सहायता करनेसे भारतका जीर्णो-द्धार सहजमें होजावेगा–"यही धर्म्म नीति पक्का स्वराज्य और देशसेवा है"––मेरे अनुभवसे स्वराज्यी लोग देशसेवाके उद्देश्यकी महिमा अपने स्वार्थ लोलुपताके कारण नहीं समझते–खाली डरपोकोंकी तरह स्वराज्य २ चिल्ला अपने आप खूंखार जानवरोंके मुखमें पड़नेकी और उनसे पीड़ा भोगनेकी कोशिशोंमें लगे हुये हैं–कि जिससे लाखोंकी संख्यामें भारती-योंका हनन होता जा रहा है । जरासी सहानुभूति देशसेवाकी अनुकू-लता मिलने पर भारत खिल उठेगा । हिन्दी साहित्यसे भारतकी जागृति पवित्र उद्देश्य व्यापक बनानेके लिये तर्क वितर्क करना हृदयसे अलग कर ही देना चाहिये । सम्पादकोंकी दलादली-विद्वान-विद्यमान सामाजिक कलहसे महानुभावोंको अलग रहना चाहिये–ऐसे विचारोंका प्रचार करो–जिससे देशसेवाके उद्देश्यका प्रचार सदैव बनाही रहे–"अंकूर नाश न हो" आजकलके ऐसे कठिन समयमें यह नंगा पागल इस क्षत्रीय महासभाके उपस्थित वीर भारतियोंको "देशसेवाका परिचय दे रहा है"

भारतीय विचोर क्या उपस्थित क्षत्रिय महाशय मंडल .भारतके मेरी इन बातोंको बार बार अवलोकन करेंगे--विचारेंगे क्या इन बातोंसे लाभ-वान् होना चाहते हैं--हाय हाय भारत देशका ऐसा सौभाग्य कहां जो अमर्य्यादा काम रोके जांय और भारतियोंका सब आदर करें, भारत सोनेकी चिड़ियाको धन धर्म लाभ हो उसके पर लुचनेसे प्राण बचें। मेरी बातोंसे देशकी दुर्दशाका क्षत्रिय लोगोंको और भी किसी तरह ज्ञान हो जाय और परम्परासे सर्व साधारणमें यह बातें फैल जांय यही उद्देश्य है।

हे गौरक्षक साधू ब्राह्मणो! धैर्य्य देकर कहताहूं इन तीन ही बातों-से आप यशस्वी तो होवे होंगे और काल पाकर इन बातोंका आदर भी होगा। हे भारत जननीके क्षत्रियोपकारक महा सभा!! स्वदेशीय आन्दोलन उपस्थिति आन्दोलनकी प्रज्वलित अग्निमें घृताहुतिकासा काम अवश्य करो--क्योंकि आज ६५--७० वर्षसे स्वराज्य मांगने परभी स्वराज्यकी उपयोगिता नहीं प्राप्त हुई--जेल जाकर अनेक परिणाम-दर्शी युवाओंने--नेताओंने दिखलाही दिया कि भारतमें जगत् गुरु ब्राह्मण-ब्राह्मण गुरु संन्यासी कैसे हैं? अपने देशकी अवस्था और निज कर्तव्यों का विचार करो--यह बातें मैं समस्त भारतवासियोंको सम्बोधन करके कहता हूं भाईयो! दीन हिन्दू--और हिन्दुस्थान देशकी तरफ देखो विचारो क्या शोचनीय दशा हो रही है। यह बातें कई समयको स्मारक रहेंगी। अय मेरे स्वजातीय विद्यालयोंके पढ़नेवाले विद्यार्थियो! क्या तुम अपने देशको जागृत करना चाहते हो तो सदाचार और संतोष सीखो, राजभक्तिकी ध्वजा उड़ानेवालो! क्यों हल्ला मचाते हो? विद्यार्थियोंको राजनीतिके चक्रमें फँसा क्यों प्राणोंके भूखे हो।

उनके प्रबोधके लिये ब्रह्मचर्य्य धर्म नीतिसे क्यों नहीं युक्त करते ? आज भारतवर्षमें स्वार्थ त्याग और कार्य्य तत्परताका आदर्श नहीं है। कौन कहता है—देशहितैषिताका आदर्श भारतीय युवाओंकी कार्य्यावलीका निरीक्षण करें। जन्मभूमिसे कोसों दूर रहकर प्रवासमें उन कार्य्योंको कर रहे हैं, जिन्हें कोई व्यक्ति अपने घर भी नहीं कर सकते—" भारतके पुण्यवानोंसे मेरा अनुरोध है " कि साहित्यसेवा और कर्त्तव्यनिष्ठ पुरुषोंकी सेवा करें जिससे उनकी चमत्कृत प्रतिभा और कार्य्यतत्परताके अनेक ऐसे सुफल देखनेमें आवें और साथही साथ विद्यार्थियोंकी—यह समझकर सहायता करें कि इस देशसेवा करनेमें वे वैसे ही चतुर और योग्य ब्रह्मचारी होते चले जांय। जैसा कि अपने देशसेवाके लिये सतयुग त्रेता—द्वापरमें हो चुके हैं—इस समयमें ऐसी पवित्र भूमि नर्मदा तट होशङ्गाबादमें क्षत्रिय महासभा होनेसे संसारकी जागृतिके प्रचारसे हिन्दू हिन्दी हिन्दपै—राजनैतिक विषयोंका प्रसार करनेमें अग्रसर हो रहे हैं, परन्तु—"धर्मनैतिक विषय आधुनिक वृद्ध ऋषि महर्षि मर्य्यादाका प्रचलित होना अत्यावश्यक है—धर्म नीतिमें अग्रसर होते ही स्वराज्य ही स्वराज्य है—आशा है कि उत्तरोत्तर वे और पंच गौड़ पञ्च द्राविड़ ब्रह्म मंडली सनातनी—वैश्य मंडली ऐसी ही उपयोगिताकी वातोंके लिये अपना अपना समारोह एकत्र कर संसारको देशसेवाका उपहार दिया करेंगे।

अय भारतवासियो ! कोई समयमें सारी पृथ्वीके शिक्षा देनेवाले ब्राह्मण गुरुके पदपर आरूढ़ थे, आज नये २ मतमतान्तरोंके पक्षा पात—अपक्ष हो मनुष्यमात्र—चींटीसे ले ब्रह्मा पर्य्यन्त उसकी सत्तामें अपनी सत्ता

घुसेड़ "फूटका फल चख रहे हैं–" किन्तु आज विधिकी विडम्बना और अपने कामोंके दोषसे परतंत्रता तथा पराई कृपासे जीनेवाले हो गये हैं–" स्वाधीनताके बिना कौन जीने चाहता है–" "परतंत्रतासे बढ़कर गहरा दुःख कोई दूसरा नहीं है"–जरा विचारिये–

तूही तू है सब जगतमें है कहां पर तू नहीं।
परमाणु ऐसा है नहीं जिसमें समाया तू नहीं॥
आनन्दमें अट–खेलियां करने, लगा तू हृदयमें।
बिगडे दिनोंमें भक्त जनका क्या सहारा तू नहीं॥
पुण्यका संचय हुआ जब दौड कर तू आगया।
पतित-पावन हो तो फिर क्या पापियोंका तू नहीं॥
ये जीव, सब तेरे लिये हैं, हे दयामय एकसे।
एक है स्वाधीन फिर क्या, दूसरोंका तू नहीं॥
तोड दे परतंत्रताकी–बेडियाँ तू पैरकी।
कर्म बन्धनमें फसा क्या–तोड सकता तू नहीं॥

सोहनी।

जाको तू नर, तन मानत है, यह आप, रूप, भगवान् है
अहंकारने जबसे घेरौ, कहन लगो मेरो अरु तेरो
भूलगयो निजरूप अबेरो, तूं सर्वज्ञ सुजान है॥ १॥
भली बुरी करणी जब करहै, बंधनमें तो तबही पर है।
निषक्रियको, कछु नाहीं डर है,तुझे कर्म, कीं आन है॥ २॥
मैं हूं देह, अरु देह है मेरी, केवल यह–बडी भूल है तेरी।
पांच तत्त्वकी, यह तो ढेरीई–जान क्यों भया अजान है॥३॥

सतचित् आनन्द, भावसांवरो-औ-पांचकोषनें-होता न्यारो ।
नाम रूप कछु, नाहिं निहारे-यही निर्मल ज्ञान है ॥ ४ ॥

महाम्लेच्छ—म्लेच्छ—नीच गुरु कलियुगमें हो जानेसे—अधिक गुरुओंकी पाठशालामें परतंत्रता भूल और वे इज्जत पाते हुए भी अगर हम उनकी अच्छी शिक्षा ले सकेंगे—यदि सुयोग्य गुरुके योग्य चेला होनेका परिचय दे सकेंगे—तो इतने कष्टोंको सहकर गुरुकुलोंमें रहनेका सुफल हमको मिलजायगा कि अवधूत आश्रम क्या है उसके कर्तव्य साधन कैसे किये जाते हैं और उसके ऐसा करनेसे क्या होता है—उदार—चरित्र गुरु शिष्योंकी योग्यताको देखकर प्रसन्न होंगे—'भवसागरसे भक्त बेड़ा पार लगानेवाले'।

विनय ।

क्या करना है दौलत दुनियां सभी कालके खाने हैं जी ।
हम दादाजीकी प्रीतिमें (रीत) अलबेले मस्ताने हैं जी ॥
दादाजीके ही नाटक धरणी नभसे, अगणित बने ठिकाने हैं जी ।
इसीलिये सब ठौर मजेसे दीवाने फिरते हम मनमाने हैं जी ॥
मृदु मुस्क्यान अरु वह देखो चरण कमल झलकाने हैं जी ।
दादाजी अवधूत नंगेके प्रेमसे बिनदी मोल बिकाने हैं जी ॥

गर चाह तुम्हें होती, हर्गिज जुदा न होते ।
अगर मोहब्बत होती, तो ऐसी बनी होती ॥
मैं बन्दा बना रहता, तुम मेरे खुदा होते ।
कूंचमें न तेरे आते, न ऐसा रुतबा मिलता ॥
अरे हमदर्द मुहब्बतकी, दुनियांमें दवा होते ।

आंखोंसे तेरे गममें, आंसू बहादिये हैं॥
दो किश्तियोंमें भरकर, मोती लुटा दिये हैं।
सानी तेरा पयम्बर, पैदा हुआ न होगा॥
राहे खुदामें जिसने, घरको लुटा दिये हैं।
हजरतके दो नवासे, शेरे खुदाके प्यारे॥
मैदाने कर बलामें, सरको कटा दिये हैं।
अय मौत तूने हमको, दर दर रुलाके मारा॥
घरसे किये हैं बे घर, बनमें बुलाके मारा।
आजाद हो चुके थे, दर २ फिराके मारा॥
संगी न कोई साथी, बनमें बुलाके मारा।

वर्तमान युग और हमारा कर्तव्य नवयुवक दल चेतो! यदि कोई मनुष्य अपने उन्नतिके उपाय,हृदयसे हृदयमें योग्य बननेकी प्रबल उत्कंठा हिलोरें नहीं मारतीं तो उसका अस्तित्व अधिक दिनोंतक ठहर नहीं सकता। विद्यार्थी जो नये बांस होनहार बालक नवयुवकोंसे और उन नवयुवकोंसे जिनका हृदय शुद्ध रजवीर्य्यकी वीर्य्यतासे ईश्वर-भक्ति, माता-पिता—भक्ति गुरु—भक्ति देश व धर्म प्रीति प्रेम—त्याग—उत्साह—पवित्रता और सदाचरणके भावोंसे चारों वर्ण—चारों आश्रम—गौ रक्षा—ब्रह्मचर्य्या-श्रम आदि परोपकारमें लीनतासे भरा हो—वे माता पिता गुरु भक्तिसे अपनी २ जाति मर्य्यादाके आचार विचार सहित शीघ्र ही आगामी सन्ततिके विधाता होंगे।

किसीभी कार्य्यारंभ करनेके पहले नौजवानोंको अपना एक उद्देश्य, आदर्श निश्चित करलेना उनका खास ध्येय बहुत आवश्यक है—आदर्श

सोचनेमें हमें देशकी दशा—समयकी गति—संसारमें अपना स्थान—तथा उनसे हमारा सम्बन्ध इस विषय पर पूर्ण रीतिसे ध्यान देना योग्य है। आधुनिक अवस्थामें जाति समाज—धर्म वर्ण—व्यवस्था इनको समस्त हिन्दू हम आज एक गिरी दशामें देखते हैं—अपने आराम तलब नौ जवानोंसे पूछते हैं कि तुम देशके अन्न नीर-समीरसे पल कर जो अपने शरीरको ठोस वना रहे हो तो क्या उसके प्रति तुम्हारा कोई फर्ज भी है। हम देखते हैं कि वेद धर्म्मकी आड़में धर्म्मके नाम पर तरह तरहके कुव्यवहार-अनाचार और मिथ्याज्ञान कैसे फैले हुये हैं। हमें उनके हटानेकी शक्ति नहीं, निरर्थक वितण्डावादोंमें फंसकर आप अपनी जड़पर कुठार चला रहे हैं। नाना प्रकारकी कुरीतियां-निर्बलतायें तथा शून्य हृदयसे ईश्वरीय शक्तिका दुरुपयोग करते हैं। नई रोशनीके शाइस्ता लोग विलक्षण और अकाट्य वुद्धिसे अपनी शाइस्तगीके नामपर बुरी तरह आघात पहुँचा रहे हैं, हिन्दोस्तानके लिये यह एक भीष्म समस्या है। आजकलके धुरन्धर पुराने मकानको एकदम तोड़ फोड़ मिस्मार कर उसके स्थानपर नई इमारत खड़ी करनेकी धुनमें मस्त हैं, वे पुराने व्यवहार चाल चलन रीति सारी वातोंके शत्रुसे हो रहे हैं, फिर कलियुगमें सतयुगका क्या भान हो सकता है, चाहे वे ठीक हों या ग़लत हों, ऐसी दशामें हम क्या करें।

जो ईश्वरीय श्रद्धाका स्रोत वहता है उसके जाने विना यह जानना नामुमकिन है कि हमारा धर्म किन २ नियमोंपर स्थापित है उसके सिद्धान्त क्या हैं हमारे ऋषि महर्षियों पूर्वजोंने अपनी तथा देशके जीवनकी क्या क्या व्याख्या की है, उसके उद्धारसे हमें आजकलके समयकी गहरी

तहमें गड़ी हुई जातिकी अछूतोद्धार चरखा चलानेकी सम्पूर्ण प्राचीन सम्पत्ति हमारे हाथ लगेगी कि नहीं? जो आश्चर्य्य सहित असमंजसमें हमें एक राष्ट्र बनानेमें बड़ी सहायता पहुँचायगी।

धार्मिक सुधारका दूसरा उपाय स्वयं आदर्शजीवनकी रक्षा करना अर्थात् नमूना बनकर रहना है, हमें खुद सदाचारी बनकर देशके पाखंड-दम्भ-अन्धविश्वास दुराचारिताका मूलच्छेद करना है—इसके लिये हम बड़े छोटेका कुछ भी ध्यान न करके "सत्य" पर दृढ़ रहनेका यत्न करें और दुर्गुणोंमें फंसे हुये व्यक्तियोंको नीतिके साथ रास्तेपर लानेका उद्योग करें, भारतके जीर्णोद्धारका पहला अंग प्रचलित कुरीतियोंका दूर करना है। जैसे अनमेल विवाह, वृद्धविवाह, बालविवाह, लड़कीबेंचू विवाह, लड़कियां देवदासियां बनाई जाती हैं, कहीं छोटे छोटे बच्चे भी वैरागी, निक्कू, छोटिया और सिद्ध सिद्धानी बननेका दम भर रहे हैं। समुद्र विलायत यात्राको धर्मके विरुद्ध साबित नहीं किया जाता है। कहीं नशेबाजोंका बाजार गरम है, कहीं बड़ेसे बड़ा पाप करके अपनेको पवित्र समझा जाता है, कहीं विदेशी सभ्यताकी नकल आंख मूंद कर हो रही है, स्वराज्य स्वराज्य चिल्ला रहे हैं। इनके जो कुछ बुरे फल हो रहे हैं वह किसीसे छुपे नहीं हैं, परन्तु बड़े खेदकी बात है कि हम लोग भारतके जगत्गुरु पंचगौड़ पंचद्राविड़ भारतके तीर्थवासी सब कुछ शान्तिसे सहन कर रहे हैं, सच्ची क्रान्तिकी आवश्यकता है, हमें साहस नहीं कि हम वीरताके साथ इन बुराइयोंको नष्ट करनेके लिये उज्जैन नगरीके नवयुवक दल मंडल महाकालरूप हो कटिबद्ध हों, मगर समय समय पर हम खुद उनके शिकार बने हैं, हमारी यह

कापुरुषता शिरसे पैरतक वाल साफ करा मूंछे मुंडा देशके लिये एक दिन विषका क्या काम करेगी ७६-५६ लाखकी गिनती है।

इस लिये मान अपमान प्रशंसा दुरपवाद इत्यादिकी परवाह न करके अज्ञानकी नींदमें डूबती हुई देश भारतकी नौकाको किनारे लगाना हमारा कर्तव्य है। भारत देशकी जड़ सदाचार है और वह सुधारपर निर्भर है अर्थात् हर एक मत व जातिका व्यक्ति सबसे पहले खुद अच्छा वने—अपना चरित्र गांठे। आज वर्तमान समयकी वड़ी भयंकर-भयानक अवस्था है, इससे मालूम होता है कि आज संसारभरका चित्त कलुषित हो गया है, क्योंकि सप्तपुरियोंमें महाकालकी उज्जैनपुरी कि जहां वारहवर्षमें अनेकमतोंके साधू एकत्र हो सनातन धर्म्मका झंडा फहराते हैं, उस स्थानमें कोयलोंकी कूक और हंसोंकी किल्लोलोंमें मुझ कौये और कुत्तेकी कांव कांव भौं भौं परम प्रसिद्ध ही है, इस दावा—दरबारकी प्रसिद्धिकी हरसिद्धी देवी ही लाज रख मधुर एवं सरल रचनासे वड़े २ सहृदय विद्वान् भी मुग्ध हो नव युवक दलोंसे गौ साधू ब्राह्मणसेवा रक्षा द्वारा प्रकृति सौन्दर्य्य मानवी स्वभावका मनोहारी उक्त वातोंका वर्णन तथा परमात्माका प्रगाढ़ प्रेम अत्यानन्दका देनेवाला दृश्यका चित्र इस भाँति खींच उनके हृदयोंको उत्तेजना देंगे, ७६—५६—लाख साधुओंका एक होना-तमाम नंगोंका एक होना—असंभव नहीं महा असंभव है, एक कहेगा आम तो दूसरा कहेगा इमली, कहो खेतकी तो सुनेंगे खलिहानकी, दूसरोंकी वातें सुनने या माननेसे-गाली गलोज जूतें पैजारमें लोग अपमान न समझें और एक साथ खान पान व्यवहारवालोंसे अपमान समझते हैं। क्यों न समझें सब ही चतुर्वेदी ठहरे, शालिगरामकी वटियामें कौन छोटी कौन वड़ी सब समान हैं, सब स्वतंत्र हैं, सबको समान अधि-

कार है,जिसके मनमें जो आता है आवेगा करेगा, किसीको बोलने या रोकनेका अधिकार नहीं,हां घरमें बैठकर पीठ पीछे गाली गलोज भले ही कर लो, किसी कपटकी चका चौंधकी चपेटमें आ चौंक कर कभी२सम्हल भी जाते हैं पर सच्चे,पक्के चटनी कर सदा चांदसे बने रहते हैं,वह घरमें क्या बाज़ारमें भी जाकर मतवालापन दिखावें तो कोई चूंतक नहीं कर सक्ता है,क्योंकि एक लकीरके फकीर बूढ़े ज्यादा और दूसरे नई रोशनी-वाले, युवक और अधेड़ दोनोंमें बाघ बकरीकासा वैर हो गया है, बूढ़ोंके मनमें यह बात जम गई है कि अँग्रेजीवाले सबही भ्रष्ट हैं, क्योंकि वृद्धोंको बेवकूफ बनाकर नई रोशनीके दिमाग़दार अपना काम निकालना चाहते हैं। और अंग्रेजी सिक्खडोंने यह समझ रखा है, कि ये बूढ़े लोग बड़े जिद्दी हैं हमारी सुनते ही नहीं, इन बुड्ढोंके रहते सुधार होना कठिन ही नहीं असंभव है। नतीजा उसका यह है कि आपसका विश्वास कितेही उठगया, अब कोई किसीकी नहीं सुनता है, अपनी २ धुनमें सब ही लगे हैं और मनमानी करते जाते हैं। अब मैं बूढोंके दोष दिखाऊं तो वह नाराज होते हैं और अंग्रेजीवालोंकी भूलें बताऊं तो वह नाक भौं सिकोडें! अब आप ही कहिये किसके विषयमें क्या कहूं,बड़े आदमियोंकी नाक कटती है—पतलूनके बाहर होते हैं। न आतशबाजीको जलाकर खाक कर सक्ता हूं, और न सोड़ा वाटरकी बोतलें ही फोड़ सक्ता हूं न सदाचारकी दुहाई दे सक्ता और न व्यभिचारकी निन्दाही कर सक्ता, सदाचारकी बातें तो वहां करनी चाहिये जहां उसका अभाव हो—उज्जैन-पुरीमें सदाचारकी चरचा करना मानों उज्जैनपुरीको दुराचारी कहना है क्योंकि इस पवित्र पुरीमें यहां सबही सदाचारी ब्रह्मचारी आचारी और विचारी हैं।

हे वृद्ध विद्वानों ! कानोंपरसे हाथ उठालो, आचार विचारकी बात छेड़ता हूं तो नई रोशनीके सुधारक आखें लाल करते हैं, चर्चा चला कर उनके चमकानेकी चेष्टा करता हूं तो वह ढोंगी घबराकर त्राहि त्राहि करते हैं, वह समझते हैं कि "कांचन कामनीय" के ऐशो अशरतमें ही अवधूतोंकी सिद्धता है, वही अन्तर्यामी भगवान हैं, षड् ऐश्वर्य्यसंपन्न दादाजी महाराजका भी डर नहीं रखते, वली अल्लाहका अदब नहीं करते ऐसे अनेक काट छांट नंगोंकी मुझे बिलकुल ना पसन्द है—ऐसी अवस्थामें अब आपही बताइये क्या कहूं, जिनका जोड़ तीनों लोकमें नहीं है, दादाजी महाराजको जगह २ लिये २ फिरना इन्हीं सभोंका काम है, खैर आप भी सोचिये और मैं भी सोचता साचता हूं कि उज्जैनमें ही अवधूत आश्रम कायम हो और एक आंवली घांट दूसरा बुधनी घांट नर्मदा किनारा खर्रा घांटपर होना ही चाहिये, इन दोनों बातोंमेंसे एक विषय भी सूझ गया तो अच्छा है नहीं तो अल्लाह २ खैर सल्ला।

विनय—

जय श्रीदादाजी जगदीश !
हे मेरे प्रभो ! न यों टरकावो वैसे सबके ईश।
बहुत दिनामें खबर लई है अब तो रस बरसाओ ॥
सत्य सरसता को नित नूतन सबकों स्वाद चखाओ ॥ इति।

अय वसुधैवकुटुम्बो ! दादा—दरबारके शिरोमणि सरदार छोटे दादाके भुजस्वरूप प्राईवेट सेक्रेटरी समर सचिव दण्डी स्वामिका इस हिन्दोस्थानमें हिन्दु वर्णाश्रमियोंके देखते ही देखते संसारभरमें "कर्मवीर समाचार पत्रके पढ़नेवालोंमें" अखबारों द्वारा जो यह इज्जत अफ-

जाई सदैवके लिये अवधूत नंगोंका साधन स्थिर चिरंजीव स्मारक चिह्न जीता जागता रहेगा।

सांईखेडेमें आंवली घांट व उज्जैनमें देशहितके लिये इस अवधूत अखाड़ेने जो कुछ किया वह सब कुछ किसीसे छिपा नहीं है और इसी दण्डीके कारण आज कोटिशः जनसमुदाय दादाजी महाराजको इधर उधर वृद्ध योगीको लिये २ फिरनेमें अकस्मात वियोगसे दुःखी है।

छोटे दादा हरिहरानन्द १९१६ ई० में शिष्य हुये, उनसे मुझसे बरेलीमें बातें होनेसे श्रीदादाजी महाराजसे मैंने बुलानेका अनुरोध कर बरेलीसे उनके सांईखेड़े आनेमें रायपूरके गोपीकृष्णने अट्ठाईस हजारका नगर यज्ञ किया। हम सब लड़कोंमें दादाजीने छोटे दादाको महन्त बनाया, अर्थात् दादाजी महाराजने अपनी शक्ति रूपसे कायम किया। हमारे चरित्रनायक दादा शंकर अवतारीने छोटे दादाका सचित्र मुझको काशीसे आकर्षण कर सन् १९१७ ई० आखिरमें नग्न कर शिखा सूत्र रहित कर अनुसरण किया, १२-१३ वर्षसे इस योगीकी महान योग्यता हरशहरोंमें जा २ कर वर्णन की। जब कि सांईखेड़ेमें मालगुजार बहुतसे लौंड़े भीषण संग्रामके लिये युवा नंगे एकत्र हो दादाजीके आसनको च्युत कर आंवली घांटसे—लड़भिड कर खराब होते फिरते हैं। दादाजी नर्मदावासी हैं वह नरबदा किनारा नहीं छोडना चाहते हैं, उनका कथन है होशंगाबाद खर्राघांट रहेंगे कहा था, नर्मदा नहीं छोड़ना चाहते हैं। आदर्श मानकर काम करना चाहिये, जब मनुष्य निर्धन होता है और जीविका नहीं होती है तब घबराकर उसके द्वारा ऐसा कहा जाता है "पढ़ो बेटा बोई" "जामें हांडी खुदबुद होई" संसारके उपस्थित सज्जनोंसे विनय है कि प्रत्येक प्रत्येककी सहायता करनेमें तत्पर रहें, क्योंकि

भारतकी दशा।

जब जाति भाई ही जाति भाईकी सहायता न करेंगे तो फिर और किसीसे और किसीको क्या प्रयोजन ? थोडेसे तो नंगे ही हैं और तीन चार पार्टीज हैं, नंगे अवधूतोंमें यह बड़ी अचरजकी बात है, मनमुटाव मेलके न होनेसे जो आपत्तियां झेलनी पड़ती हैं सो सबको विदित होही गया होगा। कोई मनुष्य यदि चाहे कि मैं अकेला ही दुनियांमें कुछ काम कर दिखाऊं यह बिलकुल असंभव है इस लिये भारतीय सब भाइयोंसे प्रार्थना है कि एक दूसरोंकी सहयता करते रहें और मेल प्रीतिसे जीवनको व्यतीत करें–

सपादि तजहु निद्रा, क्यों वृथा सो रहे हो।
नरतन शुभ पाया, क्यों ? इसे खो रहे हो॥
चिर समय तुम्हारा, व्यर्थ यों ही गया है।
प्रियवर जगनेका, काल ये आ गया है ॥ १ ॥
निज अधम दशाको, देख भी जो न जागे।
विधि रचित महींमें, तो तुम्हीं हो अभागे॥
तप, बल, बुधि विद्या, त्यागके रत्न भारी।
दर दर फिरते हो, मांगते बन भिखारी ॥ २ ॥
परिहरहु अविद्या, आलसी मौज त्यागो।
जनपद हितकारी, भूपके प्रेम पागो ॥
तन मन धन भीसे, जो करोगे भलाई।
हर तरह तुम्हारा, ईश होगा सहाई ॥ ३ ॥

वर्णव्यवस्था, गुण कर्म स्वभाव, जन्म तीनोंहीसे है, यह बात सत्य है तो नया युग स्थापित होगया, इसमें सन्देह ही क्या है ? इसके अनुसार

शीघ्र चेता। एस विचार स्वतंत्र एवं आत्मिक ब्रह्मबलद्वारा प्रगट होता है। निष्पक्षपात हो सत्यका यथोचित प्रकाश करो। "सनातन धर्म्मावलम्बियो उठो चेतो ! !" एकमात्र साधु नीतिका आश्रय लो, धूर्त नीति या वर्तमान समयकी "डिपलोमेसी" से दूर रहो—हट जाओ।

"भारतीयोंको पत्ररूपी चेलेन्ज"

सर्वशक्तिमान परमात्माको धन्यवाद देकर और परोपकाररत श्रीमानोंका आदरपूर्व्वक अभिवादन करके नीचेके विनीत शब्दों द्वारा मैं सज्जनोंसे कुछ प्रार्थना करता हूँ। सभी लोग चाहे वे ईसाके अनुयायी हों चाहे मूसाके, चाहे दाऊदके चाहे मुहम्मदके, चाहे वे ब्राह्मण हों चाहे अब्राह्मण, चाहे आस्तिक हों चाहे नास्तिक हों, उनकी याने दादाजी महाराजकी कृपाके हिन्दू मुस्लेईमान अँग्रेज ईसाई एकसे पात्र हैं। दादाजी महाराजने बहुतसे इस दलके दुःखियोंकी रक्षा की है वह उनकी कृतज्ञताके पाशमें बँधसी गई है, इसीसे इस दलने उन्हें जगत्गुरुकी उपाधिसे विभूषित किया। दुःखियोंकी निरन्तर सहायता की तथा अपने भुजबलसे ही वे सदा अपने कर्तव्यपालनमें तत्पर रहे हैं, इसमें उन्हें सफलता भी हुई कि दादा शंकर औतारीकी हर गांव गांवमें, घर २ में प्रत्येक मत-मतान्तरोंके प्रितिष्ठितजनोंके यहां आर्ती होती है—यह भलाई और सदाचरणका फल अवश्य ही अच्छा होता है और कीर्ति भी उससे अवश्य ही बढ़ती है, तमाम मतानुयायियोंपर दादाजीका ही कवजा रहा, परन्तु आजकल बहुतसे विरुद्ध हो गयेसे दीखते हैं (बड़े दादा धूनीवालेसे नहीं छोटेदादा व उनके दरवारियोंसे बहुतसी जनता चिडी हुई पाई जाती है) भविष्यतमें उसकी हानि हो, क्योंकि अत्याचार और अन्यायका सर्वत्र राज्य हो गया है, साधू संत सताये जा रहे हैं, उनके धर्म्मपर आघात

पहुँचा रहे हैं। जगह जगहसे उनपर अनेक मुकदमें चलाये जा रहे हैं, चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ है; कठिनाइयां बढ़ रही हैं, सांईखेड़ेसे बड़े दादा और छोटेदादाका घूमना फिरना भारतके गांव गांव घर घरमें चारों तरफसे हाहाकार मचा हुआ है कि ऐसे होनहार नवयुवक नंगे-अवधूतोंके गिरोहको जोकि एक वृद्ध योगीके साथ काफला है वह आज-कल बड़े संकटमें है (हालां कि वह हर्ष विषादरहित अवश्य है) परन्तु जीते जागते सच्चे त्यागी परमहंसोंकी हिन्दू राजाओंके होते हुये, संकर-वर्ण रजवीर्य्यकी सचावट जाननेवाले नीच ऊँचको समझ सकते हैं कि (जिनकी भारतके तमाम सनातन धर्म्मके राजा व धनाढ्योंको सिद्ध-ता जाहिर है, फिर यह मुकद्दमें उन वली अल्लाह बालवृत्तिधारी योगीके अनेक राजप्रासादोंतक सच्चे साधूरूपी दीनता पहुँच चुकी है) आज डेढ़ वर्षसे इस दशामें अवधूतोंकी दुर्दशाका कहना ही क्या है, उनके चेले असंतुष्ट हैं, भक्तगण कष्ट पा रहे हैं, हनुमानबाग उज्जैनकी मुसल-मान प्रजा व बागके मालिक भी प्रसन्न नहीं हैं, अवधूतबेडेपर कबर तोड़-नेके मुकदमें बगीचेमें रहनेका किराया आमकी फसल खेतकी फसलों के हरजानोंका कचहरी दरबारमें नंगे अवधूतोंको ले जाना इत्यादि २ हिन्दूराज्यमें भी हिन्दुत्व होते हुए इस वली अल्लाहकी व इस-वली अल्लाहके बेड़ेकी बहुत ही बुरी दशा है, इन अपमानोंके झेलने-पर भी जन साधारणको ज़रा भी शान्ति नहीं है कि तीर्थतकमें भी सुभीता नहीं, अतः वे क्रोध और निराशासे अत्यन्त उद्विग्न हुये अपना अपना सिर धुना करते हैं। इतनी बुरी दशाकी चेष्टा करनेवाले गौ-भक्षकोंसे सताये जानेवाले साधू संतोंके मान मर्य्यादाकी गोरक्षक हिन्दू क्या रक्षा नहीं कर सकते? "उज्जैन, महाराजा ग्वालियरका है" हिन्दू

राज्यमें। क्योंकि, अत्याचार और प्रजा पीडनसे "राजाओंकी व राज्यकी" शक्ति नष्ट हो जाती है, साधूसंतोंका तिरस्कार करना ऐसे राज्योंमें अपनी शक्तिका ऐसा दुरुपयोग करनेके कारण भविष्यत अच्छा नहीं जान पड़ता, क्योंकि इस अवधूतबेड़ेकी यह दुर्दशा अफवा सर्वत्रसे सुनाई पड़ी जानेके कारण एक राहे खुदा अलमस्त मुजबजब हालतवाले फकीरके साथ कई दुष्टप्रकृति द्वेष रखते हैं, अतएव ब्राह्मण, योगी, वैरागी, साधु, संन्यासी आदिको भी इस जमानेमें सताये जा रहे हैं, इसका सप्तपुरियोंमें श्रेष्ठ काशीपुरी, उज्जैनपुरीके विद्वान् मंडल हिन्दू जनता बिना इस बातपर विचार किये मर्य्यादापुरुषोत्तमकी मर्य्यादा कैसे रख सकते हैं? "वर्णाश्रम धर्म्म केवल रजवीर्य्यकी सत्यासत्य उपदेश सनातन धर्म्मबीजमव्ययं है" आज नास्तिक लोग उस पवित्र चरित्र उदासीन त्यागी निस्पृही बालब्रह्मचारीपर अपनी दुष्टता प्रकट करनेको उद्यत हुए हैं, भोपालके नवाब हमीदुल्लाखां साहब व उनके मुसाहब व कर्मचारी गण व प्रजा भी दादाजीको चाह रहे हैं कि रियासत भोपालमें—आंवलीघांट व बुधनीघांट नर्मदा किनारे रहें सब अवधूतबेडेका भार भी उठानेको तैयार हैं, बुधनी घांटपर २० बीस लाखकी जमीन देनेको तैयार हैं, परन्तु गोरक्षककी सेवा स्वीकार होनेके कारण गोभक्षकोंके नमक हलाल नहीं होना चाहते, इसलिये भारतके मुसलमानोंको हिन्दुस्थानी हिन्दुओंसे दोस्ती रखना है तो गोरक्षक बन गोभक्षकोंको नेस्तनाबूद करदें। काशी व उज्जैनपुरी व भारतमें बाहरसे हुए, हिन्दुस्तानी कहलानेवाले मुसलमान बहुत जल्द हिन्दुओंके दिल दुखानेवाले काम छोड़ अपनी २ सत्यताका परिचय देदें। मुसलमानोंको इस बातसे यह उपदेश मिलेगा कि परमेश्वर सारी मनुष्यजातिका परमेश्वर है, केवल हिन्दुओंका

या मुसलमानोंहीका नहीं, उसके सामने काफिर और मुसलमान दोनों बराबर हैं, 'मनकाफिरे खुदाएम, खुदा काफिरमा । मन मुर्शद खुदाएम खुदा मुर्शदमा ।' रङ्गके भेदका उत्पादक ईश्वर ही है वही सबके पिताका पिता याने खुदा—" दादा है " मसजिदोंमें उसीके नामकी बांग दी जाती है, हिन्दुओंके मन्दिरोंमें भी जहां घण्टे बजाये जाते हैं उसीकी पूजा होती है ।

एक दूसरोंके धर्म्म और रीति रस्मोंको तुच्छ ठहराना परमेश्वरकी इच्छाका अनादर करना है, यदि हम किसी चित्रको नष्ट करेंगे तो उसके बनानेवाले चित्रकारके क्रोधके हम अवश्य ही भाजन होंगे अतएव दैवी काय्र्योंकी हँसी दिल्लगी करना मना है, साधुओंका सताना न्यायके सर्वथा प्रतिकूल है वह उदार नीतिकी सीमाके सरासर बाहिर है, क्योंकि मजहबोंकी तकरारसे देशके उत्सन्न होजानेकी सम्भावना है, शरीफोंका यह शेवा नहीं है, चिऊंटियों और मक्खीयोंको सताना वीर और बुद्धिवानोंका काम नहीं। आश्चर्य्य तो इस बातका है कि नवाव साहव भोपालके मुस्लेईमान होकर भी हिन्दू फकीरको अपने राज्यमें वली अल्लाहको रखना चाहते हैं और उज्जैनके मुस्लेईमान हिन्दू राज्यके रहने वाले—यहांके मुसलमान उस वली अल्लाह व वली अल्लाहके बेड़ेके साथ हमदर्दी—सहानुभूति-सन्मार्ग दिखाने और आत्म मर्य्यादाके नियम बतानेमें भूल या आलस्य कैसे कर रहे हैं? इन लोगोंको तो बा कायदा खिदमत—सेवा करना चाहिये बस अन्त हो गया, पाठको ! देखें यह बातें कितने महत्त्वकी हैं—

विना विश्वास श्रद्धा नहीं, विना श्रद्धा नहिं ध्यान ।
विना ध्यान भगवानके, होत नहीं कल्यान ॥

संसारमें रहकर परमेश्वरकी आज्ञानुसार चलना हमारा कर्तव्य है। शारीरिक इच्छाओंके रोकनेमें हमको योगियोंका अनुकरण करना चाहिये कसरत भी करना, मनके समान शरीरके सुधारकी भी आवश्यकता है-यह सुधार प्रतिदिनके व्यायामसे होता है।

जिसका चित्त पवित्र हो संसारमें उससे बढ़कर कोई नहीं है। कोई अच्छा काम विना उत्कण्ठा और शुद्धताके नहीं होसकता—वही मनुष्योंमें पूरा महात्मा हो सकता है "उसका नमूना उज्जैनमें दादाजी महाराज हैं"।

सुलेमानके बचन है! ओ नौजवान मनुष्यो!! अपनी युवा अवस्थाका "सदाचारसे" आनन्द मना!!! नव यौवनके समयमें अपने मनको प्रसन्न रख अपने मन और आंखोंके मार्गसे चल—परन्तु इस बातका स्मरण रखो कि इन सब बातोंका परमेश्वरको उत्तर देना होगा-यही सोचना अमल करना साधुता है। हमें अपनी आँख कान और जीभ बन्द न करना चाहिये, जब देखना सुन्ना बोलना हमारे लिये लाभदायक हो—यदि इस विषयको तुच्छ न समझे वरना उन बुराइयोंको जो साधुताके अभावसे उत्पन्न होती हैं—विचारें तो उससे कोई बुरा फल उत्पन्न न होगा। "सच्ची साधुता कैसी अच्छी चीज है" असाधुता पापमें दाखिल है—कैसे दुःखकी बात है? यह पाप इतना अधिक इस संसारमें देखनेमें आता है, परमेश्वर ऐसा करें कि इस विचारसे हम सबको लाभ पहुँचे और हमारे विचार पवित्र हो जांय। बालकपनसे जवानीमें पहुँचेगे उस समय सांसारिक इच्छायें तुम्हारे हृदयमें उत्पन्न होंगी—जो वह इच्छायें रोकी न जांयगी तो उनसे पाप करने लगोगे। यह सांसारिक इच्छायें हमको परमेश्वरने वैसीही दी हैं जैसी और पशुओंको। यह

परमेश्वरकी ही दी हुई हैं इस कारण वे अपने आप बुरी नहीं होसक्तीं यदि वे सावधानीसे काममें लाई जायं—तो इनसे सिवाय लाभके हानि नहीं हो सक्ती, यह इच्छा उस शरीरसे अलग नहीं होसक्ती--जिस शरीरको परमेश्वरने हमें इस संसारमें अपनी सेवाके लिये दिया है। हमारा शरीर एक पवित्र वस्तु है—उसको परमेश्वरका मन्दिर भी कह सकते हैं—क्यों कि उसका पवित्र अंश मनुष्यके शरीरमें रहता है—शरीरका प्रत्येक भाग भी पवित्र है और शरीरसम्बन्धी इच्छा भी पवित्र हैं—यदि वे नियमित सीमाके वाहर न जावें।

मित्रो! कभी तुमने शरीरको ऐसा समझा है कि वह एक पवित्र मन्दिरके समान है जिसमें अविनाशी पवित्र जीव जो परमेश्वरके यहांसे आया है और अन्तमें परमेश्वरहीमें लीन होगा स्थित है। यदि अब तक ऐसा नहीं समझा तो अब समझना चाहिये इस प्रकारका विचार हमारी भलाईका कारण है। जितनी हम अपने शरीरकी रक्षा करेंगे और जितना हम उसको पवित्र रखेंगे उतना ही हमारा मन और विचार उत्तम होगा और हम परमेश्वरसे मिलनेके योग्य होंगे।

हमको अपने विचारमें, काममें और वातचीतमें वहुत सावधान रहना चाहिये, जो हमको परमेश्वरसे अलग करें—असाधुता और बुरे विचार व वचनसे बचना उचित है, हमको इस वातका ध्यान रखना चाहिये कि हम असाधु विचारोंको मनमें ही न आने दें—विचारके अनुसार ही काम होते हैं। मुख्य वात यह है कि—परमेश्वरके समीप होनेका सदैव ध्यान रहे जो हम उसके पास होनेका ध्यान रखेंगे तो पापोंसे वचे रहेंगे।

जब तुम सांसारिक कार्योंमें लगे हो तव तुमको अपना मन परमेश्वर-की ओर लगाना चाहिये, अपनेसे वड़ोंकी संगति करो, अच्छी पुस्तकोंसे

ज्ञान बढ़ाओ—इस विषयमें विद्या हमारी बहुत सहायता करेगी और हमको पवित्र और उत्तम विचारोंकी ऐसी अचल सम्पत्ति देगी जो सब राजभण्डारसे बढ़कर प्रतिष्ठाको प्राप्त होगीं। हमें अच्छी २ इच्छाएँ उत्पन्न हों यदि उत्तम विचार चित्तमें आने लगेंगे तो बुरे काम हमसे न होंगे। शरीरसम्बन्धी इच्छाका पूरा करना व न करना विशेष कर तुम्हारे ही आधीन है। तुम जानते हो कि योगियोंका जिन्होंने संसार सम्बन्धी इच्छाओंसे मुँह मोड़ लिया है—मुख्य सिद्धान्त यह है कि सांसारिक बुरी इच्छाओंको रोकें—संसारमें रहकर परमेश्वरकी आज्ञानुसार चलना हमारा कर्तव्य है। शारीरिक इच्छाओंके रोकनेमें हमको योगियोंका अनुकरण करना चाहिये।

चित्तकी सरलता और विश्वासका न होना ही पापका कारण है। यदि पाप न होता तो हमको कोई शंका न थी। परन्तु वर्तमान दशाके दखनेसे हम इस लोकमें सबपर इकसा विश्वास नहीं कर सकते। यदि ऐसा करें तो संसारके लोग हमारे अभिप्रायका दूसरा अर्थ लगायेंगे। "सब बातोंमें चाहे वे धर्मसम्बन्धी हों चाहे समाज सम्बन्धी एक मत होना दूसरकी भलाई चाहना और परस्पर प्रीति रखना उत्तम मनुष्योंका सत्पुरुषोंका अच्छा फल है, मित्रताके साथ साधुताका होना आवश्यक और सब मनुष्य साधू नहीं—इस लिये सब मनुष्य मित्रताके योग्य नहीं हो सकते, परन्तु जब सच्चा मित्र मिलता है तो कैसा आनन्द होता है? किसीने सच कहा है कि "संसारमें मित्रसे बढ़कर कोई दूसरी वस्तु नहीं है जिनके मन आपसमें मिले हुये हैं वे एक दूसरेको कैसा सुख देते हैं? दुःखसुखमें सहानुभूति प्रकट करते हैं और विचारमें एक दूसरेके साथी और सहायक होते हैं, सबसे

अच्छी और निष्कपट मित्रता वह है जो बाल्पनसे होती है, इस समय आशा भरी रहती है और सांसारिकचिन्ता कष्ट और नैराश्य मनपर नहीं व्यापते । बाल्य अवस्थामें भोलापन होता है, इसलिये लड़के बुराइयोंसे बचे रहते हैं, इस अवस्थामें जिस प्रसन्नता और चित्तकी सरलतासे मित्रताका अंकुर उत्पन्न होता है, वह बात बड़ी अवस्थामें प्राप्त नहीं हो सकती, इस अवस्थामें न तो किसीबातकी चिन्ता रहती है और न किसीबातका सन्देह, प्रत्येक वस्तु हमारे आशारूपी फूलको कुम्हलानेके बदले प्रफुल्लित करदेती है, शोक ईर्षा और नैराश्य आदि हमारे यौवनकी उमंगको चाहे नष्ट न करें परन्तु हानि तो अवश्य पहुँचाते हैं । बालक हो या युवा-भाग्यवान वह मनुष्य है जिसको मित्रोंका सुख है, चाहे उसको नैराश्यता और कष्ट हो व निर्दयी और स्वार्थी मनुष्यसे काम पडे तो भी उसको विश्वास है कि मेरे आनन्दका कारण संसारमें विद्यमान है, क्योंकि सब अवस्थाओंमें पुराने मित्रोंकी प्रीति ही एक उत्तम वस्तु है, जो वृद्ध अवस्थामें अधिक दृढ़ होती है, एक दूसरेके दुःखसुखमें साथी हो सकते हो,एक दूसरेका दुःख दूरकर सकते हो, और आनन्द वढा सकते हो,जबतक मित्रता शुद्धचित्तसे न हो, सच्ची नहीं हो सकती। मित्रताके लिये आपसमें सत्कार करना और प्रीति रखना बहुत आवश्यक है, कोई मनुष्य ऐसे होते हैं जो देखनेमें मित्र जान पड़ते हैं,परन्तु भीतरसे मित्र नहीं वरन वैरी हैं, इससे मेरा प्रयोजन उन कपटी आचरणी मित्रोंसे है जो किसी बुरे काम गुप्त पाप-अनुचित बोलचाल नियमके विपरीत चलनेके लिये आपसमें मिल जाते हैं, जो मनुष्य इस प्रयोजनसे मित्रता करता है वह अपनी और अपने साथीकी आत्माको दोषी बनाता है, इसमें सन्देह नहीं कि मनुष्यके रंग ढंगसे कुछ २ उसकी चाल चलन और स्वभाव विदित हो जाते हैं ।

याते उत्तम अधिकतर, और न कोई बात।
तुम अपने सत चित्तसे, रखो सत्यसे नात॥
दिन बीते जिमि होत है, अन्धकारमय रात।
ऐसेही तुम जानलो, स्वाभाविक यह बात॥
बचो झूठसे प्रति समय, जहांतक बने उपाय।
करहु सत्यमें सर्वदा, पूरी रुचि मन लाय॥

सदैव सत्य बोलो, साहसको न छोड़ो, लोगोंपर दया दृष्टि रखो, गुरु और शिष्य, युवा और वृद्ध, चतुर और मूर्ख, बलवान् और निर्बल आपसमें मिलकर मित्रता क्यों न करें? अच्छे काम और सबके लाभमें एक दूसरेके पक्षपाती और सहायक क्यों न बनें? संभव है किसीका स्वभाव अच्छा हो चाहे ऐसे समयमें वह बुरा और रूखा जान पडे, यही दशा विपत्ति दुःख हानि और मित्रोंकी मृत्युसे हम सबकी हो सकती है, ऐसेही कारणोंसे बलवान्से बलवान् मनुष्य विवश हो जाता है और सर्वप्रिय मनुष्य भी चिड़चिड़ा बन जाता है, बहुधा ऐसी बातें हुआ करती हैं, परन्तु हमको उनका ज्ञान नहीं होता जैसे एक साहसी मनुष्य किसी छिपे घावसे बेचैन हैं और उसकी चेष्टासे कष्ट सूचित होता है परन्तु हम उसके कष्टका मूलकारण नहीं जान सकते, इसलिये यह बात अनुचित है कि जिस मनुष्यको हम प्रसन्नमुख न देखें, उसको देखते ही बुरे स्वभाववाला समझलें, हम उनके यथार्थ भेदोंको नहीं जानते व उनके निजकी बातोंको बहुत कम जानते हैं, प्रेम दृष्टि और मधुर वचनसे मनुष्यको अपना सहज स्वभाव फिर प्राप्त हो जाता है।

जो मनुष्य बेखटके दुष्टतासे दूसरोंपर अन्याय करते हैं, और उसपर कुछ ध्यान नहीं देते वे परमेश्वरके सामने अपने ऐसे कामोंका क्या उत्तर

देंगे ? प्रीति बड़ी वस्तु है, सब कामोंमें प्रीतिका ध्यान रखना चाहिये ऐसा करनेसे मनुष्यमें प्रीति और परमेश्वरकी ओर प्रेम उत्पन्न होता है, हमें अपनेको तुच्छ समझना ही अच्छा है, परन्तु अपने पडोसियोंको सदैव अच्छा समझना चाहिये, जो हम ऐसा नहीं कर सकते तो चुप रहना अच्छा है।

जो काम दिखानेके लिये किया जाय चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो व्यर्थ है। जो काम परमेश्वरके निमित्त किया जाता है चाहे वह थोड़ा ही क्यों न हो स्वीकार किया जाता है। परमेश्वरको थोड़े और बहुतसे कुछ प्रयोजन नहीं, हमारा कोई परिश्रम जो उसकी प्रसन्नताके लिये किया जाय व्यर्थ नहीं हो, सच्चे मनसे जो काम किया जाय उसका फल अवश्य होगा, जो मनुष्य अपने कामोंसे दूसरेके कामको प्रधान जानता है। परमेश्वर उसको दोनों लोकमें बड़ाई देता है, जिसके मनमें सच्चा प्रेम है वह अपनी बड़ाई नहीं चाहता है, परमेश्वरका गुणानुवाद करना उसका मुख्य काम है, ऐसा मनुष्य किसीसे ईर्षा नहीं रखता क्योंकि वह अपने लिये कुछ नहीं चाहता है, ऐसा मनुष्य अपने लाभोंसे बेसुध और परमेश्वरके ध्यानमें प्रतिक्षण मग्न रहता है, सूर्य्यके अस्त होनेपर रातका प्रारंभ होता है, सूर्य्योदयके समय रातकी समाप्ति होती है, बहुधा सुखके पश्चात् दुःख, दुःखके पश्चात् सुख हुआ करता है, संचयका क्षय अवश्य होता है, चढ़ावके पीछे उतार और सयोगके पीछे वियोग होता है। जीवन भी मृत्युसे समाप्त हो जाता है, निदान जिसकी उत्पत्ति है उसका विनाश है "परन्तु विद्या कभी भी नष्ट नहीं होती"।

प्रत्येक वस्तु थोड़ेही दिनोंके लिये उत्पन्न होती है, और अन्तमें नष्ट हो जाती है, यह सृष्टिका नियम और स्वभाव है, इस संसारमें कोई वस्तु

ऐसी नहीं जिसमें परिवर्तन न होता हो, प्रतिदिन प्रतिक्षण हममें उलट पलट होता रहता है, एक वस्तु जाती है दूसरी आती है और इस हेरफेरका प्रभाव हमारे चित्तपर पड़ता है। पृथ्वीपर कोई वस्तु एकसी नहीं रहती उसमें प्रतिक्षण उलटा पलटी हुआ करती है। रात जाती है दिन आता है, दिन जाता है रात आती है, शीतकालके पश्चात् ग्रीष्मकाल आता है, ग्रीष्मके पश्चात् वर्षा आती है, इस प्रकार प्रत्येक ऋतु आती जाती रहती हैं, ऋतुओंके साथ जल वायु भी बदलते रहते हैं अर्थात् शीतल और उष्ण होते रहते हैं, इस उलट पलटके प्रभावसे कोई वस्तु नहीं बची अर्थात् यातो उसकी उत्पत्ति होती है व वह नष्ट हो जाती है, फूल जो एक समय खिलते हुए दिखाई देते हैं दूसरे समयमें मुर्झा जाते हैं, पत्तियां जो ग्रीष्म ऋतुके प्रारंभमें अपनी सुन्दरतामें अद्वितीय होती हैं, पतझड़के समय सूखकर पृथ्वीपर गिर पड़ती हैं, वसंतऋतुमें पत्ररहित डालियां फिर हरीभरी और सपल्लव हो जाती हैं।

दोहा—रंग ढंग संसारको, इक सम नाहिं दिन होय।
ऐसो को बन बाग़ जहँ, पतझड विपति न होय ॥

जिस प्रकार सांसारिक पदार्थोंमें परिवर्तन होता है अर्थात् जैसे—सर्दी गर्मी रात दिन तपन वर्षा आती जाती है वैसी ही हमारी भीतरी शक्तियां भी पलटती रहती हैं। कभी हर्ष कभी विषाद, कभी रोग कभी आरोग्य, कभी मित्रता कभी शत्रुता और कभी जन्मआदि होते हैं।

कबहुँ चुप्प सांधे रहत, कबहुँ करत बहुबात।
कबहुँ बिराजत सेजपर, कबहुँ रथीपर जात ॥
काहु न देख्यो एकरस, होहिं युवा वा बूढ़।
निसा छपरखट जो पडे, वे दिन रथी अरूढ़ (चढ़े)

भाग्य सदा तू नियमसे, अपना चक्र चलाव ।
अभिमानिनके मान हरु, नीचा बहुत दिखाव ॥
घाम बादली अरु झरी, बड़ तूफान बहाव ।
तू अपना पलटा हमें, लाखन विध दरसाव ॥
तोसे अरु तुव चक्रसे, नाहिं डरते हम नेक ।
प्रिय अरु अप्रिय वस्तु लहि, मम मनमें रस एक ॥
मोपे पलटे खाव तुम, निर्भय भाग्य प्रधान ।
होइ हैं हानि न लाभ मम, यातें निश्चय जान ॥
रचि भिक्षुक मोंको हँस्यो, कि है यह बड़ो दरिद्र ।
मन महान अपनो सुलखि, हमहुँ हँसत तव छिद्र ॥
सबसे मैं उत्तम भयो, पाई जब नरदेह ।
तबहिं भाग्य मम वश भयो, यामें नाहिं संदेह ॥
संगति सुखकर स्वाद नाहिं, विरह दुःख यादि नाहिं ।
कहा सराहिये मद्यमद, यदि उतार मद नाहिं ॥
समय तुल्य नहिं हित कोउ, अहित हुतासु समान ।
यथा करत कारज मनुज, तथा लहत फलमान ॥

"चौपाया छन्द"

गोबिन बैल, बैल बिन खेती, खेती बिन जग नेती है ।
ताबिन कर अरु कर बिन कोया, कोय बिना दल केती है ॥
दलबिन नृप औ नृपबिन शासन, ताबिन प्रजा न चेती है ।
बिना प्रजाका देश न सोहे, सबकुछ गौयें देती हैं ॥ १ ॥
गोबिन गव्य गव्यबिन यज्ञा, यज्ञविना नहिं धर्म्मा है ।
यज्ञ देत जल आयु ज्ञान बल, सिद्ध करत सब कर्म्मा है ॥

असन बसन मिष्टान्न देत गो, पग रक्षत दे चर्म्मा है।
मोसे भी बढकर ये पाले, गौ रक्षा वर धर्म्मा है॥ २॥
"दोहा"
पय घृत माखन शुद्ध दधि,खाद बैल धन धान।
प्रेम परस्पर गौ बढ़ै, मिले शक्ति कल्यान॥

जिसके हृदयमें परोपकार है उसकी विपदा शीघ्र नाश होती है और पांव पांव पर संपदायें प्राप्त होती रहती हैं।

श्लोक—प्रस्तावसहजं वाक्यं सद्भावसदृशप्रियम्।
आत्मशक्तिसमं कोपं कुर्वाणो न विनश्यति॥

प्रस्तावके समान वाक्य, सद्भावके समान प्रीति और आत्मशक्तिके समान क्रोध करनेवालेका कभी नाश नहीं होता।

इस लिये बड़ा आश्चर्य्य है कि, इस प्रजापालनी दीनदुःखविनाशिनी न्यायशीला हिन्दूपंच सरकारके राज्यमें भी मुझ दीन गौपर इतना अन्याय होता है। हाय! मैं तो हिन्दुस्थानके आर्य्य और मुहम्मदियोंको अंग्रेजोंको, मनुष्यमात्रको इकसां जानती हूं,सबको एकही प्रकारका दूध देती हूं,यह नहीं कि स्वराज्यवादियोंको मीठा और किसीको या मुहम्मदियोंको खट्टा देती होऊं। फिर क्यों मुझपर म्लेच्छों और यवनोंका इतना अत्याचार होता है? हाय! क्या कोई भी इसका सुननेवाला नहीं क्या? कोई भी मेरी रक्षा करनेवाला इस समस्त भारतवर्षमें नहीं है क्या? २३ करोड़ ये कभी सनातनी हिन्दुओंके हृदयमें पूर्वसा रुधिर नहीं है, हाय! वे पूर्व्वजोंके वाक्य क्या हुये? वे मनु पाराशरजीकी स्मृतियां कहां गईं, जो आज वर्तमानके नवयुवकदल नई रोशनीके दिलचले जवान उन स्मृतियोंको चाट चूट चौंपटकर विस्मृत हो "गौ

ब्राह्मण साधुओंका" अनादर करते चले जाते हैं। यह हिन्दुओंका हिन्दो-स्थान कैसा? गौ पुकारती है कि हा ! अब मैं किसकी शरण जाऊं ? क्या यह विज्जूपात मुझपर कुंभोंके मेले व क्षत्रियोंकी महासभा-स्वराज्योंके सम्मेलन-नुमाइश सभा सुसाइटी-वर्तमान राजा महाराजा-सेठ साहूकारान-रईसान हिन्दू देखते ही रहें और मेरा दूध पीते रहें, मैं तो यह जानती थी कि यवनोंके ही राज्यमें मेरा तथा मेरे पुत्रोंका वध होता था । सो क्या अब सरकारोंके राज्यमें भी मेरा मेरे पुत्रोंका वध होता हीं रहेगा? तथा साधू ब्राह्मणोंका अपमान भी कुछ न समझा जायगा ?

हे वीर हिन्दू-क्षत्रिय-वैश्यो ! मैं पुकार २ थक गई अब तो मेरा रक्षक एक ईश्वर छोड़ कोई नहीं है। परन्तु क्यों निराश होऊँ? क्या मेरी पुकार भारतके हिन्दू राजा "महासभा सम्मेलन कर" "शारदाबिल" की तरह अंग्रेज सरकारसे जोकि सात समुद्रके पार वास करती है तो भी क्या हुआ? क्या कोई इस गौ पुकारको वहांतक न पहुँचावेगा?

तमाम हिन्दू गोवध होनेसे अब ऐसे सहढीठ हो गये हैं कि क्षत्रिय नरेशों व धनाढयोंने प्रजा सत्ता चूस-विलायतोंकी सैरोंसे भारतको दुःखित कर दिया, यदि स्वराज्यवादी चिल्लावें तो भी नक्कार खानेमें तूतीकी आवाज इस समस्त भारत भूमिपर आच्छादित होकर अन्धकारसा छा रहा है, कैसे गोरक्षा, विना ब्रह्मचर्य्यके स्वराज्यके हकदार सच्चे अमन चैन पानेवाले सद्गृहस्थ हो सकते हैं? हे विश्वंभर ! शीघ्र ही सुधि लीजिये !

हे भारतके हिन्दवा सूर्य्य-सूर्य्यवंशी-चन्द्रवंशी-वीरक्षत्रियो! धनाढ्य वैश्यो ! सनातनी हिन्दू कहलानेवालो ! आप अपने धर्म्म गौ, ब्राह्मण साधू, संत तमाम मतके हिन्दुओंको आपहीका आसरा है कि गोवध, अत्याचारसे और साधु संतोंको अनेक अन्यायसे सताये जानेसे हिन्दू

ोडित हैं, जल्दी ध्यान दो। क्या आप वीर हिन्दुओंके सामने व भारतके स्वराज्य मांगनेवालोंके सामने "मेरा व भारत अनाथ गौका बध हो रहा है" हे हिन्दुओ! मेरी रक्षा करो!! तुम्हारा मुख्य कर्तव्य है दूध पीकर ही ब्रह्मचर्य्याश्रमसे पुष्ट हो दुनियांके गृहस्थसे लेकर तमाम कारबार चला सकोगे—यह मेरा बारम्बार अन्तिम निवेदन है।

हे देशहितैषियो! आपके रहते हुये भारतकी गौयें, ब्राह्मण,योगी,साधू, संत सताये जायँ, नेत्रोंसे अश्रु ढालें, आप हिन्दू मेरे लिये कोई उद्योग न करेंगे, राष्ट्र हिन्दीभाषाका प्रयोग न करेंगे, अंग्रेजीमें ही लेकचर झाड़ेंगे, अँग्रेजी ही व्यवहार रखते हुए ही हिन्दू कहलायेंगे, तो डींगे झाड़ो परन्तु वर्णधर्म वर्णआश्रमकी कक्षाओंका तिरस्कार तो मत करो, पुनः एकबार सूचना घुमाय२ हस्ताक्षर लेलो,हे भारतवासियो!यही प्रार्थना है जहांतक हो गोरक्षा करो, जैसे मैं अपने दूधसे आप सभोंका पालन करती हूँ वैसे ही आप अपने परिश्रमसे मेरा पालन करो, विश्वास है—प्रार्थना करो, उद्योग करो, पुकार अवश्य सुनी जायगी। हिन्दू महाशयो! कौनसा वज्रहृदय होगा जो इसप्रकार गौकी दुर्दशा देखते सुनते सहाय करनेको कटिबद्ध न हो। यदि लाखों हिन्दुओंके दल क्षत्रिय राजाओंके सामने यह "गौकी पुकार पुकारें" और वीर क्षत्रिय—धनाढ्य वैश्योंके "दस्तमुबारिकसे" हस्ताक्षर हों तो आशा है कि अवश्य ही यह जघन्य कार्य्य भारतसे उठ जाय "स्वराज्य भी मिलजाय"।

गोरक्षाका उपाय।

१—चारों वर्ण चारों आश्रमी हिन्दू यथाशक्ति और निज इच्छानुसार "दान चन्दा" करके गौरक्षणी सभा नियत करें और इसके आधीन अभीतककी गौशालायें व पिंजरापोल आधीन रहें, हर जातिके

मुख्य २ पुरुष सभासद हों, जो कुछ इस विषयमें समय २ पर प्रबन्ध होंगे वे उन सबकी सम्मतिसे होंगे ।

२—इस सभामें सम्पूर्ण कार्य्यकर्त्ता नौकर रखे जांयगे, इस गौ व्यापार-रूपी रक्षा डेरीका सम्पूर्ण सभासद उनकी परीक्षा आदि प्रबन्ध करनेके अधिकारी रहेंगे ।

३—सब हिन्दू सज्जन अपनी २ जातिको एकत्र करके यह प्रतिज्ञापत्र लिखें जो कोई मुसलमान-ईसाई-हिंसक पुरुषोंके हाथ गाय बेंचेगा वह जातिसे पतित होगा वह हिन्दू न समझा जायगा, खिलाफत कमेटी भी स्वराज्यवादियोंकी दोस्त उसी समय समझी जायगी जब कि हिन्दुओंका दिल दुखानेवालेको वह भी अपना हितैषी न समझें, इसप्रकार सब आपसमें हस्ताक्षर करलें ।

४—हिन्दूलोग आपसमें गौविक्रय करें इसकी मनाही नहीं है, परन्तु विना जाने पुरुषोंके हाथ विना निर्णय न देना ।

५—जिसकी गायका कोई ग्राहक न हो और वह वेचना चाहे तो सभा मोल लेगी, और उनकी रक्षाके लिये गांव २ जंगल आदिका प्रबन्ध करेगी, उनके व उनके नौकरोंके लिये काफी मकान वनावेगी ।

अन्तमें मेरी सब सज्जनोंसे प्रार्थना है कि जो परोपकार और दशोन्नति चाहते हों, उन्हें उचित है कि सबसे पहले गौरक्षा-ब्रह्मचर्याश्रम-विद्याग्रहण करानेका उपाय करें, केवल गुड़के कहनेसे जिह्वा मीठी नहीं होती वह तो खानेसेही होगी ।

जिनका हृदय ईश्वर—भक्ति-प्रेम-त्याग-उत्साह-पवित्रता और सदाचरणके भावोंसे भरा होगा वेही शीघ्र भारतको दूध खिलानेवाले गौरक्षक-धर्म्मरक्षक होंगे, शीघ्र ही आगामी सन्ततीके विधाता होंग, आदर्श

सोचनेमें हमें देशकी दशा-समयगति-संसारमें-अपना स्थान तथा उनसे हमारा संबन्ध इस विषयपर पूर्णरीतिसे ध्यान देना योग्य है, आज हिन्दू धर्म्म बहुत गिरी दशामें देखते हैं, अपने आराम तलब नौजवानोंसे पूछते हैं कि तुम देशके अन्न--नीर-समीरसे पलकर जो अपने शरीरको ठोस बना रहे हो तो क्या उसके प्रति तुम्हारा कोई फर्ज भी है, या निर-र्थक वितंडावादोंमें फँसकर आप अपनी जड़ोंपर कुठार चला रहे हैं ? ज्ञाति विचार-"रजवीर्य्यकी शुद्धता" अवश्य माननीय है, भारतका दुःख तो जरासेमें जाता है, वर्षोंसे सैंकड़ों पार्टीज हैं, बड़े अचरजकी बात है, मेलके न होनेसे जो आपत्तियां पड़रही हैं, सो सबको विदित ही है, कोई मनुष्य यदि यह चाहे कि मैं अकेला ही दुनियांमें कुछ काम कर दिखाऊँ यह बिलकुल असंभव है । जीवन व्यतीत करना है, एक दूसरे की सहायता करते रहो । सनातनधर्म्मावलम्बियो ! सत्य प्रेमियोंको निष्पक्षपात सत्यका यथोचित प्रकाशकर संग्रह करें ।

गोरक्षा धर्म्महीके सम्यक् पालनसे ईश्वरकी प्राप्ति हो सकती है, इन्द्रियोंका न रोक सकना ही विपत्तिका मार्ग बताया है, इस उद्देश्यकी सिद्धि कर्म्मानुष्ठानसे चित्तशुद्धिद्वारा ज्ञानलाभ करके सर्वोपरि भक्ति-मार्गसे हो सकती है । धर्म्मशब्दसे बोधित है, जहां भ्रातृप्रेम है वहां ही लक्ष्मीका निवास है, उसको सदैव सुख ही सुख है ।

"महा अनर्थ रीति" "सरकारके अवश्य प्रवन्ध योग्य--"

अय भारतवर्षीय मेरे भाइयो ! मुझको आज एक ऐसी कल्पना उठी बात सूझी है कि यदि हम सब उसपर ध्यान देकर चलें तो हमारे वहुत-से दुःख जोकि प्रतिदिन हमको पीड़ा देते हैं दूर हो जायँ और यदि गवर्मेन्ट भी उसका विचार करे तो वहुतसे कुकर्मियोंको उसमें दण्ड

मिले, उस वातको हम तुम सव प्रति दिवस देखते भालते हैं, परन्तु कोई नहीं विचारता। समाचार पत्र भी देशोन्नति चाह रहे हैं—परन्तु इस को नहीं विचारते—पोलिस भी वहुतसे झूठे सच्चे मुकद्दमे वनाया करती है, परन्तु इस सच्चे मुकद्दमेका आजतक चालान नहीं किया, वकीलोंके दलाल भी इधर उधरसे वहुतसे मामले ले जाते हैं,पर इस विषयके मामले-में आजतक कोई वकील न हुआ होगा। मुखविर भी वहुतसे समाचारों-की खबरें देते हैं पर इसकी खवर आजतक किसीने नहीं दी, गवर्मेन्ट भी वहुतसी वातोंका सोच २ कर प्रवंध करनेको कानून वनाया करती है, और किसी २ अपराधमें तो जो कि उसकी इच्छाके विरुद्ध होता है आप ही मुदई वन जाती है, पर इस विषयमें वह भी आजतक मौन ही साधे रही, और कभी मुद्दई न हुई, न किसीको दंड दिया। यद्यपि यह उसकी इच्छा और प्रवन्धके विरुद्ध है, नहीं जानते कि कैसा अंधेरका परदा सवोंकी बुद्धि और दृष्टिपर पड़ा हुआ है कि यह वात किसीको भी नहीं सूझी। यद्यपि प्रतिदिन होती रहती है, वह वात यह है कि " साधुओंमें व्यभिचार " यह कैसी वुरी वात है ? तनिक सोचो और विचारो कि इसी पापके कारण कैसे २ उपद्रव इस देशमें होते और वढ़ते जाते हैं, हे समाचारपत्र संपादको ! जव देशोन्नति तुम चाहते हो तो इस ओर क्यों नहीं अपनी लेखनीको मोड़ते और एतद्देशीय भारतीय और अपनी मानी हुई गवर्मेन्टको क्यों नहीं सुझाते कि यह कैसा भारी अपराध होता है जो कि तुम्हारे अभीष्टका वाधक हो रहा है ? देखो देशोन्नतिकी यही भूल है। अव प्रजा वहुत वर्णसंकरी और नपुंसक होती जा रही है। इसीसे पौरुषहीन—कुकर्म्मी—कुचाली—निरुद्यमी—विश्वासघाती—झूँठी इत्यादि होती है और इसका कारण यही है कि एक

कन्या ८० वर्षके बुड्ढेके संग द्रव्यके लालचसे व्याह दी जाती है। लड़कीको बेंचना उसका धन लेकर खाना " शारदाबिलसे " कदाचित् यह अनरीतें मिटें, जब यह बातें प्रचलित नहीं थीं तब कैसे २ कार्य्य इस भारतभूमिके लोगोंने किये थे और एक समय अब है। सच है साधुओंके आजकलके अनाचार और ऐसी कुप्रथाओंके ही कारण ऐसी कन्यायें व अबलाओंके शापसे इस भारतकी यह दुर्गति हो रहीं है कि भारतमेंका घरका हिन्दू जैसा चाहिये वैसा प्रसन्नचित्त नहीं है किसी न किसी एक बातसे अवश्य दुःखी है। यदि इसका कुछ प्रबन्ध न हुआ तो अभी और दुर्गति होगी। गोवधके विषयमें जो पशु हैं, तुम इतना लिखते हो पर इस विषयका आजतक हमने कोई समाचार न सुना, न देखा, न पढ़ा, यह तो साक्षात् कन्यायें–विधवायें–हैं गौयें हैं, जिनका वध उन्हींके मां बाप–मालिक बेंचकर सब पंचोंके सामने कर डालते हैं और सब तमाशा देखते हैं, कोई कुछ नहीं कहता। अरे भाइयो! गौके निमित्त दया करते हुये " गायका वध न करने दो,शीघ्र एकत्र होकर और उसके वध न होनेके उत्सवमें हर्ष मनानेका उपाय करो" यह तो बड़े अनर्थकी बात है कि एक तो वध करे खुशी हो और दूसरा जो उसके नातेदार पूजन करें। अपनी व जगत् जननी मानें उसको धर्म्म पूज्य मान उत्सव करें, फिर वध देख दुःखीके दुःखी रहें, तुम्हारा यथार्थ उत्सव करना यही है कि विधवाओंका दुःख दूरकर हमदर्दी प्रचलित कर दो, जिससे कि ये सहस्रों विधवायें गौयें प्रतिवर्ष विधवा होकर " बलि " हो जाती हैं, अथवा वृद्ध मनुष्योंसे विवाह " अमर्य्यादा कार्य्य " हो जानेसे वधिकगृहमें इसी निमित्त बांध दी जाती हैं, उनका पुनर्विवाह व गोत्रव न कराकरके उनको भी जी–दान दो।

सत्यताको विचारो, हे समाचारपत्र सम्पादकों ! देखो, यह इन्हीं
अबला-कपिला गौओंके शापके हेतुका कारण है ! ! कि तुम्हारे लिये
" प्रेसएक्ट " फिरसे रचा गया और तुम्हारे मुख मूंदे गये। यदि तुम-
लोग इस विषयकी चेष्टा करोगे तो आशा पूर्ण है कि उक्त एक्ट वर्जित
हो जाय। क्योंकि जिस दिन हमने इस विषयमें लिखनेको लेखनी उठाई
उसी दिन समाचारपत्रोंसे ज्ञात हुआ कि यह शुभ समाचार इङ्गलिस्ता-
नसे आ गया कि उक्त एक्ट जारी कर दिया, गांधीको तारीख ५ अप्रेल
सन् १९३० ई० को गिरफ्तार कर ही लिया। यदि समाचारपत्रसम्पा-
दक इस विषयमें नहीं लिखते तो हे दारोगा-इन्सपेक्टर और सुप्रि-
टेन्डेन्ट पोलिस तुम्हीं क्यों नहीं कोई मुकद्दमा इस विषयका चलान करते
और अपनी कर्तव्यता दिखलाते, जो आजकल किसीने नहीं की। तुम्हीं
प्रजाके और गवर्मेन्टके सच्चे शुभचिन्तक बने रहो, जिसमें " लिंगदर्श-
नम् " " परमं लाभं " तुम्हारा भी लाभ हो और तुम्हारे भाइयोंका भी
देखो गवर्मेन्टको यह सुझाओ-कि साधुता क्या चीज है ? गर्भ पतन-
स्त्री हरण-गुदाभंजन-व्यभिचार-गौवध-किसीके मतपर आक्षेप इत्यादि
अपराधोंका प्रबन्ध यह करनेको अच्छा हो कि लालचके कारण ! जो
कन्या एक वृद्ध मनुष्यको व्याह दी जाती है " जिह्वाके
स्वादसे गौओंका वध " होता है, कोई भी भेषका साधू लड़कोंको
चेला बनाया व्यभिचार करना शुरू किया, यह न हुआ करे, यह
रीतियां मिटजावें। यदि इन एक दो तीन बातोंका नियम हो जाय
तो बहुतसे अपराध जिनमें तुमको अहर्निश वृथा श्रम करना
पड़ता है न करना पड़े। भारतके हिन्दुओंका दुःख इस हिन्दोस्थानसे
उठजाना चाहिये और गवर्मेन्टके प्रबन्धमें भी बहुत सुभीता पड़जावे,

प्रजा भी सरकारसे खुश रहे,सरकार भी वही है जिससे उसकी प्रजा प्रसन्न रहे। हमतो यह जानते हैं कि पोलिसका जो अदालतोंमें विश्वास नहीं है, वह इन्हीं पापोंके श्रापका कारण है, क्योंकि यह अपने पदका यथार्थ कार्य्य नहीं भुगताते।

पोलिस भी यदि न्यायके ही साथ इस सच्चे मुक़दमेंका चालान करनेमें सकुचती है तो हे दलालो! तुम्हीं किसी युवा पुरुषको मुद्दई बनाकर हक़तलफीकी नालिश किसी वकीलसे करवा दो, यह पेशा तो गवर्मेन्टने इसी उपकारक दृष्टिसे नियत किया है, यदि किसीकी हक़तलफी हो तो यह वकीललोग उसका यथार्थ वृत्तान्त जतला करके उसको दिलवावें, फिर हिन्दोस्थानके हिन्दूओंको सच्चे उपदेश देने व अपना सच्चा हक़ मांगनेपर दण्ड व कैद देकर क्यों भारतियोंका तिरस्कार किया जाता है? क्या इसीका नाम क़ानूनोंपर अमल करना कहा जाता है?

अय नये युवकदलो! मेरे प्यारे भाइयो! फिर तुम क्यों नहीं किसी युवा पुरुषको सुझाते हो तुम भी तो आधे वकील हो,आधे क्या? सत्य पूछिये तो वकीलोंके वकील "अन्यायके शिरोमणि" तुम्हीं हो। देखो! युवा स्त्रीपर युवा पुरुषका हक़ है, भारतकी गौपर अत्याचार न सहना, हिन्दुस्थान हिन्दुओंका ही होनेपर अपने घरमें ही दूसरोंका अन्याय सहना,हिन्दुओंकी बुज़दिली-पस्त हिम्मति-नामर्दी-है,नकि एक ८० वर्षके बुड्ढे-गुंडेका निसंदेह बुढ़ियापर उनका हक़ है और यह भी है कि क्वारी कन्यापर क्वांरेका और रंडवेका विधवापर हक़ क्यों न जारी हो? फिर क्यों रातदिन ऐसे व्याह होते रहते हैं? और तुम किसी युवा

पुरुपसे नालिश नहीं कराते,यह अपराध तुम्हारे ऊपर रहेगा क्योंकि तुम-लोग जान बूझकर नहीं बताते कि तुम्हारी हक़तल्फी हुई। यदि तुम नालिश करो तो तुम्हारा हक़ तुमको मिल सक्ता है, याद रक्खो इन्हींके शापसे हाईकोर्ट इत्यादिसे तुम्हारे वर्जनेकी आज्ञा होती है, जो जो तुम इस कामको मन लगाकर करनेकी चेष्टा करोगे तो इनके वरदानसे तुमको यह लाभ होगा, कि गवर्मेन्ट निश्चय करलेगी कि यह हिन्दुस्थान हिन्दूओंका है मुसलमान व अंग्रेज "जबरन" कबजा कर उनका दिल दुखाते रहते हैं, यह दलाललोग झूंठे मुक़द्में नहीं लाते वरन परोपकारपर इनकी दृष्टि है, इनके पदको विद्यमान रहने दो।

हे मुख़बिरो! अगर दलाललोग इस निरासरो कि हमारा तो पद उठा जाता है इसकी नालिश नहीं कराते यह सोचकर कि हम और ही और अपना मन लगावें तो तुम इस बातकी मुख़बिरी कर दो कि एक नंगे साधूनें सबकी पोल खोल ऐसा २ अपराध रातदिनमें होता है, जोकि सहस्रों दूसरे अपराध और उत्पातकी मूल है, तुम्हरा तो यह धर्म्म ही है कि समाचार हरवातका देदें, चाहे कोई कुछ करे व न करे,नहीं तो तुम्हारे धर्म्ममें अन्तर हुआ जाता है क्योंकि जब खबरही नहीं देते तो मुखबिर कहां रहे, और फिर तुम्हारा आदर सत्कार कौन करेगा, हम तो आशा करते हैं कि तुमको इसके पारितोषिकमें कोई पद भी मिलजाय क्योंकि? यह मुख़बिरी इस प्रकारकी है जो आजतक किसीने नहीं की, केवल इस बातकी मुख़बिरी कर दो कि यह बातें कानूनविरुद्ध होती हैं क्योंकि जब अकालमें भूखे मनुष्य अपनी संतानको कुछ लेकर नहीं देने पाते तो फिर यह कब करणीय हो सक्ता है,कि बाप मां अपनी बेटीको कुछ धन लेकर दूसरेको इस प्रकारसे देदें कि उनका कुछ अधिकार

उस लड़कीपर न रहे, क्या यह बात नहीं है जिसके लिये दया करके हमारी कृपालु और न्यायशील गवर्मेन्टने भारतवर्षसे अरबों रुपया वार्षिक आयकर लाभ उठाते जा रहे हैं और भारतवर्षको गुलाम अर्थात् बुर्दह फरोशी-तिजारती करदिया, तो क्या यह भारतपर अन्याय नहीं है, कि अपनी बेटीको धन लेकर बुड्ढेके संग व्याह दें या हम शादी करें और मजा दूसरा लूटें।

यदि इनमेंसे कोई इस कार्य्यको नहीं करता तो गवर्मेन्ट ही इस नंगे पागलकी बातें सोचे कि यह कैसा एक घोर अपराध कानूनके विरुद्ध है जिससे बहुतसे विघ्न हैं, उत्पन्न होते हैं,देखिये बहुतसी बातें जिनके दूरकर-नेका गवर्मेन्ट प्रबन्ध करती है,यह कुरीति उन उत्पातोंको अधिक करती है अर्थात् गवर्मेन्ट जीव रक्षा करना चाहती है, पर इससे जीवोंकी हानि होती है, क्योंकि जब एक नवयौवना एक बुड्ढे खुर्राटको व्याह दी गई तो वह उस बाबाजीसे और खास भिखमंगे नंगेसे काहेको रमेगी ? और जब न रमेगी तो संतान मारी जायगी। यदि यह युवा पुरुषसे व्याही जाती तो निश्चय संतान होती,इस प्रकार गोवधके समान तो कहिये कि जीवहिंसा हुई, यदि इसको दैवयोग माना जाय तो और सुनिये युवा स्त्री जब अपने पतिसे सन्तुष्ट नहीं हैं तो घरमें कलह रखेगी और घरकी कलहमें न जाने किसको क्या सूझे यह स्त्री ही दुःखित होकर किसी प्रकार आत्मघात कर डाले अथवा अपने बाबाजी महाराजको विषादि देकर मार डाले, जैसा कि बहुधा देखनेमें आता है—क्योंकि पतिके दुःखके तुल्य स्त्रीको और कौनसा दुःख है,यह तो स्वकीय दशा है यदि वहपरकिया हो गई तो अपने पडोसियोंके धर्म्मको नष्ट किया, जिससे उनकी स्त्रियाको सौतिया डाह उत्पन्न हुआ और कलह मची इसका भी परिणाम वही जीव-

हिंसा रहा । और जो इसका पति परलोक सिधार गया तो कामके वश होकर व्यभिचारी हो गयी और फिर गर्भ पतनका उपाय ढूंढना पड़ा, अथवा ऐसी कोई औषधि जिससे गर्भयोग न हो सके क्योंकि पति तो अब रहा ही नहीं जिसकी सन्तान कहलावे, इसी प्रकार बहुतसी जीव-हिंसा हुई, जबकि हमारी गवर्मेन्ट सिंह—सर्प—भेड़िया आदि मनुष्यघातक पशुओंके मारने निमित्त पारितोषिक देती है तो इस मनुष्यघातनी कुरीतिका प्रबंध क्यों नहीं बांधती ? जिससे इस देशकी जनता बढनेके बदले घटती है । हम आशा करते हैं कि गवर्मेन्ट शीघ्र इस ओर ध्यान देगी । और इस कुरीतिको दंडनीय ठहरा कर कोई प्रबंध इसका करेगी, कि भविष्यतमें कोई ब्याह व लौंडेबाज़ी ज़िना—गोवध आदि ऐसा न होने पावे, जो रुपया लेकर किया जावे इसके पहचाननेकी रीति बहुत सुगम है क्योंकि, वृद्धको नवयौवना कौन कभी बिना लालच ब्याहेगा ?

"सनातन साधुओंमें वीर्य्य प्रधान है । मेधा-प्रज्ञादिक सब ही इसके आधारपर रहती है, यदि यह शुद्ध और पुष्ट रहें, तो मनुष्य बलवान् बुद्धिमान्, तेजस्वी, सुन्दर तथा नीरोग रह सकता है । तब ही प्रकृतिका अनुभव कर सकता है" ब्रह्मचर्य्यसे जो २ लाभ और उसके न होनेसे जो २ हानियां प्रत्येक मनुष्यको ज्ञात है, इसका अनुभव साधारण मनुष्यको नहीं हो सकता । जहां ब्रह्मचर्य्य नहीं वहां जीवन नष्ट है, जहां ब्रह्मचर्य्यका अखंड पालन होता है ऐसे ऊर्ध्वरेता पुरुषके दर्शन होना इस कलियुगमें असंभव है " परन्तु हां एक महान् योगी दिगम्बर अवधूत धूनीवाला दादा जो सांईखेड़ेमें रहता था अब उज्जैनमें उपस्थित है, ऊर्ध्वरेता बालब्रह्मचारी है, जो चाहे वह इस सत्यको जान सकता है, कि— "मरणं बिन्दुपातेन, जीवनं बिन्दुधारणात्" वीर्य्यसे ही जीवन है और उसके

अभावसे मृत्यु, इसलिये भारतके स्वराज्य मांगनेवालोंको भारतियोंके लिये ब्रह्मचर्याश्रम और ब्रह्मचर्य्याश्रमकी पुष्टिके लिये गौरक्षा और इन दोनों-की पुष्टिके लिये ७६ लाख साधुओंमेंसे कई महान् ऊर्ध्वरेताओंके लिये अवधूताश्रम हर तीर्थों व शहरों और बड़े २ गांवोंमें इस धर्म—नीतिको स्थित करना ही रीति अनुसार राजनीतिज्ञोंको बिना मांगे स्वराज्य मिला ही पड़ा है, यही इस समयमें "क्रान्ती" है, आवश्यकता है,हमारे भारतमें देखा देखी "काम विषय" बहुत बढ गया है, वर्णसंकरता ज्यादा ल गई "रजवीर्य्यकी प्रधानता" नष्ट हो गई, बिन्दुपातसे धैर्य्य नष्ट और बुद्धि भ्रमित, स्मरण शक्तिका नाश और उद्योग करनेकी शक्ति नष्ट, हो जाती है, "बिन्दुधारण" ही सब प्रकारकी उन्नतिका साधन है। ब्रह्मचर्य्य ही संजीवनी विद्या है। शारीरिक तथा बौद्धिक बलका यही आधार है, हमारे भारतीय जितने अधिक लोग ब्रह्मचर्य्यके महत्त्वको समझेंगे, जितने अधिक लोग उसका पालन करेंगे उतना ही बौद्धिक बल अधिक बढेगा, ब्रह्मचर्य्यहीका बल हमको स्वराज्य दिलायेगा।

राजनीति शासन-कलासंबन्धि शास्त्र हैं, शासन—नियमन और आज्ञा-पालन रूपी परोंपर खड़ा होसकता है, अर्थात् राज्यमें जिस २ शास्त्रद्वारा नियमन हो सके और लोग राजाज्ञाका पालन करसकें वही शास्त्र राज-नीति शास्त्र है, राजनीतिमें केवल पापियोंके दण्डका आदेश है, पापि-योंका रुधिर बहाना आवश्यक ही नहीं, वरन पवित्र कर्तव्य है-"गौरक्षक अब गौभक्षकोंका शीघ्र नाश ही कर डालें, तब स्वराज्यही स्वराज्य है"। अर्थात् भगवान् संतोंकी रक्षा दुष्टोंके नाश और धर्म्मके लिये आया करते हैं, संतोंकी रक्षा और दुष्टोंका नाश एक ही पदार्थके दो अंग हैं, जबतक दुष्टोंका नाश न किया जाय, संतोंकी रक्षा नहीं हो सकती, अतः

जब २ आवश्यकता आपडी है तब २ दादाजी धूनीवालोंकी तरह कलियुगमें भी शंकर अवतारी प्रगट हो अपनी शक्तियोंद्वारा सदाशिवने पापियोंके नाशसे संतोंकी रक्षा की है, और सच्चे धर्मका स्थापन किया—करके प्रकाश हो रहे हैं ।

इसलिये सांईखेड़ेके बेचारे साधू दबाये हुये सताये हुए निर्बलसे हैं, दादाजीने साधुओंकी सहायता करनेके लिये कमर कस ली है, विजय बैजन्ती उन्हीं धमकी शरणागतवालोंको प्राप्त करायेंगे, जो सच्चे धर्म्मनीतिज्ञ अपने २ वर्णधर्म्मानुसार क्लासें पड़ रहे हैं, दादाजी जानते हैं कि सांईखेडेके मालगुजार व वहांकी जनता अत्यन्त भीषण, स्वार्थी, जूयेंबाज,मदकची डाकू अपने स्वार्थसे न हटेगा, पर उन्होंने उन लोगाको दण्ड देनेका यत्न कर लोकलज्जा भी रखी और नर्मदा पार हो उज्जैनमें उपस्थित हो नंगा पागल चन्द्रशेखरानन्दद्वारा महाभारत मचवाकर पापियोंके नाशसे पृथ्वी साईखेडेके नमूने द्वारा बोझ भी हलका किया।

संतोंकी रक्षा और दुष्टोंका नाश और तब धर्म्मसंस्थापन अपने आप होगया, हिन्दुभाइयोंका परम कर्तव्य है कि अपने स्वार्थमय घृणित जीवनको सुधार कर मैदानमें आजायें, हम सब भारतके हिन्दुओंके लिये एक मात्र यही मार्ग है कि राजनीति धर्म्मकी छायामें, सत्य असत्यका निर्णय कर धर्मनीतिकी शरण लें, देखकर उसे उन्नत करनेका ध्रुव उपाय करें, इसके विचारका विचार दर्शन कर "कर्म्मवीरकी इज्जत अफ़जाई—धर्मकी आडमें ढोंगियोंका निदर्शन कर उसके अदर्शनमें कुछ सेकिन्ड लीन होकर श्रद्धाका रूप व स्वरूप तोलें कि दिगम्बर अवधूत-ऊर्ध्वरेता-संसारमें कौन त्रिया है ।

महात्माजीको याने गांधीजीको ऐसी हालतमें देखकर साधू संतों और ब्राह्मणोंके प्रति भारतीय हिन्दुओंको परामर्श देता हूं कि इन अधर्म्मी बुद्धिपर कृपा करके ईश्वर उस सच्चिदानन्द निर्विकार धूनीवाले दादा सर्वान्तर्यामी जगन्नियता-जगन्निवास कलियुगी शंकरसे प्रार्थना करो कि इनकी बुद्धिको पवित्र करे और भारतका जन्म सफलताको शीघ्र धारण करे। क्योंकि, ईश्वरने मनुष्यको संसारनाटक रचनेको ही संतान उत्पत्ति करनेके लिये ८४ लक्ष योनियोंमें नेचरल शक्ति दे मर्यादाका योग करनेसे ही सभ्य असभ्यका खेल खिलाया है, वह शक्ति एक यौगिक लीला ही है,जिसका प्रकाश षडैश्वर्य्य संपन्न-बल-वैभव-यश-श्री-ज्ञान-वैराग्यवान् कलियुगी शंकर "धूनीवाले दादा" इस हिन्दुस्थानके एक हिन्दू ब्राह्मण बालक छोटे दादा द्वारा इस रूपमें जरासी कलाकी झलक दिखा सब हिन्दुस्थानियोंको झल झल कर झलारहे हैं, इन ऊर्ध्वरेताओंके "लिंग में" जरा तेल तो लगाकर खड़ा करो, अभी धर्मकी आड़में ढोंगियोंके अड्डेकी पोल खुल जायगी।

राम नाम जपनेवाले जो अछूत भाई गौ मारना,मांस मदिरा खाना छोड़ तो उच्च जाति कहानेवाले हिन्दुओंसे आगे स्वर्ग जा सकते हैं, अब भी राम नाम जपनेवाले भारतभरके ढोंगी अछूत भाई जिस भी दशामें हैं फिर भी दुनियांभरके मतमतान्तरों व पादरियोंसे ऊंचे हैं, उन तर्कशास्त्रियोंसे पहले मुक्ति पाते हैं, हमारी भारतभूमि सर्व- संसारमें वह पवित्र भूमि है, जहां हिन्दूघरमें ही परमेश्वर स्वयं अवतार धारण करता है, उसका प्रमाण आज २५ वर्षसे धूनीवाले दादा उपस्थित हैं, इस गुदड़ीके हीरेको म्लेच्छविद्या जाननेवाले "वीर्य्यपतन" अमर्य्यादिक कर्तव्यवाले क्या जान सकते हैं?

इस लिये भारतभूमिके मनुष्योंको मुक्ति अन्यदेशीय व अन्य-भाषाभाषियों म्लेच्छोंकी अपेक्षा पहले मिलती है, उसीसे दादा २ रटना और उससे नेहालगा—कृष्णलीला—रामलीला—या शंकरतांडवलीला करते हुये शीघ्र मुक्त होजाना।

आज हमारे हिन्दू—मुस्लेईमान—और पादरियोंने हमारे भारतकी जनताकी इतनी मलिनबुद्धि करदी है कि तुम उलटेको सीधा और सीधेको उलटा समझ रहे हो, जैसे—पशुओंका मांस मत खाओ, शराब न पियो और रामकृष्ण नाम जपने लगो, या बापका बाप जगदीशश्वर दादा दादाही चिल्लाते रहो तो तुम सबसे ऊंच हो।

इस लिये तुम्हें ईश्वरके दरबारमें ही प्रार्थना करना चाहिये, ऐसा करनेसे तुम्हें मुक्ति मिलेगी। मुक्तिके लिये ही नरबदापरिक्रमावासी श्रीमान् गौरीशंकर महाराजके चेले धूनीवाले दादा अब फिर नरबदा किनाराही चाहते हैं कि शेष आयु नर्मदा दर्शन करते ही करते अपने जीवनका समय व्यतीत करें, इस लिये दादाजीके प्रेमी सज्जन—सनातनधर्म्मावलम्बी शीघ्र दशनामी अखाड़ेके छे भालों समेत हजारों शैवमतावलम्बीद्वारा रथपर बिठाकर छत्र चमर डुराते शंख झालर बजाते लाकर खराघांट होशंगा-बादपर स्थापित कर अवधूत आश्रम बना दें। सांईखेड़े दरबारके जितने नंगे अवधूत आज दस १२ सालके मस्त हुये उपस्थित हैं व २० वर्षके उनके जो प्रेमी भक्त हैं मैं आप लोगोंको व उन लोगोंको चेतावनी देता हूं कि वृद्ध योगी दादाको उज्जैनमें ही या नरमदा किनारे ही ले आओ, सावधान करता हूं कि कई गुण्डे उस योगीको जाबजा अपने स्वार्थ सिद्ध करनेको रियासतों २ लिये २ फिरते हैं, यह कार्य्य आप-

समें हिन्दू हिन्दुओंमें विरोधाग्नि प्रज्वलित मत करो, क्या अपने आप नर्कका मार्ग साफ करते हो? देखो जगत् पिता ईश्वरकी आज्ञासे जेसी रीति चली आई है उसीपर सबको रहना चाहिये, सबको अपने धर्म-पर चलने, गुरुकी आज्ञा पालनेसे मुक्ति मिलती है, आप लोग मांस-मदिरा-इगलाम-जिना करना छोड़ दो-"तो फिर मुक्ति प्राप्त ही समझिये"।

"अधर्म फैलानेवालोंकी म्लेच्छोंके समान बुद्धि हो गई है, वे अब दूसरोंको भी अपनासा बनानेका प्रयत्न कर रहे हैं, वह देशद्रोही अपने नाशका ही उपाय कर रहे हैं" "फिर कैसी मुक्ति" संसारके यह अमा-नुषिक काम रुक जांय, जिले जिलेंसे या भारतभरके साधुओंकी वुद्धि-योंका गुच्छा जिस नटवरने चमन तैयार किया है उस सुगन्धिके सच्चे गन्धी बनो, तमाम भारतके लोग इस सुगन्धिको साफतौरसे समझलें कि यह अत्याचार अकेले साधुओंमें ही नहीं बल्कि समस्त भारतके भारतीय सम्मिलित हैं, इससे कोई अपरिचित नहीं हैं, यदि सत्यताके साथ इसका इन्तजाम करेंगे तो यह बात इतनी अच्छी होगी कि संसार आपका यश गावेगा, यह मेरी बात हर्ष विषादरहित है, मानना न मानना आप भारतियोंके आधीन हैं।

"श्लोक" यत्कर्म कुर्वतः स्यात्तु, परितोषोऽन्तरात्मनः।
तत्प्रयत्नेन कुर्वीत--विपरीतं तु वर्जयेत् ॥

अर्थ-जिस कर्म्म करनेसे अन्तरात्माको सतोष होता है प्रयत्नपूर्वक वही कर्म्म करना चाहिये, किन्तु उसके विपरीत कोई भी कर्म न करना चाहिये, उस गूढ़ सत्यको जान लेनेपर तू स्वयं अपने लिये सत्यशील याने

सच्चा ही धर्म्म कर्तव्य, ड्यूटि वह शै: है कि जिससे लोगोंमें बराबर तरक्की हो, जिससे बराबरी होती है वह धर्म्म है,यह यक़ीन है, धर्म्मको धर्म इस सबबसे कहा है कि वह लोकको धारण करता है याने समाज झुन्ड--समूहमें लोगोंको बांध लेता है एक दूसरेके बरअक्स-विपरीत--विरुद्ध नहीं होने देता। इस लिये जिसमें लोगोंको कुबूल कर-नेकी ताकत हो वह धर्म्म-कर्तव्य ड्यूटि है, यह यक़ीन विश्वास है, धर्म्मकी तालीम इसलिये दी गई है, कि लोग एक दूसरेकी हिंसा न करें, एक दूसरेको नुक़सान व तकलीफ न पहुँचावें-इसलिये जिससे हिंसा दूर हो, वह धर्म्म-इन्साफ-नीति-सच्ची ड्यूटि है, जहांकी प्रजा जिस राज्यके राजासे अर्थात् जिस राज्यकी प्रजा उसी राजासे यदि अप्रसन्न है तो प्रजाको अवश्य चिल्लाहट द्वारा न्याय करना कराना चाहिये। पुत्र स्त्री और धनसे सच्ची तृप्ती नहीं हो सकती—यदि होती तो अब-तक किसी न किसी योनिमें होही जाती।सच्ची तृप्तिका विषय "है केवल परमात्मा" जिसके मिल जानेपर जीव सदाके लिये तृप्त हो जाता है।

दुःख मनुष्यतत्त्वके विकासका साधन है। सच्चे मनुष्यका जीवन दुःखमें ही खिल उठता है। सोनेका रङ्ग तपाने पर ही चमक उठता है। सर्वत्र परमात्माकी मधुर मनमोहनी मूर्ति देखकर आनन्दमें मग्न हो जाता है। जिसको उसकी मूर्ति सब जगह दीखती है वह तो स्वयं आनन्द स्वरूप ही है। किसी भी अवस्थामें मनको व्यथित मत होने दो। याद रखो—परमात्माके यहां कभी भूल नहीं होती और न उसका कोई विधान दयासे रहित ही होता। परमात्मापर विश्वास रखकर अपनी जीवनडोर उसके चरणोंमें बांध दो, फिर निर्भयता तो तुम्हारे चरणोंकी दासी बन जायगी। बीते हुये की चिन्ता न करो जो अब करना है,

उसे विचारो—और विचारो यही—कि बाकीका सारा जीवन केवल उस परमात्माके ही काममें आवे, धन्य वही है जिसके जीवनका एक २ क्षण अपने प्रियतम प्यारेके मनकी अनुकूलतामें बीतता है। चाहे वह अनुकूलता संयोगमें हो या वियोगमें; स्वर्गमें हो या नर्कमें, मानमें हो या अपमानमें, मुक्तिमें हो या बन्धनमें, सदा अपने हृदयको देखते रहो कहीं उसमें काम-क्रोध—वैर—ईर्षा—घृणा-हिंसा-मान और मदरूपी शत्रु घर न करलें। इनमेंसे जिस किसीको भी देखो, तुरन्त मारकर भगादो। पर देखना बड़ो बारीक नजरसे—सचेत होकर—ये चुपकेसे अन्दर आकर छुप जाते हैं, और मौका देखकर अपना विकराल रूप दिखलाते हैं।

किसीको भी ऊपरके आचरणोंको देखकर उसे पापी मत मानो हो सकता है, कि उसपर मिथ्याही दोषारोपण किया जाता हो और वह उससे अपनेको निर्दोष सिद्ध करनेकी परिस्थितिमें न हो अथवा यह भी संभव है कि उसने किसी परिस्थितिमें पड़कर अनिच्छासे कोई वुरा कर लिया हो,परन्तु उसका अन्तःकरण—तुमसे अधिक पवित्र हो। इसपरसे यह अच्छी तरह जाना जाता है, कि सिद्ध पुरुष-योगी महात्मा—साधू अपने रंगमें इतने चूर होजाते हैं कि जिसको अपने तन बदनकी भी खवर नहीं रहती याने बरहना—नग्न होजाते हैं। इसी तरह हमारे हिन्दुस्थान हिन्दूशास्त्रमें-सनातन धर्ममें "यति धर्म" नंगे रहनेको कहा गया है। परमहंस दीक्षा नग्न अवस्था है। बौद्ध जैनियोंके—क्षुल्लुक—एलक त्यागी क्षपगक—भिक्षु एवं बली—मस्त फकीर नग्न रहते हैं। ईश्वरने आदमीको नग्न पैदा किया है। पहले बहुत अर्से तक दीर्घ काल तक—नंगा ही रहना पड़ता है। वाईबिलमें भी कहा है, कि पहले जमानेमें—हिन्दुस्थानमें आनेके पहले—स्त्री पुरुष नंगे रहते थे। कुदरत प्रकृतिकी भी यही इच्छा है कि हो

सके वहांतक आदमी को अपना जिस्म—शरीर—खुला रखना चाहिये क्योंकि, नंगी उम्र स्वाभाविक खुदादाद ताकत है । इस लिये प्रत्येक—निज वोवरूप हैं । चौरासी लक्ष योनियोंमें मनुष्ययोनि ज्यादा ज्ञानवान है । आदमी खुदाका अंश है । जब वह अपना अंश ईश्वरमे मिलाकर एकरूप हो जाता है, तो फिर उसकी विचार—शक्तिका साम्राज्य जगत् पर होनेमें क्या शंका है ? विचार-शक्ति अत्यन्त बलशालिनी है । यह विद्या सीखनेसे ही होती है ।

"कर्मवीर समाचार पत्रने" व प्रतापने धर्मकी आड़में ढोंगियोंके अड्डा व पत्रोंने इस योगीको व दरबारके नये सिख्खड़ नंगोंकी जो २ इज्जत अफजाइयां की हैं और यह भी संभव है कि सारे देशवासी दादाजीको महात्मा मानते हैं, उसके साथ व्यंग—कटाक्ष-निंदा अत्याचार करना मानो सारे देशके वर्ण धर्माश्रमोंके ऊपर पानी फेरना—साथ उनके हिन्दू धर्मके साथ अत्याचार किया जा रहा है । उनकी दृष्टिमें ऐसा काम मानवताके प्रति—ईश्वरके प्रति-अपराध करना है । यह बात सबकी आत्माके विरुद्ध होगी—दुःखी सारे दु:खियों गरीबोंकी सहायता करो "धर्म हमारा प्राण है"—विदेशी हमारा धर्म और देश छीनें—हमें इनसे अपने धर्म और देशकी रक्षाके लिये प्राणपणसे कटिबद्ध होजाना चाहिये हमें अपनी आत्माकी तलवार इस राक्षसी भक्षकके सामने उठानी ही चाहिये, मनुष्य बनो-गुलाम नहीं जिन्दा बनो ! मुर्दे नहीं—दुष्टोंके लिये पैसा पैदा करनेकी धर्मरूप दादाको मशीन ही बनाते रहो—झोंपड़ीमें रहना अच्छा है किसीके गुलाम अत्याचार पूर्ण शक्तिके गुलाम बन सूअर बने रहना किस कामका ? सर्वशक्तिमानके शासनकी इस पृथ्वीपर स्थापना करो । विपत्तिका पहाड़ हमारे सामने है । तुम हम सरकारके श‍

नहीं परन्तु जहां सरकार और परमात्माके फरमानेमें फर्क दिखाई दे वहां सरकारके बजाय परमात्माकी आज्ञा पालन करनेकी याने वण धर्म वर्ण आश्रम क्लासें पढ़नेकी बातें घर २ पहुँचा दो—भारतके नरेशोंसे पूछो भारतके योगी आजाद स्वतंत्र हैं या परतंत्र हैं। अंग्रेजोंकी सत्तामें साधुयो-गियोंके धर्म पर हस्त क्षेप क्यों होता है?हिन्दुओ! विचारो शीघ्रता करो।

"गजल"

जबसे देखी, झलक तुम्हारी, हुआ है यह दिल दीवाना।
कई जन्म बीत गये योंहीं,कबतक दिलको बहलाना ॥१॥
बालापनकी प्रीत ददाजी, भूल कहीं एजी मत जाना।
तुम्हरे कारण दादाजी मैंने, लिया फकीरी का बाना ॥२॥
तनमें खाक रमाके मनको, किया है सबसे बैगांना।
सब रौनक हैं तुम्हरे जातकी, वरना है जग वीराना ॥३॥
हम मरते हैं तुम्हरी जात पर, शमापै जैसे परवाना।
इस दादा इश्कका तुम्हरे, रहेगा जगमें अफसाना ॥४॥
जबसे तेरी हुई मुहब्बत, और किसीको नहीं जाना।
जबसे देखी झलक तुम्हारी, हुआ है ये दिल दीवाना ॥५॥

अय भारत वर्षके न्यायकर्ता! सांईखेडेमें दादाजी धूनीवाले स्वामी कृष्णानन्दजी योगीश्वर अवधूतके दर्शनोंको सैंकडों यात्री आते हैं। उसी प्रकार मैं भी आज दस बारह वर्षोंसे उनका ही शिष्य सेवक बन आता जाता रहता हूं। निशानोंके चबूतरे पर दादाजी महाराजके ही सन्मुख उन्हींकी आज्ञासे बैठा रहता हूं, गढ़ीके माल गुजार लोग मुझपर अनेक तर्क कर-मार पीट गाली गलोज कर भगा देते हैं। दादा दरबारके

हुए एक साधुओंके साथ पोलिसके द्वारा ऐसी ऐसी फौश गुफ्तगूए पेश आते हैं कि सुना नहीं जाता जो जमाने हालके मुवाफिक खानदानी आदमियोंके झुण्ड कि जो जर-जमीन जोरू छोड़ २ कर अपने २ धर्म्मोंके लकीरके फकीर बने इस दादा योगीकी शरणमें औकात बसर कर रहे हैं। अपने २ धर्मके मुवाफिक चलनेवाले साधुओंको गैर मजहब वाला या दूसरा कोई भी क्यों दखल जमाता है। "जब कि गवर्मेन्ट सरकार किसी के मजहबमें दखल ही नहीं देनेका वायदा करता है। या हरएक मजहबवालोंसे वायदा है कि हम किसीके मजहबमें दखल नहीं देंगे" और " नहीं देते हैं "।

हम हिन्दोस्थानके हिन्दुओंके धर्म पर आघात पहुंचाना जोर जमाना जूते पहरे साधुओंकी आसनों पर जबरदस्ती बैठना और अपनी हिन्दुओंकी डयूटिके खिलाफ फकीरोंको आवाजे तवाजे-तर्के-नसीहतें-ताड़ना बूँटकी ठोकरें मारना-तिरस्कार करना-विना सोचे विचारे सत्यको असत्य और असत्यको सत्य कर लेना लोगोंने यहांके इखत्यार कर रखा है। आखिर हम फकीरोंको हिन्दुस्थानियोंको अंग्रेजोंके राज्यमें रहना भी होगा या गौभक्षकोंके डरसे सब साधुओंको किसी टापू या जलेमें ही सड़ना पडेगा। हम लोगोंके समझनेमें ही नहीं आता कि, चारों दिशा अपनी मानते हुये अंग्रेजोंके राज्यमें किस प्रकार रहें यही बातें काशीसे और बंबईसे लार्ड चेम्सफोर्ड व लार्ड रीडिंगको भी इस सूअर कुत्तने लिखा था तो इस घुटी घुटाई चांद पर अंग्रेजी जूता तड़ाकसे यही मिला कि मिस्टर चन्द्रशेखरानन्द हम तुम्हारी बातोंका क्या उत्तर दें। आप भारतके न्यायाधीश—भारतपर स्वतंत्राधीश हैं जो न्यायमें आवे

माकूल इन्तजाम कर संसारभरमें स्मारक-चिन्ह जिलाधीशों द्वारा स्थिर कर हिन्दूकानून हिन्दुस्थानके हिन्दुओंके लिये शीघ्र तैयार करो। प्रजारूपी बेटेका बाप बादशाह-राजा-गुरु-मालिक मास्टर-आपका बाप दादा होता है। वही ईश्वरकी बनाई प्रजा दुनियांको छोडकर आजाद होनेके लिये साधू फकीर होजाता है। उस पर इस तरहकी बे इन्साफियां होती हैं। इन बातोंके समझते जानते हुये अब मैं थोडी देरके लिये भी सहन नहीं कर सकता। जो गैर मजहबवाला गैर मजहबवाले साधू फकीरोंके मजहबों पर फर्क डाल उसके दिलको दुखाते हैं, उनसे बहुत जलदी अपनेको इस असहनीय स्थितिसे आजाद कर लेना चाहता हूं। इस तरहसे जीते रहना-मनुष्यका खासकर-ईश्वरकी सत्ता पर आरूढ़ साधु संतोंका जीना व्यर्थ है। जी नहीं सकता और न रहूँगा-इस लिये मैं बतौर मजहबके लिख रहा हूं। 'मान न मान मैं तेरा महमान' अपने आप मुलजिम करार हो कहता हूं कि यह अमानुषिक काम रुक जाय। इस संसारी नाटकका रचैता सबकी रक्षा करता है जो एक्टर जैसा नाच नाच कर प्रसन्न करता है वैसा ही मजा लूटता है। कोई भी धर्म्मात्मा, कोई भी पापी, कोई भी बगुला भक्त, कोई भी भोला भट्ट, कोई वेषधारी कोई व्यभिचारी, कोई जोगी, कोई डोल फाल होते हैं-अनेक उच्च होने पर भी नीच होजाते हैं। क्या धर्म्मी क्या अधर्म्मी और ऊंचनीचका भेद सर्व जीवधारी प्राणियोंमें नहीं है, परमेश्वरने इस सृष्टिको जिस चातुरीयतासे रचना की है उसकी ओर दृष्टि आकृष्ट करना ठीक होगा। परमात्माने ८४ लाख योनियोंमें मनुष्यको सर्व श्रेष्ठ बनाया है। जिस प्रकार मनुष्योंमें ऊंच नीचका भेद है, उसी प्रकार समस्त पशु पक्षी और जलजन्तुओंमें भी विभेद विद्यमान है। मनुष्योंमें कोई राजा रंक

कोई उच्च कुल सम्मत पंडित, कोई नीच ढेड़ भंगी, कोई दयावान दातार और कोई जीवोंकी रक्षा करनेवाला, कोई अधर्मी, पापी और कोई जीवोंको मारकर खानेवाले हैं। कोई मन्दिर मसजिद या गिरजोंमें धर्मके नाम पर निराश्रय जीवोंका वध करते हैं, तो कोई अपने धर्म्माचार्य्य और पीर पैगम्बरोंके उपदेशानुसार निर्दोष जीवोंको कत्ल होनेसे बचाते हैं। कोई अधर्मी अपने पैगम्बरोंके आदेशका निरादर करके पशु पक्षियोंका नाश करते हैं। उनके हाड चाम और रक्त मिली हुई चीजें खाते हैं और अपने लिये नर्कके सामान करते हैं। प्रत्येक जातिके पैगम्बर धर्म्माचार्य्योंका उपदेश पशु पक्षियोंकी हिंसाके निषेधके रूपमें है तो भी उनके अनुयायी कत्ल करने कराने पर दृढ़ होकर जमे हुये हैं।

इसी प्रकार कोई अनेक जीवोंकी हिंसा करता कराता है, तो कोई अनेक जीवोंको कातिलोंसे बचाता है। एवं बचानेका प्रयत्न करता है। कोई इन कार्य्योंमें अपने उत्तम समय और धनका सदुपयोग करता है। इसलिये देशभाइयो चेतो! अधर्मको रोको!! अन्याय व धोखेसे बचो!!! सांईखेड़ेकी प्रजा व गढ़ीके मालगुजारोंकी दुराशा पर दादाजीके प्रस्थानके बाबत आशाका प्रबन्ध मध्यभारतमें सांईखेडा नरसिंगपुर जिलेमें एक छोटासा ग्राम है। जो गाडरवारा रेलवे स्टेशनसे १६ मील की दूरीपर पक्की सडकके किनारे पर है। जहां सदा मोटर तांगे चला करते हैं। कारण वहांपर एक योगीश्वर श्री १०८ श्रीकृष्णानन्द केशवानन्द ब्रजभूषणानन्द स्वामी श्रीदादाजी धूनीवालेका आज २५ वर्षसे वर्तमान निवास स्थान उपस्थित था (इन योगीश्वरको स्वार्थी अज्ञान-नयेजितेन्द्रिय-दण्डी भास्करतीर्थ और पंडित बैजनाथ उर्फ ऊंट

शास्त्री देवरी जिला सागरके बुद्धिवान गुण्डोंने "आसनच्युत कर" सरकारी कर्मचारियोंसे मिलकर सांईखेडेसे नरसिंगपुर लेगये) अब कई रियासतोंसे फिराते २ उज्जैनसे भी देवास.ले गये। दादाजी महाराज भारी त्यागी और सिद्धमहापुरुष गिने जाते हैं । आपकी शक्तिका अभीतक किसीको ठीक २ पता नहीं लग सका (आप गौरीशंकर महाराज ब्रह्मचारी नर्मदापरिक्रमावासीके शिष्य हैं, गुरुमहाराजकी आपपर पूर्ण कृपा थी आपके दर्शनमात्रहीसे दर्शकोंकी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं, आपकी वृत्ति परमहंस है और सदैव दिगम्बर रहते हैं । सारे भारतवर्षसे सहस्रों भक्त अपनी २ मनोकामनायें लेकर दादाजीके पास दर्शनोंको आते हैं । यात्रियों तथा भक्त मंडलीका श्रीदादाजी पर अटल श्रद्धा और पूर्ण विश्वास है-यहांतक कि श्रीदादाजी ब्रह्मविद्याके साक्षात् मूर्ति और शंकरका अवतार माने जाते हैं । श्रीदादाजीकी अलौकिकता जहांतक देखने वा सुननेमें आई है-दादाजीके पाससे विमुखमनोरथ कोई नहीं गया । आपका यौगिक बल और आत्मशक्ति इतनी प्रबल है कि हिन्दुस्थानके हर हिस्सेसे धनी व निधनी राजा व फ़क़ीर-विद्वान व अविद्वान तथा साधारण पुरुष व हरतरहके सरकारी मुलाज़मान व हरमतके व हर पेशेके मनुष्य आकर दर्शन लाभ उठाते हैं। सांईखेड़में पहले यात्रियोंके ठहरनेका कोई प्रबन्ध न था, कई महानुभावों और सनातन धर्म्मावलम्बियोंकी उदारतासे रायपूरके गोपीकृष्ण नत्थाणीने साठ हज़ारकी एक धर्मशाला व सौसवासौ रुपये रोज़का अन्नक्षेत्र कायम किया और जबलपूरके गुललिया सेठने एक धर्मशाला तीस पैंतीस हज़ारकी और दस ग्यारह साधुओंका अन्नक्षेत्र कायम किया था, वहांके राक्षसोंकी राक्षसी चालोंसे

स्थान छोड़ उज्जैन आगये थे । अव उज्जैनसे भी वे राक्षस उस वृद्ध योगीको देवास लेगये ।

इतना सव होते हुये भी शोकका विपय है कि "ऐसे परमपूज्य त्यागी महात्मा" नई रोशनीके समालोचक गणोंकी दृष्टिमें अधर्म्मकी आड़में "ढोंगियोंका अड्डा व सरदार" समझा जाता है, इसका कारण क्या है ? आज आपको प्रगट करदेना अपना कर्तव्य समझता हूं । श्रीदादाजी महाराजको रेवाके तट सिरसिरी सन्दूक गांवसे सांईखेडाके पुराने मालगुज़ार व नये या उस गांवके जो अपनेको ब्राह्मण मानते हैं सांईखेडामें ले आये और दादाजी इन्हींकी गढ़ीमें आठों पहर एक विशाल धूनी रमाये थे । धूनी आपके सन्मुख जलती रहती थी-विराजमान है—यह मालगुज़ार सांईखेड़के दादाजीको आमदनीका ज़रिया वनारहे थे, यात्रियोंपर हरकिस्मका अन्याय व अत्याचार करते कराते थे यहांपर दादाजीको २९ वर्ष होगये थे । बहुत अर्सेसे रह रहे हैं इसलिये उन मालगुजारोंने बुराइयोंके ऐसे ढंग रच रखे थे कि हज़ार प्रयत्न करनेपर भी वहांसे बुराइयां दूर नहीं हो सकती थीं-यहांतक कि दादाजीके खास चलोंको साधुओंको वहां वैठना भी दुश्वार है । गढ़ीवालोंने चार लुच्चे पंडे और २२ वदमाश लडके मुक़र्रर कर रखे थे, वहां इसतरह मौजूद रहते थे कि जिनको वेचारे यात्रीगण नहीं पहचान सकते और वे धोखेमें आ जाते हैं, उनको वहां रहनेमें अनेक प्रकारकी तकलीफें देते थे और मारनेपर हरवक्त आमादा रहते थे और कहते हैं कि हमारी ज़मीनमें मत वैठो जो उनको यात्रियोंसे रुपया पैसा-मिठाई-कम्मल इत्यादि लेकर देते थे वह उनकी जगहमें ठहर सकता था, नहीं तो वे हरएक तरहका लांछन व हरतरहकी तकलीफ देकर भगा देते थे। इन डाकू लूटने वालोंकी वजहसे उनके शिष्योंको तकलीफ

और यात्रियोंका प्रसादतक श्रीदादाजीके पास पहुँचना दुश्वार होजाता था, दादाज़ीका त्याग तो दिगन्तमें मशहूर है ही परन्तु वहांके गृहस्थ शिवनिर्माल्यको भी हज़म करजाते थे, साधूओंके हलक़का कौल निकाल खाजाते थे।

इसमें संदेह नहीं कि दूर २ दशोंसे जो यात्री श्रद्धापूर्व्वक श्रीदादाजीके दशनोंको आते थे व आते हैं उनको आजकल भी ऐसीही अनेक कठिनाइयां और कष्ट उठाना पड़ते हैं, उस समय सांईखेडेकी भक्त मंडली थी। अब आवारा गुण्डे बहुत एकत्र होगये हैं इसलिये उस वृद्ध योगीको जाबजा लिये २ फिरते हैं। सांईखेडेमें कई लोग पुज़ारी और पन्डा बन गये थे अब उनके दलमें ऐसे कई एक होगये हैं, यात्रियों—साधुओं, स्त्रियोंको यही लोग इतना तंग करते थे—कि श्रीदादाजीकी सेवामें जो प्रसाद रुपया कपड़ा कम्मल इत्यादि यात्रीलोग प्रस्तुत करते थे, वह बीचमें ही चील झपट्टा मार कर ले भागते थे, दादाजीके सामने जो जो हमेशा एक विशाल धूनी जला करती थी और २४ घंटा यज्ञ हवन हुआ करता था ऐसी महान तेजस्वी धूनीमें यात्रियोंका सामान पडतेही यात्रीगण अपना मनोरथ सफल समझते हैं "और बात भी यह सत्य है"।

उस प्रचण्ड धूनीमें साकल्य, नारियल, घी, मिठाई, कम्मल-वस्त्र आदि जो हव्यरूपमें डाले जाते थे उनका पूर्ण रूपसे हवन होना इन दुष्ट पंडों और २२ लडकोंकी वजहसे मुश्किल था, क्योंकि यह लोग ऐसी पवित्र और प्रचंड धूनीको अपवित्र करनेको मारीच और सुबाहूसे तत्पर रहते थे और धूनीको तितर बितर कर उसमेंसे जलती हुई लकड़ी-अंगारे—कोई भी सामग्री-मय हव्यके धूनीमें पड़ी हुई वस्तु अग्निके मुखमेंसे उठा

ले जाते थे,धूनीको बुझा देनेका उद्योग करना उन मूर्खोंको मादककी पिनक में कुछ भी लज्जा नहीं करते थे, यह सब सामान मालगुज़ारोंके घर पहुँच वहांसे फिर उनके लगेहुये दुकानदारोंके यहां बेंच दिया जाता था, और उन लोगोंका कहना है कि इन सब वस्तुओंपर हमारा ही हक़ है क्योंकि दादाजी हमारे यहां विराजे हैं, चेले कोई नहीं हैं, सब जबरदस्ती "नंगे" मालपूये खाने लड्डूखानेको बनगये हैं, दादा किसीको नहीं बनाता— इस कहनेसे पोलिस सबको सताती है, और एक वक्तका प्रसाद व हवन किया हुआ सामान मालगुज़ारोंके इन अत्याचारोंके कारण बार २ हव्य रूपमें डाला जाता था, व उठा लिया जाता था ।

दादाजीके भेंट रूपमें रुपया पैसा मिठाई कम्मल व हरक़िस्मके हरक़ीमतके वस्त्र यात्री लोग दूर २ से लाकर पेश करते थे । यह सामान दबाव व चालांकीसे इन्ही बदमाशोंके ज़रिये मालगुजार लोग अपनी करारी आमदनी करते थे इसके अलावा सौ दोसौ पान्सौ रुपयातक रोजाना दबावके साथ अन्याय कर:यात्रियोंसे वसूल करते थे, जो मालगुजारोंके मदक व जूआ और ऐसे ही बदफेलोंमें सर्फ होता था । ऐसे:शुभ स्थानमें उपरोक्त अत्याचारोंके देखते हुए सभी धर्म्मावलम्बियोंका परमकर्तव्य है कि उन अत्याचारोंको मिटानेकी कोशिश करें और इसका एकही मात्र उपाय यही है,कि दादाको सांईखेड़ा छोड़ना पड़ा।देवाससे उठाकर एक ऐसे स्थानमें विराजमान करें, कि जहां रेवातट हो और राजसत्ताका भी खास अड्डा हो, इसके सिवाय कतिपय नामधारी बाबालोग भी ऐसे इकट्टे हुए हैं, कि जिनका हाल भी लिखना उचित नहीं है । यह जाल तभी दूर हो सकता है, जब कि पबलिक व दादाभक्त व दशनामी अखाडे दादाजीको नर्मदा किनारे अन्य-

स्थानपर स्थापित करें, क्योंकि गांवका गांव व दूकानदार व पुरानेमाल-गुजारोंकी करतूतोंका खास व्यापार दरबारमें अब भी वैसाही चलरहा है जैसा कि सांईखेडेमें था। इसीलिये उज्जैनकी हिन्दूप्रजा व हनुमानबागका मालिक मुस्लेईमानने भी उस बली अल्लाहकी इज्जत अफजाई खूब ही की कि जगहपर ठहरने न दियालाया था क्या सिकन्दर और लेगया क्या—थे दोनों हाथ खाली बाहरसे कफनसे निकले "देवासमें हैं जरूर." परन्तु दादाजीका कहना है, कि होशङ्गाबाद खर्राघाट रहेंगे इसलिये भारतके प्रमी भारतियोंको नर्मदा किनारे आंवलीघांट—बुधनीघांट—होशङ्गाबाद खर्राघांटका शीघ्र इन्तजाम करें, कि अवधूत आश्रम—गौशाला-ब्रह्मचर्य्याश्रम—गायत्री मंदिर शीघ्र कायमकर नासिकका चढ़ाव कायमकर दें, भारतका उद्धार जीर्णोद्धार है। यह सारे भारतवर्षको संदेश, धर्म्मका संदेश; वीरताका संदेश था। संसार क्षेत्रमें उतरकर विघ्न बाधाओंसे युद्ध-कर और उनपर विजय प्राप्तकरनेका सन्देश है। अपने धर्म और संस्कार-के अनुसार कर्म्म करके ही मनुष्य पूर्णता लाभ कर सकते हैं इसलिये धर्म्मनीतिकी शरण लेनाही पड़ेगा, कर्म्मको छोड़कर और मिथ्या त्याग-का ढोंग रचकर कोई मनुष्य त्यागी और संन्यासी नहीं बन सकता।

लेकिन आज हमारी समस्त जाति संसारसे रूठी हुई हैं, परलोक पर ध्यान लगाय केवल त्याग और वैराग्यमें रत हैं। मेरे अनुभव-से यह वैराग्य या त्याग नहीं है, यह कपट और पाखण्ड ही है। हम कायर हैं, कापुरुष हैं, नामर्द हैं, हम कोई काम करना नहीं चाहते, इस-लिये हम अपनी इस नामर्दी अपनी इस क्लीवताको त्याग और संन्यास, दया और अहिंसाके आवरणोंसे छिपाना चाहते हैं, "ऐसे समयमें तो सच्ची क्रांतीकी जरूरत है" हम प्रकृतिके अटल नियमोंके विरुद्ध

चलना चाहते हैं और चल रहे हैं, फलतः हमारे गृह—गृहिणीके या विनाशका दोनोंमें कौनसा संशय हो सकता है? क्योंकि ज्ञानवान ही मनुष्य अपने धर्मके अनुसार कार्य करता है। (आजकलके नई रोश-नीके नवयुवकगण माता-पिता गुरुको भी तिरस्कार कर धर्मनीतिको छोड़ चुके हैं, फिर साधु संत फकीरके वचन और ईश्वरकी आज्ञा कैसे पा सकते हैं।) समस्त प्राणिमात्र प्रकृतिके अनुसार चलनेके लिये बाध्य हैं, तब निग्रह (निरोध नियंत्रण या प्रतिबन्ध) से क्या हो सकता है। देखो गीता अ० ३ श्लोक ४—५—६—३३। परन्तु आज हमारे यहांका बच्चा बच्चा भी त्याग, वैराग्य और संन्यासका स्वप्न देख रहा है, इस समय हमारा आदर्श यही है, कि मातापिताके होते हुये भी चोटी मुंड़ाकर साफकर चाहे जिसके हाथका भोजनकर सन्ध्या गायत्रीको तिलांजली दे। स्त्रियोंके गुलाम बन स्त्रियोंद्वारा स्वराज्यपर अधिकार कर रहे हैं "धिक्कार है धिक्कार है हिन्दू जनता !" "हतभाग्य हिन्दूजाति तेरा पूर्व दर्शन है कहां? वह शीलशुद्धाचार देख अब क्या रहा है" यहां—"नीनट्टक कौपीन-को, अरु भाजी बिन लौन। तुलसी रघुवर उर बसे, इन्द्र बापुरो कौन॥" हम लोग भवसागर—(स्वराज्य)से पार उतरनेकी धुनमें मग्न हैं हम वस्तुतः भवसागर पार उतररहे हैं, या डूब रहे हैं, यह तो ईश्वरही जाने क्या बगैर किसी आवश्यकताके मैं इस संसारमें निर्माण करदिया गया? नहीं, तब मैं दुःखी और उदास क्यों होऊं ! संसारमें स्वानन्द साम्राज्यकी वृद्धि एवं महत्कार्य्य करनेके लिये ही भेजा गया हूं ऐसी दृढ श्रद्धा रखनी चाहिये और यही धर्मकी जीतनेकी श्रेष्ठ कुन्जी है भी। जैसे मध्य भारतमें अर्थात् होशङ्गाबाद दीनहीन गौड़वाने देशमें वीर क्षत्रियोंने महासभाकर अपनी वीरता दिखाई उसी प्रकार भारतके ७६—५६ लाख

साधू व धर्म्मनीतिके चलनेवाले वर्ण धर्म्म वर्ण आश्रमी एकत्र हो विचार करें, कि कलियुगमें दर्शनमात्रसे पापको नाशकरनेवाली "मेकल-कन्या नर्मदा" के दर्शन–स्पर्शसे नानाक्लेश दूर होते हैं, तो नासिक चढ़ाव नर्मदा किनारे शहर बसा दीनदुःखियोंका दुःख दूर करें, भारतके मन्दिरोंका जीर्णोद्धार करें, अवधूत आश्रम कायम करें, गौशाला–ब्रह्म-र्य्याश्रम स्थापित करें, गायत्री मन्त्र–गायत्रीअनुष्ठान नर्मदा किनारे पञ्चगौड़ पंचद्राविड़ ब्रह्मचर्य्यसे भजनकर और अब भी ब्रह्मचारी कर्म-काण्डी नर्मदाकिनारे ही पायेजाते हैं, नर्मदा किनारे धर्मोपदेशस्थान अन्नक्षेत्र परिक्रमा वासियोंके लिये माकूल प्रबन्ध भारतकी जनताको शीघ्र कर कक्षायें नियतकर धर्म कार्य्य शीघ्र आरम्भ करदें, कारण धर्म बहुत ही क्षीण दशाको प्राप्त हो रहा है, होशङ्गाबाद गया, पबलिककी मीटिंगकी सांईखेड़ेवाले दादाजी महाराजको उठालानेका रिजूलेशन पास सब उप-, स्थित सज्जनोंने किया, व्यापारी पेशावाले तो श्रद्धालु होना ही चाहिये क्योंकि तीर्थवासियोंको हर पदार्थ संग्रहका, ज्यादा समूह बढ़नेके प्रबन्धसे ादा बिक्री होगा। परन्तु दादादरबारके नई रोशनीके जितेन्द्रिय नंगे अवधूत उस वृद्ध योगीके साथ रहते हुये भी नये चप्पलकी चमक-दमकमें चका-चौंध हो चपल–चपला–विद्याके सार्टीफिकेट लिये कमिश्नर होश-ङ्गाबादके "ज़ियेखानसे लजाय" कर वह नंगे जितेन्द्रिय दिगम्बर अवधूत नर्मदावासी वृद्धयोगीको इधर उधर लिये २ फिरते हैं, सांईखेड़ा भी छुड़ाया और मुझसे होशङ्गाबाद खंर्राघांट–बुधनीघांट–आंवलीघांटका निश्चय किया, सो स्वार्थी डरे हुये अवधूत गुण्डे उस योगीको उज्जैनसे भी देवास ले गये।

उन गुण्डों बदमाशोंसे छीन लाकर उस शंकररूप वृद्धयोगीको नर्मदा किनारे रख पंचगौड पंचद्राविड ब्राह्मणोंकी निगरानीमें रख खास दिग-म्बर अवधूतकी सेवा सुश्रूषा करना बड़ा भारी खास श्रद्धाका परिचय है। फिर क्या उसके स्वरूपमें ही रूप बनेसे होरहे हैं। इसीको असमंजस कह सकते हैं।

पडाहूँ असमञ्जसमें, फसाहूँ शोकसागरमें ।
पकडकर हाथ मेरेको, उतारोगे तो मैं जानूँ ॥
नंगे सोवो पडे कब तक, जगत्‌के मोहमायामें ।
इस तुम छोड कलकत्ते, सिधारोगे तो मैं जानूं ॥
तुम्हारा नाम विश्वंभर, हूँ मैं भी विश्वके अन्दर ।
निवाहो नाम अपनेको, सँभालोगे तो क्या होगा ॥

आज भारतके ७६–५६ लाख साधुओंके जीवनपर बहुत तरहकी शङ्कायें और अनेक प्रकारकी आलोचनायें की जा सकती हैं, बहुत तरहसे तर्क-वितर्क किये जा सकते हैं। परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि भग-वानका प्रधान तम और सर्व प्रथम आदेश यही था कि "रजवीर्य्य" की शुद्धता "कि योनिमें लिंग" कम करो। ब्रह्मचर्य्यपालन न करनेसे पुरुषार्थ हीन बन स्त्रियोंको आगेकर स्त्रियोंद्वारा मूंछ मुंडा स्त्री बन स्व-राज्य २ चिल्ला जेलोंमें भरती या अकालमृत्युके ग्रास बन रहे हैं। यदि स्त्रियोंको आगे किया है तो शंकरकी तरह चारों खाने चित्त पडे रहो तो अपने आपही शक्ति लयमें लय होजावेगी, मालूम होता है कि भारतीय बुद्धिमान् राजनितिज्ञ स्वराज्यी "रजवीर्य्यकी" शंकरता और वर्णसंक-रताके नाश करनेपर पूर्ण प्रकारसे दत्तचित्त हो यवन म्लेच्छोंके सदृश तीव्र "बीज" के रोपण बन रहे हैं या होना चाहते हैं कि भारतसे वर्ण

धर्म वर्ण आश्रमकी कोई आवश्यकता ही न रहे, वाहरे वीर हिन्दू सनातनियो ! तुम्हारी बुद्धियोंको धन्य है और भारतकी महिलाक्षेत्रोंको भी धन्य है, कि चाहे जैसा बीज ग्रहण कर अवधूत अवधूतनीयोंका परिचय दूरदेशवासियों सरीखा करनेपर उतारू हो रहे हैं, कुछ दिनोंमें रहा करा सबही एक रस हुआ जाता है, चेतो—चेतो—चेतो—शिव !

कवित्त ।

पंडित वही हैं जो सभामें पक्षपात हीन, भाखें वेदशास्त्र लोक रीति नीति ज्ञानीमें । पंचभी वही हैं जो करें न परपंच अरु, ठीक ठहरावैं सदा सत्य मनमानीमें ॥ सभ्य भी वही हैं जो असभ्यता न राखैं, नीति न्याय निरधारें गुन दोषकी कहानीमें ॥ तीनोंते विहीन जो हैं निंदक लवार वे तो, डूबिमरें उल्लूचट चिल्लूभर पानीमें ॥

मनुष्यको स्वयकी हिम्मत तथा स्वयंकी आत्माके बलपर दृढ़ विश्वास हो उसीकी धर्म्मपर सारी निष्ठा होती है । इसके विपरीत बुद्धिसे द्रव्य संबन्धी भारी नुकसान भोगना पड़ेगा,मेरा मार्ग बताता हूं । विचारसे ऐसे कृत्योंमें सद्गुणोंका उपयोग करनेसे अमर कीर्ति प्राप्त होती है। इससे स्वदेश व परदेशका कल्याण होता है ।

विद्वानोंका कथन है, कि सत्य विचारोंके दर्शानेसे दुनियाको बहुत फायदा होता है और ज्ञानी सत्यवादी न्यायी-दयाल सहनशीलता प्राप्त होती है ऐसे सद्गुणोंसे मनुष्योंपर भारी असर पड़ता है ऐसा पुरुष ही ईश्वरकी पंक्तिमें गिना जाता है, राम रहीम, रामनाम ही सत्य है ।

जिस राज्यमें न्याय नहीं होता वह थोड़े ही दिनोंमें अंधा धुंधीमें पड़ जाता है, जिसकी माता सद्गुणी होती है उसका पुत्र भी सद्गुणी होता है । उसे सब सद्गुणी जन चाहते हैं, बालकपनमें लड़का जिस

सुहबतमें बैठता है वह उसी गुणका गुणग्राही होकर बन जाता है। प्राचीन अवाचीन कालके महान पुरुषोंके तमाम कृत्य संपादन करी हुई कीर्ति-देखादेखी कीर्ति प्राप्त करो, उत्साह होता है। इस रीतिसे महान पुरुषोंका कृत्य नमूना लेकर बहुतसे पुरुष योद्धारूप; राज्यकारभारीरूप, सुभाषित भाषण कर्तारूप, कविरूप और चित्रकाररूप आदि हुनरिगुणी खुदका नाम अमर करगये और इन लोगोंने देशका कल्याण किया, यह बातें इतिहाससे जानी जाती हैं।

" कमी नहीं है तरकशमें तीरोंकी "

जो साधन करनेवाला साधू संसारी किसी भी पदार्थको अपना माने वह साधू ही नहीं, भारतवर्षके साधुओंको एकत्रित कर वैदिक धर्म निर्णय करो, जो अवैदिक साबित हो उनको मुड़वाकर—हेमाद्री स्नान कराकर शुद्ध करलो-फिर गृहस्थ बनालो (कांचन कामिनीका नाम संसार, इन दोनोंके त्यागका नाम त्याग) और कोई काम ऐसा नियत करो कि जितने साधू या आवारा फिरनेवाले हों सब एक श्रेणी अपनेको समझ शादी व्याह-खान पान—धन्दोंमें लगे रहें, केवल संसारमें तीर्थोंके किनारे पर्णकुटियोंमें रहनेवाले त्यागी दिखे, जिनको अपने रामसे नाता है और काम है न उनको फल अहारकी आवश्यकता है, न शेर तेन्दुयेका ही डर है। तो फिर रबड़ी—मलाई—मालपूये—तस्मै—गांजा—सुलफा या जमीनोंपर अधिकार की क्या ही आवश्यकता है? फौरन राजा राम-सिंग जयपूरकी तरह—जयपूरसे, काशीसे, उज्जैनसे पंडितोंको बुलाकर पंडितोंकी एक कांग्रेस कर-भारतभरके साधू-मंदिरोंको पबलिक अपने हाथमें प्रथम करे, इन्तजाम इसके दरपरदे कर सकते हो, अर्थात् वैदिक धर्मका पुनरुद्धार जीवित कर सक्ते हो, जो सदैव काम भविष्यका भी परिचय दे

सकता है "शंकराचार्य्यके दिग्विजयको मत भूलो" हिन्दुसनातनियों-ब्राह्मणोंका क्या २ धर्म कर्तव्य है ?

तमाम भारतके भारतियोंको जाहिर करता हूं खासकर अंग्रेज़ी सत्तावाले शहर बंबई-कलकत्ता-मद्रास-रंगूनके हिन्दुस्थानी—सनातन धर्म्मावलम्बी वर्णआश्रमी ब्राह्मण—क्षत्री—वैश्य शूद्र जो अपनेको हिन्दू माननेका दावा व किसी भी मतका अभिमान रखते हों चाहे वह हिन्दू हों चाहे मुस्लेईमान हों, चाहे जैन हों चाहे पार्सी हों, चाहे अंग्रेज हों चाहे कोई भी सद्गृहस्थ बालबच्चोंवाला पुरुष हो वह इस वर्तमान युगकी वर्तमान दशा जो वर्तमान हो रही है गौर करें और अपने आपको बहुत जल्द संभालें—गूलरके कीड़े न बनें।

"भारतके प्रत्येक मतोंको चेलेञ्ज" "व तीव्र प्रतिवादपर तीव्र प्रतिवाद" इस भारत भूमि अथवा पृथ्वीपर ८४ लक्षयोनियोंमें मनुष्य-जाति श्रेष्ठ गिनी जाती है, यहांतक कि उस जातिके नामसे चारों तरफ़ समुद्रसे घिरा हुआ टापू-जम्बूद्वीप-हिन्दोस्थान-भारत-आर्य्यावर्त देश जो इन्डिया वर्तमान है उसमें चार युग अर्थात् गणित ज्योतिषशास्त्र "प्राचीन-कालकी समर्थता" घड़ीपल इत्यादिकसे योग क्रिया, वैद्यक क्रियासे संसारमें मनुष्यमात्रपर २१६०० स्वांसे २४ घंटे दिनरात मानकर अपने समयको बेकार "निरर्थक" न जाने पावे, उसको पुरुषार्थी, सत्यवान, नेकचलन, बुद्धिवान्, पुण्यात्मा, वकील, बैरिस्टर, महात्मा योगी, अलमस्त फ़कीर, राजा बाबू, यहांतक कि एक पैसेके लिये प्राकृतिक नियमको छोड़ उस सच्चे नूरको छोड़ भंगीयोंसे भी मांगना पडता है और उससे स्पर्श कर भोजन पदार्थोंकी छूत न मान बाजूसे बाजू मिलाकर तो जरूर पुरुषार्थ

कर कमाना पडता है, कमाया करोड पति होगये, या दिवाले निकाल झूठे सच्चे इन्द्रजाल रच "उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः" अन्तमें, मनुष्यमात्रको इस उदर भरनेके लिये किसी प्रकारका आधार जिसको मर्य्यादा हिन्दुओंकी, वेदशास्त्र, पुराणवेत्ता, त्रिकालदर्शी, आदि दन्तकथाओंके नामसे हिन्दूशास्त्र रद्दीखानोंमें पडे हुए भी आज इस पृथ्वीपर कुदरती नूरका प्रकाश होरहा है।

"श्लोक"–अन्नं प्राणो बल चान्नमन्नं सर्वार्थसाधकम्।
देवासुरमनुष्याश्च सर्वे धान्योपजीविनः ॥

अर्थ–क्योंकि जटा रखाये, मूड मूडाये, बाल कटाये और भगवां वस्त्र पहरे इस तरहके बहुतसे भेष धारण किये यह लोक देखता हुआ भी देखता नहीं किन्तु केवल पेटके लिये बहुत सा शोक किया करता है। अर्थ–जगत्का प्राण अन्न है, जगत्का बल भी अन्नही है तथा जगत्के सम्पूण कार्य्य भी अन्नसे ही सिद्ध होते हैं, इतना ही नहीं किन्तु देवता दानव और मनुष्यादिका जीवन भी अन्नके ही आधीन है।

अन्नं तु धान्यसंभूतं धान्यं कृष्या विना न च।
तस्मात् सर्वं परित्यज्य कृषिं यत्नेन कारयेत् ॥
कृषिर्वृष्टिं विना चैव कदाचिदपि नो भवेत्।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन पूर्वं वृष्टिं परीक्षयेत् ॥

अर्थ–जिस अन्नकी इतनी महिमा है वह धान्यमेंसे उत्पन्न होता है और धान्य खतीके बिना नहीं हो सकता और जिस खतीके द्वारा राजा तथा प्रजाका पालन होता है वह बिना वर्षाके कदापि नहीं हो सकती है अतः सबसे पहले हर उपायसे वृष्टि विद्या जाननेकी ही पूरी आवश्यकता देखकर

ऋषियोंने यह विद्या संसारके लाभार्थ परोपकारदृष्टिसे प्रकट की थी जिसके द्वारा सुभिक्ष दुर्भिक्ष आदिका निर्णय हो जाता था।

पूर्वकालमें आत्मविद्या और पदार्थविद्याका गूढ़तत्त्व जाननेवाले त्रिकालदर्शी महात्माओंने—महर्षियोंने प्राणीमात्रको सुख पहुँचानेके लिये अग्निहोत्रादि अनेक प्रकारके यज्ञोंका प्रचार किया था, (इसी कलियुगमें घूनीवाले दादा भी २४ घंटा अग्निहीको इष्ट मान सब कुछ कर सकते हैं) जिनमें दुग्ध घी आदि पुष्टकारक, मधु शर्करादि मिष्टताकारक कपूर चन्दनादि सुगन्धिकारक और ब्राह्मी सोमलतादि आरोग्य कारण गुणोंसे युक्त उत्तमोत्तम पदार्थ वेदमन्त्रोंद्वारा अग्निमें होमे जाते थे। वे पदार्थ अग्निके योगसे सूक्ष्म परमाणू रूप होकर वायुमंडलमें फैलके सूर्य्यका तेज (उष्णतादि) बढ़ा देते थे जिससे समयपर पूर्वोक्त पदार्थोंके गुणोंसे युक्त उत्तम जलकी वर्षा होती थी, परन्तु थोड़े समयसे अग्निहोत्रादि यज्ञोंका प्रचार घटता गया है। वैसे ही वर्षा भी कम होने लगी है और जो कभी कुछ अधिक भी हो जाती है तो वह समयानुकूल न होनेसे उतनी लाभदायक नहीं होती, उसमें भी इस समयकी वर्षाके जलमें निन्दित पदार्थोंके परमाणु मिले हुये रहनेसे महामारी आदि उपद्रवों सहित बहुधा दुर्भिक्ष ही दुर्भिक्ष पड़ने लगे हैं, अब भी यदि दुर्भिक्षको पहलेसे जाननेके लिये वृष्टिविद्याकी ओर ध्यान नहीं दिया जावेगा और दुर्भिक्षकी योंही वृद्धि होती रही तो न जाने आगेको फिर कैसे २ कष्ट उठाना पड़ेंगे।

हे राजराजेश्वरी प्रसादकुंवरी चंडिका! तेरा दादाजी महाराजने परिचय दिया, त सर्व प्रकारसे दःखियों महाघोर कर्मियोंके

सदृश प्रणाम स्वीकृत करती कराती है। तेरी ज्योतिकी झलक दिखादे "जबसे देखी झलक तुम्हारी, हुआ है ये दिल दीवाना। कई जन्म बीत गये योहीं, कबतक दिलको बहलाना।" इसलिये प्राचीन प्रणाली सभ्यता और शिक्षा देनेवाला एक प्रसिद्ध "संस्कृत ब्रह्मचर्य्याश्रम व कन्या-पाठशाला" इस भारतभूमि बंबई—कलकत्ता—मद्रास—पंजाबमें मय गौशालाके होना चाहिये, इन आश्रमोंमें पंचगौड़ पंच द्राविडोंके बालक बालिकायें भिन्न २ प्रांतोंके या इसी प्रांतके हों, बालक बालिकायें चारों वर्णकी हों, नीचेसे ऊपर चढ़ाते जानेमें ब्राह्मणत्व अपने आप प्रकाश होता जावेगा, इनको प्राचीन प्रणाली और सनातनधर्म्मरीत्यानुसार शिक्षाप्रदान करना कराना, स्मरण शक्ति, भक्तिभाव, श्रद्धाप्रेम और गृह-प्रबन्धकी बातें सिखाना चाहिये "शिक्षा बिलकुल गुप्त हो" हिन्दुओंका तरीका यवन म्लेच्छ न जान सकें, तीव्र और होनहार निर्धन बालक बालिकाओंको भोजन-वस्त्र, रहन—सहन—पुस्तक आदि सब कुछ आश्रमकी ओरसेही दिया जाना चाहिये, यह आश्रम हिन्दू जाति मात्रका होगा, वर्ण धर्म वर्ण आश्रमको पुष्ट करना होगा, इसीके साथ २ "विधवा शिक्षणालय" भी होना जिसमें आयुभर वैधव्य व्रत धारण करनेवाली उन सदाचारिणी विधवाओंको शिक्षा दी जानी चाहिये, ताके वह भ्रूण-हत्या पाप कर्म्मसे बचें, लिख पढ़कर अध्यापिका या उपदेशिकाके रूपमें स्त्री जाति उपकारार्थ सत् संग या भक्तिभाव तथा बालिकाओंको गृह-सम्बन्धी कार्य्योंको सिखाना, गङ्गास्नानादिसे देवताओंपर धारणामात्र भक्तिसे जीवन प्रसन्नतापूर्व्वक व्यतीत कर सकें—इसलिये "मातृकुल धर्म्म शालाओंकी" अत्यन्त आवश्यकता है। भारतके प्रत्येक मतानुयायी हिन्दुओंको चाहिये कि इन कामोंको अपना निजीकाम

समझ शीघ्र पूरा करना चाहिये तो अत्यन्त पुण्य हो। इस प्रकारके आश्रम पृथ्वीके हरशहरोंके बाहर होना चाहिये । प्रत्येक शहरोंमें आश्रमोंके निकट ही निकट पंचदेवता उपासकोंके मन्दिर भी होना ही चाहिये। शहरोंमें जगह जगह न हों उसी एक मन्दिर व आश्रमोंमें उसी शहरके लोग लुगाइयें—बालक बालिकायें समय शुभकार्य्यमें बितायें बाकी समय अपने अपने घरोंमें गृहकार्य्य कर मन्दिरों व आश्रमोंमें सद्गुण सीखें। बडे २ सैनबोर्ड भी होना चाहिये। यदि ऐसे २ पुण्य कार्य्योंमें दत्तचित्त होकर यह पवित्र कार्य्य सब हिन्दू मिलकर शीघ्र चारोंदिशामें चार आश्रम चार गौशालायें व चार मन्दिर बनवा डालें तो यह आश्रम भी बतौर चारोंधामके तीर्थ समझकर प्रत्येक आत्मा अपनी अपनी संतानोंको सतचरित्र सिखलानेमें तत्पर हो अवश्य देखनेकी उत्सुकतासे देखेंगे और यथाशक्ति अन्नवस्त्र रुपया पुस्तक आदिसे परिपूर्ण सहायता करके पुण्यके भागी बनने लगजांयगे और अपने अपने स्वरूपको देख पहचान जायेंगे कि मैं कौन हूँ—क्या कररहा हूँ—क्या करना चाहिये। हम स्त्री पुरुषोंकी दुनियांमें क्या क्या कर्तव्य ड्यूटी है । ऐसा होनेसे कोई किसीके जालमें नहीं फस सकेगा। न भारतमें हिन्दूमतको कोई डिगा सकेगा। वर्तमान समयमें हिन्दुओंसे यही विशेष प्रार्थना है कि चार आश्रम चार गौशालायोंकी सहायतार्थ नवीन कायम करनेकी उदारता दिखलानेकी कृपाकरें अवश्य करें। शहरोंके बाहर आश्रमोंके साथ साथ एक २ तालाब—शंकर-विष्णु-गणपति-सूर्य-शक्तिका मन्दिर ही अवश्य होना चाहिये। अवश्य बनवादेना चाहिये। इतने बड़े बनवाना चाहिये, कि उस शहरके आदमी औरतोंको पूजन पाठ बैठना, उठना, आने जानेमें कोई दुःख न हो जैसे ईदगाह मुसलमानोंकी कि ईदके दिन सब मुसल-

मान एक जगह उपस्थित हो जाते हैं। उसी प्रकार सब हिन्दू एक जगहही २४ घण्टेमें एकत्र हो जाया करें, या वर्णोंके अनुसार कक्षायें हों।

दोहा।

दया धरमको मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोडिये, जबलग घटमें प्राण॥

भारतभरके सर्व हिन्दुओंको धर्म अभिमानिओं सद्गृस्थोंको—।व।द.त करनेमें आता है, कि संसार याने हिन्दुस्थानमें आज सैकड़ों हजारों गौ-रक्षाके लिये गौशालायें उपस्थित हैं और वड़े २ जोरोंसे चन्दा इकट्ठा करकर काम पूर्णरीतिसे न कर निःस्वार्थसे विलग होकर धर्म्मादेका रुपया सब जगहके धनी लोग खाये वैठे हैं और खातेही चले जा रहे हैं धर्मको भी धोखा दे रहे हैं। फिर स्वराज्य कैसा? क्या निःस्वार्थ रक्षा इसी तरह होती है? आज हिन्दू मुसलमान व अँग्रेज सभी जान रहे हैं। कसा-इयोंके हाथसे गाय छुड़ानी ये सर्वहिन्दू भाइयोंका खास फर्ज है, कि इसलिये, इस ओर ध्यान देकर सर्व हिन्दू सज्जन मंडलियोंको चाहिये कि नर्मदा किनारे होशङ्गावादमें गौशाला, ब्रह्मचर्य्याश्रम, अनाथालय, शिवा-लय क्षेत्र समर्पण करो, यह सब काम कमसे कम दो करोड़ तीन लाख इक्कावन हजारमें हो जावेगा, तो सर्व हिन्दू सद्गृहस्थ स्वयं तनमन धनसे इस धर्म्म कार्य्यकी पूर्णरीतिसे सहायता करें ताके धर्म डूवा हुआ प्रकाश हो उठे।—इसीलिये वम्वईमें दशसहस्र इश्तहार व इन्दौरके वर्तमान राजेन्द्र यशवन्तरावके राजतिलकके दिवस दो करोड़ तीन लाख इक्कावन हजार रुपये इन कामोंके लिये मांगनेको इन्दौरमें भी दशसहस्र इश्तहार

चांटे थे। सो सब भारतियोंको इन्दौरके राजासे अनुरोधकर भारतका जीर्णोद्धार करना कराना चाहिये। इस पुस्तककी बातोंपर ध्यान दे पूर्ण सहायता करें।

" कहां युधिष्ठिर नरपति, कहां विक्रम भूपाल।
कीरत जगमें रहगई, सबको खायो काल " ॥
बडे बडे ऊंचे सदन, गज तुरंग परिवार।
अरे मूढ़ भज राम भज, न तर खायगो काल ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

सब भारतियोंको इस ओर ध्यान अवश्य देना चाहिये-

जिन महर्षियोंने अपने अपने मतमतान्तर प्रकाश कर दिये हैं उसको हम नई रोशनीवाले पृथ्वीके हिन्दुओंने गुणकर्मसे वर्णधर्म्म वर्ण आश्रम मानलिये। तब तो न्याई—सत्यवान, मर्य्यादावाले गरज कि जितने अच्छे कर्तव्य हैं और यदि न मानें तो पापी अन्याई दुष्ट जितने कर्तव्य हैं, यह दोनों पलवे त्रेतामें राम मर्य्यादा पुरुषोत्तमने कायम किये। उसको द्वापरमें श्रीकृष्णने अर्जुनसे प्रश्नउत्तरमें (यह गीता भगवान् कृष्णकी लीलाका तत्त्वज्ञान है। और इसकी पूर्ण व्याख्या श्रीकृष्ण लीलाही है यह गीताज्ञान और इसकी यह व्याख्या—संसारसागरसे उद्धार करनेका उपाय बतानेवाला दैवी संदेश है। समस्त वेदोंका सार है भिन्न उपनिषद वचनोंका इसमें सार समन्वय है। तथा षड् दर्शनोंकी पूर्णता है। न्याय दर्शनके सोलह पदार्थोंका तत्त्वज्ञान—वैशेषिकका द्रव्यगुण कर्म भेद—मीमांसाका कर्मवाद—सांख्योंका परब्रन्ध, न्याय प्रकृति पुरुष भेद—पातंजल दर्श-

नका योग आदि) दोनों पलवे दिखाते व रखते हुये । "वीजगत्त्रयं" ऐसा नूर प्रकाश किया, अब आज कल इस कलियुगमें कौन नूर प्रकाश होता है । (भारतके नेतागण गांधी आदि) कि जो ऐसे हिन्दू जो गायके बछड़े गोलीसे मरवायें ! वाह रे वर्ण धर्म वर्ण आश्रमी! आठों कक्षा आठों किलासोंका नाम हिन्दू व सनातन धर्मी। गरज इस आठों कक्षाओंके जाननेवाला हिन्दूनेताओंका उपदेश माननेवाला क्या सनातन धर्म्मी कहलानेका हक रख सकता है ? तब उसको स्वराज्य मांगनेकी ही क्या अवश्यकता है ? क्योंकि २१६०० स्वासें इस श्लोकपर घटित हैं—

श्लोक ।

कोऽहं कथमिदं जातं को वै कर्ताऽस्य विद्यते ।
उपादानं किमस्तीह विचारः सोऽयमीदृशः ॥

अर्थ—मैं कौन हूं ? यह संसार किस प्रकार उत्पन्न हुआ ? कौन इस जगत्का कर्त्ता है ? और संसारका उपादान कारण कौन है ? इस प्रकार नानाप्रकारका जो विचार करना है सो "विचार पुरुषार्थ है विना ज्ञान व साधनों करके नित्य अनित्य वस्तुओंका विचार नहीं होता" अर्थात् वर्ण धर्म वर्णाश्रमोंकी कक्षाएँ सिलसिलेवार विना पास किये "कैसे नूरकी" झलक सह सकता है । या उसको पहचान सकता है । अब इन आठों कक्षाओंको मानना व्याकरण शास्त्रने सिद्ध किया है । कि स्वर-व्यञ्जन—ॐकार निर्विकार शंकरके डमरूसे निकले हैं, उसमें अनेक मत-मतान्तर मनुष्योंने अपनी २ बुद्धिसे स्थिरकर भ्रम फैलायकर "अपना २ राग गाकर" सत्य असत्यके दोनों पलवे मनुष्य योनिके सामने धर-दिये; शरीरकी सब इन्द्रियां उन पलवोंका द्रष्टा होकर "मनुष्य आकार-

रूप नूरका प्रकाश हुआ"। उसको ८४ लक्ष योनियोंमें मनुष्य ज्ञानवान् और श्रेष्ठ कहते हैं। इस भारतवर्ष हिन्दुस्थानमें वह हिन्दू-महात्मा-योगी-अलमस्त-साधू-फकीर-निजबोधरूप भूदेव कहलाते थे, वह कर्तव्य ड्युटि-वान् बन इन आठ कक्षाओंको पासकर तब अवधूत भेषमें ऋषभदेव आदिकी तरह नित्य अनित्य प्रत्यक्ष रूपसे स्वयंनूर प्रकाश हो उठता है। आज इस कलियुगमें ३३ करोड़ हिन्दुओंमें ७६ लाख साधू होनेपर भी नूरका प्रकाश तो दूर रहा। भीख मांग २ कर जुलाहे सभी वर्ण बनकर "भूदेवकी हैसियत" छोड़ भ्रममें पड़े सड़ रहे हैं। क्योंकि जब ईश्वर मैनेजरने नाटक रचना चाहा उस समय तीन किस्मके एक्टर बनाये, मर्द औरत व नामर्द--नपुंसक। इन तीनोंकी मनुष्य जातिमें गणना है। इस मनुष्य जातिके लिये ही उस सर्वशक्तिमानने पृथ्वीके ऊपर अनेक पदार्थ नानाप्रकारके मनुष्योंके सुखके लिये रचे हैं। उसको न्याय अन्याय ही रूप करके मानना संसार याने मर्य्यादा है। दोनोंको न मानना ही "अवधूतवृत्ति है" उसको हर्ष विषाद रहित-सुगन्धि दुर्गन्धि रहित निवृत्ति मार्ग कहा है। वही निर्विकार शंकर कैलास-वाला षड़ ऐश्वर्य्य कहलानेवाला सदाशिव धूनीवाला दादा जगत्पित शंकर अवतारी है।

दरबार ऐसा शाही, छोटा बड़ा न कोई।
निराश हो न कोई, शोभा दिखा रहे हैं॥

अन्धे व रोगी आवें, सब पर करे हैं रक्षा।
प्रत्यक्ष अपनी माया, सबको दिखा रहे हैं॥

दृष्टि दयाकी ऐसी, सब पर है उनकी पूरी।
शक्ति एक ईश्वरकी, एकसां दिखारहे हैं॥
खिलावे पिलावें दादा, हाथोंसे अपने सबको।
गर प्रेम हो तो ऐसा, दादा बता रहे हैं॥
कलियुगमें ऐसे दर्शन, धन्यवाद जिसने पाये।
शंकर ही नंगे सेवक, हमको दिखारहे हैं॥
दादाके गुण कहांतक, गाऊं अय नंगे सेवक।
चितसे लगी लगन है, चरणोंमें लानेवाले॥

" समर्पण "

हे प्रभो ! आपकी लीला अपरम्पार है, आपकी विलक्षण मायाके आगे सबको ही सर झुकाना पड़ता है। यह कोई नहीं जानता, कि पूर्व कलह क्या हुआ? और उत्तर कलह क्या होगा? मेरे पिता पंडित कन्हैयालाल व्यास मुदर्रिस हिन्दी मदर्से सुलेमानी हाईस्कूल भोपालमें सं० १२९१ हिजरीसे सन् १३२९ हिजरीतक याने ३८-३९ साल रहे, उनका देहपात ३ अक्टूबर सन् १९११ ई० मुत्ताल्लिका कुवार कृष्ण ६ सं० १९६७ विक्रममें मय मेरे भाई जमुनाप्रसाद व नर्बदाप्रसादके मार्तंडरूपी घोर प्लेग महाराजने अपनी क्रूर दृष्टिरूपी किरणोंसे भस्मकर अपने रूपमें और भी कुटुम्बको मिला कैलाशवास पहुँचाया। मैंने इस शोकको दूर करनेके लिये उन्हींके पुराने तरीकोंकी पुस्तक हिसावातको अपने अनुभवसे ज़िला दे नकल

कर अपना समय शोक निवारणार्थ रत्नपरीक्षा और गुरुमाला एक वैद्यक-की पुस्तक चरणदासका सरोदा व इस पुस्तकोंके लिखनेमें व्यतीत कर उस शोकको निवारण किया, अतएव मैं यह गणित "गुरमाला" तीनों पुस्तकोंको उनकी यादमें समर्पण करता हूं और आशा करता हूं कि जो आत्मा इससे लाभ उठायेगी उससे उन आत्माओंकी इस बातको जानकर सुखी होगी।

बालकोंका हितेच्छू गंगाप्रसाद ऊर्फ नन्हेंलाल व्यास भोपाल निवासी
चन्द्रशेखरानन्द अवधूत होशंगाबाद ।

" एक ड्रामा "

खानेकी तकलीफ दो दो दिनके फाके होनेपर भी माताका प्रेम ोता ही है । कभी कभी बादल बूंदीके दिनोंमें ऐसा भी हुआ है कि घरमें खानेको कुछ नहीं रहता, हम संतानें पड़े रोते हैं तो माता भी हमको देख २ रोती है, जल खानेका कोई उपाय नहीं है । गांवमें उधार मांगनेसे मिलता नहीं, गरीबको कौन उधार देगा?माता कभी कभी कहती है जाओ फलां सेठसे कुछ मांग लाओ । किन्तु बाहर निकलते २ फिर बुलालेती है और कहती है-"बेटा ! इस पानी धूपमें बाहर मत जावो ीते रहोगे तो खानेको तो मिलेहीगा" इसी तरह बात चीत करते २ खतम नहीं होती थीं, जब दो दीवाने इकट्ठे हो जाते हैं फिर बातोंकी क्या कमी है ? जैसे दुःखकी कहानी लम्बी थी वैसे ही बातोंकी लडी भी लम्बी थी, किन्तु इस जगत्में अभागे दुःखियोंकी कथा कहकर एक धार रोवेंगे, ऐसा समय भी बहुत कम है, और कर्म्महीनोंकी रामकहानी

सुनताही कौन है, धनीलोग अपने धनके मदमें मत्त रहते हैं, विषयी लोग अपने विषयमें " डूबे " रहते हैं, और नई रोशनीके जन्टलमैन मानीलोग तो नीचोंसे बात ही नहीं करते, संसारमें सभी अपनी अपनी इष्ट प्रकृतिके सेवनमें व्यस्त रहते हैं। अभागे लोगोंका आर्तनाद कौन सुने ? दुःखी लोग किसके पास जाकर रोवें ? नन्हेंलाल व्यास महाशय ! आपने इतना मेरा आदर किया, किन्तु मैं इस योग्य नहीं हूँ । यदि योग्य होता "महापापी" न होता तो आज पाप दमनार्थ महात्माके निकट न आता, संसारमें कौन कह सकता है, कि मैं महापापी नहीं हूं । कौन कह सकता है,कि मैंने पाप नहीं किया,कौन कह सकता है,कि मैं निष्क-लंक और निरपराधी हूँ।

श्लोक–अपापानां कुले जाते मयि पापं न विद्यते ।
यदि संभाव्यते पापमपापेन हि किं मया ॥१॥
न भीतो मरणादस्मि केवलं दूषितं यशः।
अपापस्य हि मे मृत्युः पुत्रजन्मसमः किल ॥२॥

अर्थ–जो पापी नहीं हैं उनके कुलमें उत्पन्न होनेपर मुझमें पाप नहीं है, यदि पापका शक किया जाता है, तो मेरे विना पापके होनेसे क्या मतलब ? नहीं डरा हूँ मौतसे, केवल यश दूषित होगया है। अपापी हो-कर मेरी मौत पुत्र जन्मके बराबर है, आजकलके धनाढ्य मानी अभि-मानी अँग्रेजीमैन राजाओंने संतुष्ट होकर वेगपूर्व्वक घोड़ा दौड़ाया। (विलायतकी सैर अपने धर्म्मोंकी परिपाटी छोड़ अँग्रेजी व्यवहारमें लिप्त हो) सम्पूर्ण धर्म्मोंको तिलांजलि दे, सेनाको पीछे करके आपना

वीरत्व दिखलाने लगे । यह देखकर योद्धाओंको और भी साहस हुआ और द्विगुण चौगुण बलसे लड़ने लगे । नन्हेंलाल भी कूदकर धूनीवाले दादाजीकी शरणमें काशीसे आ आगे जा पड़े और ललकारकर बोले "विश्वंभरका दर्शन हो गया" आज हमारे उत्सवका दिन है, हमको उचित है, कि प्राणपर्य्यन्त अपने स्वामीकी सेवा रक्षा करें, जिसमें धूनीवाले दादाजीका नाम और गौरव रहे, धर्म्मवीरोंको इससे बढ़कर आनन्दका विषय और क्या है ? हे धर्म्मवीरो ! वीरगण ! आगे बढ़ो, ऐसे महान योगी अवधूतराजोंके राजाकी सेवा रक्षा करना हम सब हिन्दूधर्म्म शैवमतावलम्बिलोगोंका खास काम है, हमलोगोंके रहते हुए दादाजी महाराजको लेशमात्र कष्ट न होना चाहिये । और न समाचार पत्रोंमें इसतरहकी इज्जत अफजाई डींगे न मारना चाहिये । केवल परोपकार और धर्म्मसंचय निमित्त विश्वंभरसे प्रार्थना करो, इस संसारमें कै दिन रहना है । सैनिक पुरुष पूर्वोक्त ब्राह्मणपुत्रको दादाराजा सत्यके सन्मुख ले आया, राजाने पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है ?" उसने उत्तर दिया "मेरा नाम नन्हेंलाल व्यास उर्फ चन्द्रशेखरानन्द अवधूत है" राजा घबराकर—"घर कहां है" । नन्हेंलाल—"भंगीयोंकी धर्म्मशाला अर्थात् गोभक्षक यवनबस्ती भोपालतालमें" राजा—"तुम्हारा मतलब क्या है ?" नन्हेंलाल—"आपके आधीनस्थ् सैनिकोंमें भर्ती" नङ्गा अवधूत संन्यासी होनेकी इच्छा है।" राजा—"तुमने पहले इसके और कहां कहां काम किया" नन्हेंलाल—"आज पहले पहल अवधूत भेषरूपी खड्ग धारण किया है, और खड्गको म्यानसे निकालकर फिर भीतरकर बाहरकर चपत लगा दिया ।" एक सैनिकने कहा—हे युवा ! तुम्हारे खड्ग—फर्शाग्रहणकी रीति देखकर बोध होता है कि समरमें कभी तुम्हारी तरवार खाली न जायगी, तुमको

चेला ही कत्र किया। दूसरा सैनिक राजाके कानमें कुछ कहकर-मुझको विश्वास नहीं है, कि इस युवाने आजही खड्ग ग्रहण किया हो, यह तो शत्रु-शत्रुदलका " जासूस " सा जान पड़ता है। इसे दण्ड देना चाहिये। सांईखेड़ेसे नर्मदा उसपार होते ही हरदा-हंडिया उस पार होते ही सिद्ध-नाथबावाके दरवारमें सिद्धयोगी दादाजी महाराजाने कहा हम तुम्हें कलि-युगमें सतयुग कर मोक्ष देंगे भगादिया । राजा ब्राह्मण-बालककी चप-लता और खूब सूरती और दिलेरी, सत्यता देख विशेष परीक्षा करनेकी इच्छासे फिर पूछा-"तुम तो ब्राह्मण हो शिखा सूत्र त्यागही दिया। मूँछे भी मुड़ा ही डालीं और कभी पहले ऐसा काम भी नहीं किया है। तो अब क्यों ? इस कामके करनेकी इच्छा करते हो ?" नन्हेंलाल-मेरी एक विनती है कुछ दिन आपकी सेवामें रहकर आपको संतुष्ट कर लूंगा। तब उसको प्रगट करूँगा अभी कुछ कहनेसे फल नहीं होगा । वही दूसरा सैनिक फिर कहा-महाराज ! देखिये, मैंने जो कहा सो सत्य है। देखिये, अपनी इच्छाका कारण नहीं बतलाता । राजाको शङ्का हुई मनमें विचार किया कि गुप्त चरको अपनी कथाका भेद व अपने कार्य्य-के कारण बतानेसे कभी हानि नहीं होती, कहा मिला लो। अपनेमें फिर पूछा। शत्रूकी ओरसे बहुतसे जासूसी हमारे दलमें उपद्रव उठानेके लिये भेजे गये। और मौजूद हैं, यह कैसे मालूम हो कि तुम उनमेंसे नहीं हो। या सच्चे सेवक शिष्य ही हो । नन्हेंलाल-भद्र ब्राह्मणपुत्रकी बातोंपर यदि आपको विश्वास हो तो भय न करें। राजा-प्रायः अभद्र लोग भी भद्रलोगोंका भेष बनाकर फिरते हैं और कभी कभी भद्रवंश-वाले भी कपटाचरण करते हैं। नन्हेंलाल-मैं पापी तो निस्सन्देह हूं, परन्तु कपटाचरण कभी नहीं किया। मेरे वंशको आजतक यह कलंक नहीं

लगा है । क्रोधके मारे नन्हेंलाल व्यास ऊर्फ चन्द्रशेखरानन्दकी विध्वी बन्धगई । पहला एक सैनिक—कहा—दादाजी महाराज ! यह सफेद कागज-की तरह युवा विश्वासघाती नहीं है । इसकी ओरसे मैं जिम्मेदार हूं । यह हमारे दलके मासूमी, ब्राह्मण बालककी नाईं आचरणवाले अवधूत हैं, क्या अब भी आपको संदेह है ? राजाने कहा—हे युवा ! तुम्हारी वातोंसे तो निश्चय प्रतीत होता है, कि तुम कोई उदारचित्त वीर पुरुष हो, परन्तु कभी कभी पुजहाईमेंसे भी सांप निकलते हैं । नन्हेंलालका मुंह क्रोधसे लाल हो गया आंखोंमें पानी भर आया और धीरे २ नम्र स्वरसे वोला-यदि आपको विश्वास है, कि मैं कपटाचारी ही हूं तो मुझको एकवार तो क्या ? कई बार किशोरीके भाई कोमलसिंग-बिहारीलाल अग्रवाल—बन्सी-धर तूमड़ा सांईखेड़ेके मालगुजार—करेलीका पोपटभाई—गङ्गाधर व्यभि-चारी—दण्डी भास्करतीर्थ द्वारा अनेक अपवादोंसे प्राईवेट सेक्रेटरी मुसा-हिवोंने द्वेष कर २ भगा ही दिया । और भगनाही पड़ा । अव आप आज्ञा दीजिये मैं समझ लूंगा कि पृथ्वी निर्बीज है घोर कलियुग है । दादाजी महाराजने कहा रातभर खडे रहो सबेरे पांव पड़ कहा अच्छा जाओ । नन्हेंलाल चल दिये ता० २२—६—२९ आषाढ़माससे होशङ्गाबाद नर्म-दा किनारे पड़ा है, दादाजीने फिर प्रेरणाकर बुलाया, बडे आदर सत्का-रसे उनको वजीरी अश्वारोहीके पदपर नियुक्त किया और कहा तुम्हारी बुद्धि और कुशलता देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूं तुम्हें मोक्ष दिया । भारत-वर्षमें जिसको कुशलता त्यागमें किसीने परास्त नहीं किया, तुमने उसकी आंखोंमें धूल डाली, हम भी तुम्हारे अनुगामी होंगे, क्योंकि घर गिरता हुआ देखकर जो पहले भागे वही बुद्धिवान् होता है, आज पहर रात गये स्मशानघाट पर भेंट होगी, साढ़ेतीनसौ कोसकी दूरीपर अपन रोटी मिलकर खायेंगे ।

"दूसरा परिच्छेद"

राजाने कहा तेरे पापकी अब क्षमा नहीं है। नन्हें लालने उत्तर दिया, मैं निर्दोषी हूं, नीतिसे कहता हूं कि अब तेरा राज्य जावेगा, नहीं रहेगा। राजाने जल्लादोंसे कहा अब विलम्ब मत करो। नन्हेंलाल—दादाजी महाराज ! आपने मेरे शत्रुओंकी सब बातें देख लीं सुनलीं। मुझको भी कुछ कहना है। राजाने कहा शीघ्र कह क्या कहना है ? अब तेरा समय निकट आन पहुँचा, रातभर खड़ा रह उनको वर्तन देही दियां। नन्हेंलाल-गंभीर स्वरसे कहता है यद्यपि मेरा दोष प्रमाणोंद्वारा सिद्ध होजाय, तथापि मैं ब्राह्मण हूं और ब्राह्मण बालक अबाध्य है। आप आर्य्य धर्म्मके मर्य्यादा पुरुषोत्तम, पूरे भक्तोंके खास शंकररूप शिव अवतारी हैं और शास्त्र भी आपका बनाया हुआ देखा सुना है, आपहीके शास्त्रानुसार ब्राह्मण बालक अबाध्य है शत सहस्र दोष करनेपर भी ब्राह्मण अबाध्य है, (पर जवाहरलाल नेहरू ब्राह्मणादि) मैं तो आश्रयहीन बंधुआ हूं, आपके तेजके कारण मेरा सारा शरीर व दोनों हाथ बन्धे हैं, तेज क्या आपकी शरणागत हूं, जिधर आंख उठाकर देखता हूं उधर मेरे शत्रुही शत्रु देख पड़ते हैं। आपकी आज्ञा रोकनेवाला कोई नहीं है, मेरी सहायता करनेवाला कोई नहीं है, आपके मुँहसे निकलनेकी देर है, जरा चितवन की कि मैं अभी मारा जाऊंगा-क्योंकि आपके दरबारी भक्तोंने यह सब ग्यारह वर्षकी सेवा सब बातें नास्तिकता व राजद्रोहीकी सुझाई हैं किन्तु इससे शास्त्रकी अमर्य्यादा होती है अनुमान दोसौ वर्षसे भारतमें म्लेच्छ शासन करते हैं (याने दादा दरबारमें छे वर्षोंसे बहुतसे बदमाश इकट्ठे हैं उन्हींका दौर दौरा होरहा है) वयोवृद्ध धर्म्मावलम्बी और नीच हैं इसके पहले मुसलमानोंका भी बहुत जोर रहा तथापि मैं जानता हूं कि

उनमेंसे किसीनें भी आजतक ब्राह्मणका वध नहीं किया है "फिर आप योगी, अवधूतके होते हुये दरबारमें आपके भक्त विन्हल हो मृतककी तरह दुःखपाये" परन्तु इन स्वार्थी वदमाश म्लेच्छोंके विरुद्ध नीतिसे भी कहनेपर अच्छे विद्वानों, सीधे साधे लोगोंको दण्ड मिलता है, ईश्वरकी दयासे आज इस देश व "दरवार दादाका" शासन करता एक संनातन धर्म्मावलम्बि धर्म्मकी आड़में ढोंगी वना हुआ संसारको "शौ" दिखानेवाला,परम धार्मिक राजा वना हुआ सूर्य्यके समान प्रगट होरहा है-"जगतमें जिस किसीको जो कोई अपने ह्रदयकी स्पर्शमणि समझता है उसके सामने जब मनका कपाट खुल जाता है और मनकी व्रातें कहना आरंभ होती हैं फिर क्या वह बातें कभी तमाम होती हैं ?"। शास्त्रकी मर्य्यादासे शरण आये हुये ब्राह्मण साधुओंपर क्या वीर क्षत्रिय रक्षा न करेंगे ? क्या टुकड़खोर ब्राह्मणसे फिर भी धोखेकी आशा होगी? कभी नहीं, कभी नहीं, उस ब्राह्मण वीर्य्यमें फरक़ समझना चाहिये, जो नमक खाकर कुछ दिन आरामसे जीनेके लिये, थोड़ेसे सुखके लिये अपने ब्राह्मण-कुलमें कलंक लगावे, उस पुरुषको धिक्कार है। हे महाराजाधिराज ! ज़रा विचारिये तो सही आज यदि आप कोई पुण्य कर्म्म करेंगे, चिरकाल तक आपका यश रहेगा, और पृथ्वीपर फैल ही रहा है, यदि कोई पाप कर्म कीजियेगा युग युगान्तरतक अपयश रह जायगा, मैं तो आश्रयहीन भिक्षुक ब्राह्मण बालक अवधूत हूं, मुझसे किसी प्रकारकी कभी त्रिकालमें भी बुराईकी आशा न रखिये, इतने कहनेपर यदि मुझसे कोई विश्वास-घात हो उसी दिवस गोली मारदीजिये—"आप पर ब्रह्महत्याका पाप न होगा" मेरे प्रायश्चित्त फल मुझको ही मिल जायगा, इससे बढ़कर और क्या सुबूत है ? या दूं। इसके अतिरिक्त किसीके कहनेसे विना सुबूतके

इस ब्राह्मण बालक नंगे अवधूतका तिरस्कार किया जायगा तो श्रीमानोंके स्वच्छ यशरूपी अकलंक चन्द्रमें कलंक लग जायगा, "जैसे बंबई महालक्ष्मी खाक चौक बार्डनरोडमें मीठवाले गोवरधनदासने नंगे अवधूतको दादरकोट लेजानेमें मोताज हुआ मारा २ फिरता है" "साधुओंके तिरस्कारका फल है" दीनपालकके जीवन चरित्रमें यह एक कालिमा लग जायगी, संपूर्ण भारतमें यह चरचा फैल जायगी कि मेरे तिरस्कार करनेके पीछे मेरे और मेरे बन्धु साधू-ब्राह्मणोंके पुत्र पौत्र इस बातको स्मरण रखेंगे, सहस्र वर्षोंके पीछे भी बालक लोग इतिहासोंमें पढ़ेंगे कि नीतिकी बात कहनेपर वीरगण सूर्य्यवंशी चन्द्रवंशी राजाओंने एक शरण आये हुये, सनातनधर्म्मको अपनाते हुये ब्राह्मण, साधु, धर्म्मकी रक्षा न की, और न उसकी इच्छा पूरी की। हजार वर्ष पीछे वृद्ध लोग बैठकर परस्पर कहेंगे कि जो कर्म्म मुसलमानोंके जमानेमें नहीं हुआ, वह इन म्लेच्छों, गौरंडोंके जमानेमें हमारे हिन्दूराजा व साधू संत भी म्लेच्छी वृत्ति-व्यवहारमें-धर्ममें भी बेरहमी करने लगे, हे महान आतमा महाराजाधिराज ! विचारिये तो सही मुझ दीनको दण्ड देना तो सहज है, मेरा तिरस्कार करना भी सहज है, किन्तु देश देशान्तर, युगयुगान्तर यह "तिरस्कारी" कलंक मिटना सहज नहीं है, इसीप्रकार ब्राह्मण साधुको तिरस्कार व अपमानित करना-उनकी बातोंका व उनके आचरणोंका अमल विश्वास न करना कह कहा लगाना जो पाप है वह पापसे छूटना सहज नहीं है। ब्राह्मण बालक विश्वासघाती नहीं होता है (रजवीर्य्यकी न्यून्यतासे हो जावे तो होजावे) कि बालकको मिठाई देकर फुसलाऊं, युवतियोंको रूप दिखलाकर लुभाऊं और महावीर धर्म्मपरायण-राजा-महाराजाओंको यश अपयश धर्म्म अधर्म्मका भय दिखाकर—वशकरूं,मोहजाल फैलाकर विश्वास-

घात करूं, यह बात कठिन क्या असंभव है? विश्वासघातमें कभी चातुर्य्यताकी जय नहीं होती--धूर्त्तता पाई जाती है, और तीनों कुलोंमें लाञ्छन लगता है, और वर्णसंकर कहलाता है।

उदयपूर मेवाड़-यह राजधानी इकलिंगजीकी गादी कहलाती और मानी जाती है सो सब क्षत्रियोंको उसी इकलिंगकी दुहाई दिलाता हूं, कि मेरी बातें सुनलो पश्चात् ब्राह्मणों साधुओंको दोष मत देना, अभी पृथ्वीपर ब्राह्मण साधू हैं (भावी राजा इन्दौरके यशवन्तराव होलकरको सांईखेड़वाले दादाजी महाराजने कहा था हम ब्राह्मण हैं, तुम जहां रहो अच्छे रहो)--

ता० २०--२--२६ ई० को कर्म्मवीरमें स्थानीय तुकोजीराव होल्करका कलकत्ता मेलसे गाडरवारे जानेको कहा जाता था, कि सांईखेड़वाले महाराजके दर्शनके लिये गये हैं। यह अफवाह गलत है, क्योंकि दादाजीका शिष्य चन्द्रशेखरानन्द बीजासन देवीके मन्दिरपर ता० १३--२--२६ ई० को गया वहांपर सिपाहियोंने उनको ठहरने न दिया। जमादार व जनरल साहबने कहा यहांसे चले जाओ, नागाबाबा चन्द्रशेखरानन्द हिन्दूराज्यके अतिथिसत्कारको सराहते हुये कुम्हावत पुरेके मकान नम्बर १२ जूनी इन्दौरमें जयदेव व्यासके यहां ठहरा, कहा जाता है, कि बालूभैया शांतवृत्ति परोपकारी बुद्धिवान् एडी सी. वहां उनके पास गये और नागाबाबासे कहा, कि हमारे सरकार इन्दौर आजकल बड़े संकटमें हैं क्या आप इस कष्टको निवारण करसकते हैं? और सरकारके पास चलो। नागाबाबाने दो करोड़ तीनलाख इक्कावनहजार रुपये मांगे, कि ये रकम दो तो किसीके घर चलूं वरना उनको खुद सांईखेड़वाले दादाके पास ले जाओ। सब कष्ट दूर हो जावेंगे। बालूभैया एडी सी. ने कहा, कि सरकार इन्दौर अभी कहीं नहीं जा सकते। उनके पुत्र व

महाराणी साहिबा अवश्य जा सकते हैं, इसलिये चन्द्रशेखरानन्द अवधूत गुर्जर गौड़ ब्राह्मण होनेसे एक हिन्दूप्रजाके अधिपतिपर कमीशन बैठने व गादीसे अलग करनेका दुःख सुनकर प्रिन्सवाला सरकार व वालभैयाको लेकर ता० १८-२-२६ ई० को दादाजीके दर्शनोंको सांईखेड ले गये थे, वहांसे उस बालक्रीड़ाधारी परमहंसका आशीर्वाद लेकर ता० २०-२-२६ ई० को ही वापिस इन्दौर आगये। आशा है कमीशन बन्द नहीं होना चाहिये। बालासरकारसे दादाजीने खूबही अच्छी तरहसे बातें कीं, अपने हाथोंसे प्रसाद खिलाया, हाथमें फल दिया, गलेमें दो गुलाबपुष्पोंकी माला पहनाई और कहा यह इन्दौरके राजा हैं "जे यहां काहेको आते हैं" पीठ ठोंककर उनके साथियोंको भी बड़े प्रेमके साथ बिना मारपीट किये आज्ञा दी जाओ, यह दृश्य कात्रिल दीद था। एक हजार एक सौ एक रुपया भेंट और अनेक प्रकारके सुगन्धित पदार्थ धूनीके लिये और फलफुरूट मेवे मिठाईयोंसे उस सांईखेडग्राममें दादाजीके समक्ष एक प्रकार वे मोसमका अन्नकूट दृष्टिगोचर था, रुपयों व प्रसादके लूटनेवालोंके झुन्डके झुन्ड तैयार थे, युवराजकी आंखमें मिर्चका बीज घुसा था चन्द्रशेखरानन्दने निकाला, चबूतरेपर किनारे बैठनेसे चित्त गिरनेवाले थे। युवराजको चन्द्रशेखरानन्दने झट गोदमें लेकर संभालकर बिठा दिया, यह दो बातें याद होना चाहिये। युवराजको चन्द्रशेखरानन्द अवधूत नंगेके साथ जाने आनेसे निर्विघ्न दादाजी धूनीवालेके दर्शन कर जनताको अपनी गंभीरता दर्शन देते हुये प्रिन्स युवराज बालासरकार इन्दौर आगये। होल्कर सरकार कमीशन हरगिज स्वीकृत न करेंगे, यदि किया तो पूर्व्वजोंके नामपर धब्बा खाना है "जो पैदा हुआ है वह एक दिन जरूर मरेगा" नेकनामीसे मरना, मुँह काला कर जीनेसे अच्छा है। एक सच्चा प्रेमी।
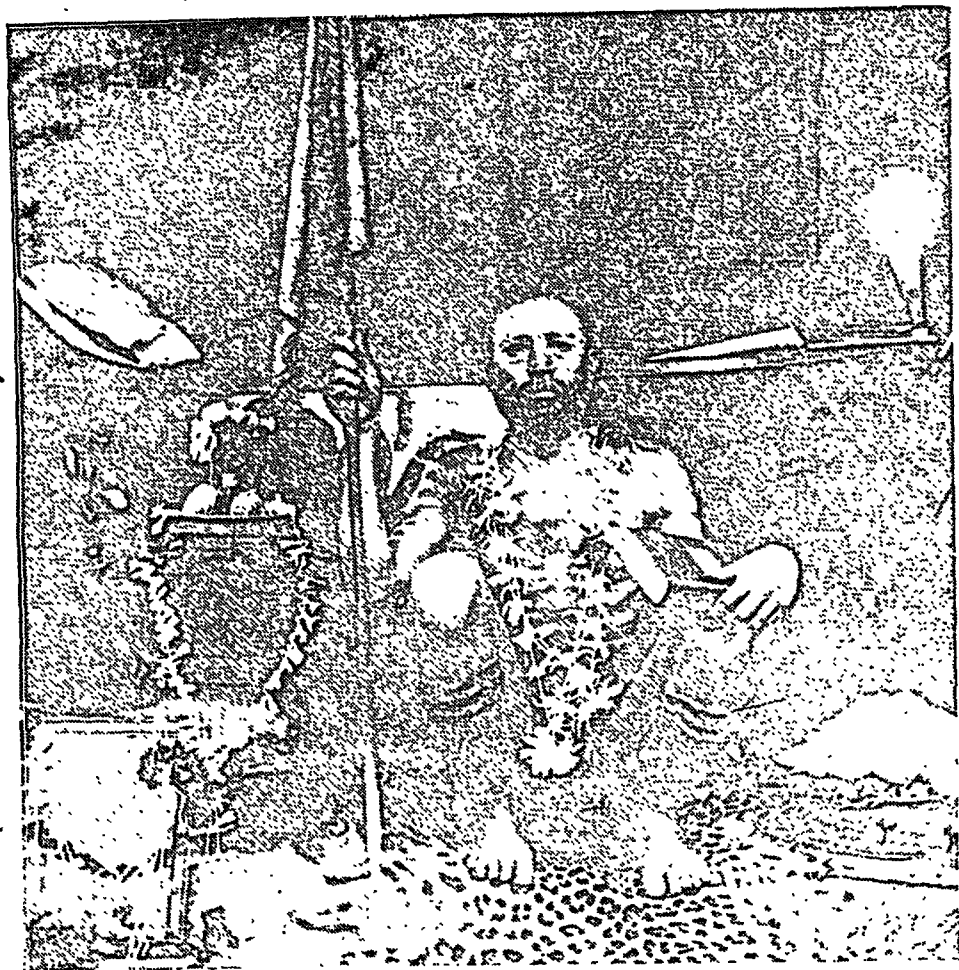
श्री धूनीवाले दादाजी महाराजको गुरु माननेवाला-हिन्दी-
मास्टर गंगाप्रसाद उर्फ नन्हेंलाल व्यास ब्राह्मण गुर्जर
गौड़ बड़ी संप्रदाय भोपाल निवासी—चन्द्रशेखरा-
नन्द अवधूत—महालक्ष्मी देवल—मुंबई.

" नक्कारखानेमें तूतीकी आवाज़ "
" अन्धेरेका प्रकाश "

ता० २३ मार्च सन् १९२६ ई० मङ्गलवारको "सांजवर्तमान समाचार पत्रमें" हेडिंग " नवा होल्कर पासे धूनीवाले दादाजी नामना साधूनी मांगणी " " राज्यनी तिजोरी मांथी त्रण करोड़ रुपीया आपे" ता० २० मार्चको इन्डियनडेलीमेलमें जो ये गप गोला चाले छे मैंने पढ़ा और देखा, वेङ्कटेश्वर समाचारपत्र व बम्बई समाचार पत्र व नवाकालके पाठकोंको याद होगा कि यह चन्द्रशेखरानन्द वही नङ्गा पागल साधू है, कि जो आज चौदह वर्षसे ब्रह्मचर्य्याश्रम—गौरक्षा गौशालाके लिये भारतके धर्म्मावलम्बियोंसे मांग रहा था, कि दो करोड तीनलाख इक्कावन हजारकी शीघ्र व्यवस्था करो और सन् १९२१—२२—२३ ई० ३ वर्ष वार्डनरोड महालक्ष्मी खाक चौकमें पड़ा रहकर " भारतकी दशा " नामकी पुस्तक बंबई प्रजाके सामने प्रकाशित की थी उसी समय किसी सज्जन प्रेमी श्रेष्ठ बुद्धिवान् गृहस्थ मीठवालेने अवधूत भेषको दादरकोर्ट मजिस्टरेटसे नंगे पागलको ५) रुपये नंगे रहनेपर दण्डित व रुपया न देवे तो तीन दिनका कारागार जेलखाना भुगतना " किसी भक्तने रुपया दिया " यह वही नङ्गा पागल अन्नजलके प्रभावसे इन्दौर जा निकला था। वहीं वीजासन देवीका मंदिर एक पहाड़पर है, उस पहाड़पर वीजासन देवीका दर्शन किया और आसन भी लगानेका विचार किया क्योंकि, चन्द्रशेखरानन्द नागा स्वामी आजके २० वर्ष पहले " गुर्जरगौड़ ब्राह्मण बड़ी संप्रदायका था " इसलिये उसकी इष्ट देवी कुलदिव्याका मंदिर इन्दौरराज्यमें सुनकर, देखकर, उस नंगेपागलको उस पहाड़पर आसन लगानेके विचारसे कुछदिन जीवनके वहीं निकालनेके लिये मन्दिरमें ठहरा। देवीकी आराधना दो घण्टेमें ही करनेसे सिपाहियोंकी जबानमें जो आया फुंकार भरते रहे, कोई कहता है, कि गवर्मेन्टका जासूस खुपिया पोलिस है

कोई कहता है, कि यह बदमाश–लुच्चा–रंडीबाज़–जूयेबाज़–नशेबाज है। इसको बन्दूकके कुन्दे मारकर नीचे उतार दो। ऐसी मुझे सिपाहियोंकी जिह्वारूपी सरस्वती जगदम्बा देवीने आकाशवाणी सुनाई कि "यदि मन्दिरसे नंगेसाधूको मारकर उतारा तो ठीक नहीं–" इतनेमें यमदूतोंकी चिल्लाहटसे ध्यान बांध श्लोकोंद्वारा आराधना करना भी अति दुस्तर होगया। सुबेदार, हवल्दार, जमादार, नायक सिपाही सबके सब यूथ जमा होगये इर्द गिर्द किसी भी जगह आसन न लगाने दिया, मैंने बहुत ही नम्रता की, तीन महीने तीनदिन नहीं तो तीन घंटे ही हिन्दूराजाकी देवीके मन्दिरपर आनन्द लेने दे, पर न लेने दिया, इस दुःखसे मेरी आवाज निकल पड़ी, कि मन्दिरसे तुम लोग मुझको नहीं उठाते हो, मालूम होता है, कि तुम अपनेही राजाको "स्थानच्युत" गादीसे उतारना चाहते हो, यह १४ फरवरी १९२६ ई० की बात होगी। उस राज्यमें और कोई जगह पसन्द न आई, निराश हो चार घंटेका यह खेल देख पहाडसे वापिस उतरा। दो मील शहरकी तरफ लौटा, सड़कपर एक भैरोंका स्थान था। कुछ टीनके पत्रोंसे छाया हुआ था, उसमें चार घंटे बितानेका तथा विचार करनेका अवसर मिला, निकट सायंकालके निश्चय किया कि रामेश्वरकी यात्रा करो, उसी देशमें जीवनके दिन व्यतीत करेंगे, स्टेशनका रास्ता लिया, तत्काल मेरे दादाका भक्त नारायण गुजराती मिला, मुझहिरासा अपमानित दीन हीन नंगे पागलको अपने इष्ट देव कुल दिव्या-बीजासनपर शीघ्र विश्वासने विश्वास दिला विश्वासको पुष्ट किया, उस भक्तने बड़ी ही नम्रतासे अनुरोध किया कि आप मेरे घर धूनी लगाओ–"परन्तु मुझको तो करतल भिक्षा तरुतलवासका उपदेश था" वहां भी इच्छा न जमी, उससे कहा जूनी इन्दौर कुम्हार बाड़ेमें जैदेव व्यास गुर्जर गौड़के पास चन्द्रेश्वर महादेवके यहां ले चल, उसने वहां लेजाकर छोड़ दिया, वहां

तीनही दिन रहनेपर इन्दौर सरकारके केशियर बालू भया मेरे पास आये और कहा मालूम होता है आप दादाके शिष्य हैं, राजाके पास चलो उसका दुःख दूर करो, मैं सिपाहियोंद्वारा दुःखित तो था ही उत्तर दिया, कि नहीं, मैं नंगा साधू अवधूत फकीर हूं, कहीं घर जाता नहीं, वही मेरे पास आ सकता है, या दादाजीके पास जाकर दुःख दूर करा सकता है, क्योंकि राजदरबारके सिपाहियों जमादार हवालदार और सूबेदारने जो मुझको मंदिरसे उठानेका दुःख दिया, उस समय अत्यन्त नम्रता आजिजी की कि मंदिरमें दो तीन घंटे बैठने दो, दिन है रात नहीं, परन्तु उन लोगोंने एक न माना तो ध्यान करके मैंने यह कहा कि देखो भाई तुम मुझे मंदिरसे उठाते हो, या अपनेही राजाको गादीसे उतारते हो, हमारी बद्वा मत लो, आखिर इतना कहना भी न माना, फिर मैं सख्त लाचारीसे हाय अफसोस करता रहा। एक हिन्दू राजाके राजमें एक ब्राह्मण नंगे साधूको दो तीन घंटे मंदिरमें बैठनेका भी हुक्म नहीं है!

इन्दौरकी यह गादी स्वर्गवासी महासती महाराणी अहिल्या बाईसे चली आती है कि जिसके नामसे आज भी लाखों करोड़ों रुपयोंकी सखावत व पुण्य होता है जो सारे हिन्दोस्तान भरमें मशहूर है, कि इन्दौर राज्य अहिल्याने शंकरके अर्पण करदिया है, फूल बिल्वपत्र खजानेपर चढ़ा शिव निर्माल्य माना था, उसी राजके मन्दिरसे हम अवधूत भेषके परमहंस साधूको उठाया, मुझको तो नहीं उठाया, परन्तु राजाको ही उठाया-उठादिया, ऐसा मैंने बालू भैयासे कहा कि अब मुझसे कुछ नहीं हो सकता अब दादाजीके पास जानेसे दुःख दूर हो सकता है, यदि राजा उनके पास गया और "काम" उसके दिलके माफिक न हो तो मेरा भी बलिदान बीजासनपर कर सकते हैं, राजा तुकोजीराव साधुओंकी सेवा करते २ किसी चतुर ठग सी. आई. डी. के फेरमें

पड़ चक्करमें आ चकड़म वना हुआ मुँहलगे चापलूसोंने और भी पक्का याकूत वना रखा था, महारानी अहिल्याका इन्दौर राज्य शिवनिर्माल्यको वेश्या दवीके अर्पणकर आप सीधे "स्वर्ग" स्वीज़रलेन्डकी सैरको तशरीफ लेगये, और एक मेमको हिन्दू वना शीघ्र शादी करली। हिन्दू वनानेवाले विष्ठाको भी हलवा वना देंगे ।

अस्तु, दूसरे दिन मेरे पास उक्त व्यासजीके मकानपर वालू भैया फिर आये कहा राजा तो सी. आई. डी. के डरसे नहीं जा सकता, पर उनके स्त्री-पुत्र जा सकते हैं, मैंने उत्तर दिया, जो जायगा वही लाभ उठा सकता है, वदलेका खेल नहीं है, रोटी कोई खावे, पेट किसीका भर जावे यह प्रकृति मर्य्यादा पुरुषोत्तम नेचरलशक्तिके वाहर है, तव फिर वालू भैयाने कहा राजाका पुत्र युवराज वाला सरकार और आप जाकर इस उपकारको करो, जो "प्रजा पालक" हमारे राजाका दुःख दूर हो, मैंने फिर उत्तर दिया कि मैं पंडा नहीं वनना चाहता, आप खुद युवराजको सांईखेड़े लेजाकर लाभ उठा सकते हैं । इतना सुननेपर वालू भैया और दो चार प्रतिष्ठित सज्जनगण गुर्जर गौड जातिके जो उस समय वहां उपस्थित थे उनके अनुरोधसे १८ फरवरी सन् १९२६ ई० को इन्दौरके युवराजको सांईखेड़ लेजाकर ता. १९ को दर्शन कराया ।

"दर्शनका दृश्य"

जिस समय युवराजको लेजाकर दादाकी शरणमें पहुँचा, धूनीवाले दादा शयनमें थे कोई रातके वारह वजे जागृत होकर (कभी सोते नहीं है निद्राजीत हैं) कहा जाओ, सवेरे सात वजे आना, चले गये स्टेशनपर सैलूनमें ही मुकाम था, सात बजेके फिर दस वजे दादाजीके सन्मुख उपस्थित होतेही युवराजने चरणोंपर शीश नवाया तो दादाजी श्रीमुखसे कहते हैं कि "इन्दौरके राजा यहां काहेको आवत हैं-" "ये तो ऊधम शहरके हैं" युवराजका शीश दादाजीके चरणोंपर ही रखा हुआ

था, दोनों हाथ दादाजी युवराजकी पीठपर ठोंककर फिर कहते हैं "इन्दौर रहते हो या इन्डोर" "कहां रहते हो" "जहां रहो अच्छे रहो" "बकरी या बकरा" "दो अन्नी देता है का देता है" "क्यों ? देता है" "शेर बनो रहो कुछ मत दो" "हम तो ब्राह्मण हैं" दूसरा कोई "पृथ्वीपर नहीं है" " एक बुड्ढे डाक्टरसे पूछा काहेके लिये आये हो ? तो उस समझदार डाक्टरसे होनहार बात युवराजको गादी होनेकी निकली, कमीशन या गादीसे उतारनेकी कोई भी बात न निकली" इसप्रकार अनेक शब्द उच्चारण करते हुये डाक्टरकी बातका उत्तर पातेही "युवराजकी पीठ ठोंक" "कूये पै आसन जोगीका जलभरूं कि रीति जाऊँ" गाते रहे, इसके सिवाय और कुछ समझमें नहीं आया (यही सब शब्द कागज़पर लिखकर बालू भैया द्वारा युवराजको दे दिये) दादाजीने वृद्ध डाक्टरसे पूछा काहेके लिये आये हो ? उसने कहा युवराजको गद्दी हो, यह सुन दादाजीने अपने गलेकी माला फूलोंकी उतार कर युवराजके गलेमें पहरा दी, दाल रोटी अपनेही हाथोंसे खिला दिया, फिर युवराजकी पीठ ठोंक दी, इतने दृश्यपर युवराजने मुझसे कहा कि आप सांईखेड़ेमें ठहरेंगे या इन्दौर चलेंगे ? मैंने उत्तर दिया—साथही आपके इन्दौर चलूंगा क्योंकि मुझे भी मायाका तमाशा देखना था, दादाजीके दर्शन बाल सरकार इन्दौरने चन्द्रशेखरानन्दके साथ जाकर किये।

मैं चन्द्रशेखरानन्द २० फरवरीको युवराजके सहित इन्दौर आये, जूनी इन्दौरकोतवालीके पीछे चन्द्रेश्वर महादेवके स्थानपर आसन लगाया। क्योंकि बालासरकार जब स्टेशन इन्दौरपर उतरे तो बालूभैयाने मुझसे कुछ नहीं कहा वह चले गये मैं चन्द्रेश्वरमहादेवपर चला गया (बालूभैयाने मुझसे दादाजीके शब्दोंका अर्थ पूछा था मैंने उत्तर दिया, कि आप राजदरबारके नमक खुवार बडी २ तन्खुवाह पानेवाले हैं बड़े बुद्धिवान् चंचल चतुर हैं, मैं तो भीख मांग टुकडा खानेवाला क्या अर्थ समझाऊं आप ही जाने) इसलिये अस्तु इसके बाद युवराज बालासरकार

११ मार्चको गादी नशीन हुए उसी दिन मैंने नीचे लिखा हेन्डनोट छपाकर इन्दौरराज्य व सब समाचार पत्र हिन्दी हिन्दुस्थानभरमें प्रकाशित किया था जो अपने १४ वर्ष२०वर्षके परिश्रमका अनुभव था "वह भिक्षा" एक भिक्षुक ब्राह्मणका बालक मांग २ थक जानेपर आजके १४ वर्ष पहलेसे नंगा पागल हो नीचे लिखा हेन्डनोट छपा बांटकर अपने परिश्रमको पंडागिरी राजाकी करके दक्षिणारूप भिक्षा मांग सफल समझ रामेश्वरयात्राको चला गया, कि युवराज तीन वर्ष बाद विलायतसे आकर पूर्ण अधिकार पाते ही दीन नंगे पागलकी मांग पूरी कर " परोपकार " यह शुभ कार्य्यमें अवश्य दत्तचित्त होंगे, पिताकी तरह रंडीबाज न होकर अपने पूर्वजोंकी तरह नाम अपनेको यशस्वी " यथा नाम तथा गुणाः"होकर संसारको चकित कर यशवन्तराव होलकर सरकार इन्दौर कह लायेंगे आशा करता हूं, कि उनके गार्जियनसाहब मुसाहिब सज्जनगण बालासरकारको आनेपर वा इखत्यार होनेके समय परोपकारकी बातोंका स्मरण दिला " भारतजीर्णोद्धारके लिये " भारतमें चार गौशाला, चार ब्रह्मचर्य्याश्रम भारतकी चारों दिशामें स्थापित करेंगे और भारतमें गौरक्षाका बीड़ा उठायेंगे। दादा आश्रमका दृश्य न भूले होंगे, इन आठों स्थानों पर वेदकी धुनि गुञ्जाया करें। रामेश्वर यात्रा कर आज तीन माससे भवानीशंकर रोड दादर शैतान चौकी नया कुम्हारवाडा रहकर फिर महालक्ष्मी बार्डन रोड खाक चौकमें पडा जीवनके दिन व्यतीत कर रहा हूं, मार्च २६ सनूसे आज तारीखतक इन्दौर और सांईखेडके विषयमें जिस जिस पत्रमें जो जो लेख छपे हों सम्पादक महाशयगण भेजनेकी दया करें, कष्ट उठायें और किसी प्रकारकी पूंछ तांछ हो नीचेके पतेसे प्रत्येक प्रेमी पत्रद्वारा या स्वयं ही मिलकर " ॐकार—निर्विकारं शंकर कैलासवाले" का मजा लूट व लुटा सकते हैं। शक रफा कर सकते हैं-हेन्डनोटकी नकल जो-बाला साहब सरकारके तिलक गादी बैठनेके समय प्रकाशित किये थे।

जय श्रीधूनीवालेदादाजीकी ।

रक्षा करो हमारी दादाजी धूनी वाले ।
ओंकार निर्विकारं शंकर कैलाश वाले ॥
मशहूर होरहा है, दुनियांमें नाम तेरा ।
हे धूनिवाले दादा, करलो शरणमें चेरा ॥
तुमहो हमारे मालिक, दादा दयाके सागर ।
अब ध्यान धर रहा है, आलम तमाम तेरा ॥
क्या मर्द और नारी, क्या राजा और भिखारी ।
विश्वास कर रहा है, सारा जहान तेरा ॥
सुनकर पुकार मेरी, करते हो अब क्यों देरी ।
लाचार हो रहा है, दुःखसे यह दास तेरा ॥
दुःखसे हुआ है गारत, बख्श यह मेरा भारत ।
अब तुम्हींको पुकारत, कर दीजिये पार बेड़ा ॥

जनाब बालासाहब यशवन्त रावजी होलकर सरकार इंदौर !

आपने जो सांईखेडेवाले दादाजी " योगी " का दर्शन किया उसके उपलक्ष (पुरस्कार) में नीचे लिखी तीन बातें आप स्वयं व अपने पिताजीसे स्वीकार कराकर मेरी इच्छायें पूरी करिये—

भारतजीर्णोद्धार.

(१) वर्णधर्म्म—वर्णआश्रम रखनेके लिये चारों दिशाओंमें चार ब्रह्म-

चर्य्याश्रम, चार गौशालायें बनवानेके लिये दो करोड़ तीनलाख इक्कावन हजार रुपयोंकी आपको शीघ्र व्यवस्था करना चाहिये ।

(२) गवर्मेन्टसे गाडरवारा तहसील खरीदकर जहां दादाजी रहते है उस स्थान सांईखेड़ेको अच्छा रमणीक शहरकी तरहपर बनवा दीजिये. पासहीमें नर्मदा है उसके तीन पक्के घांट, पक्की सडक, धर्मशालायें; अन्नक्षेत्र और रोशनीका भी काफी इन्तजाम होना चाहिये । यह प्रबन्ध इन्दौर राज्यसे सच्चे प्रेमसे आपके व आपके पिताजीके प्रसन्न चित्त द्वारा दादाजीका स्थान सङ्गमरमरका कैलाश बनना चाहिये । (अब सांईखेडा छोड़ आपके राज्य बड़वायेमें हैं ।)

(३) मैं काशीवास करना चाहता हूं इसलिये मणिकर्णिका घांट काशीमें एक ब्रह्मचर्य्याश्रम—ब्राह्मण गुर्जरगौड जातिके लिये बनवा दिया जावे और उसके खर्चेमें पांच हजार रुपया माहवारका प्रबन्ध हो जिससे बालकोंद्वारा इन्दौर राज्यकी जय मनाया करूं और चारों धाम तीर्थयात्राके लिये ४०-५० (चालीस-पचास)हजार रुपया स्टेटसे मिले जिससे तीर्थकर काशीमें पडा रहूं । " शशांक शेखरानन्द—अति मिष्ट स्वरे । सर्वनर गणे कहे भजि विश्वंभरे"

स्थान—चन्द्रशेखरानन्द चन्द्रेश्वर महादेव कोतवालीके पीछे जुनी इन्दौर सांईखेडेकी हालत मुझको सन् १९१७ ई० से मालूम थी इसी लिये इन्दौरके राजासे यह हेन्डनोट छपाकर भिक्षा मांगी थी, अब दादाजी महाराज इंदौरराज्यके बडवाहे मुकाम पर मुकाम किये हुये हैं । गादी नशीन राजाको चाहिये, कि दादाजी महाराजको अपने राज्यसे न जाने देकर उनके लिये नर्मदा किनारे मेरी मांगके मुवाफिक कैलास अवधूत आश्रम व क्षेत्र कायम किया जावे, ऐसी प्रार्थना करते हैं । इति शम्.

॥ समाप्त ॥

अन्तिम संदेश ।

सर्वशक्तिमान् परमात्माने प्रकृतिके कुछ ऐसे नियम बनाये हैं, जिनका कोई भी उल्लङ्घन कर नहीं सक्ता । परमात्माके एक नियमको हम काल-की गति कहते हैं । कालकी गति बड़ी बलवती है । इसने तुच्छसे भी तुच्छ व्यक्तिको उन्नतिकी चरम—सीमा तक पहुँचाया और उत्कृष्टसे उत्कृष्ट व्यक्तिको अधोगतिको प्राप्त कराया । इसी कराल कालकी गतिसे आज हमारा भारतवर्ष भी अधोगतिकी चरम सीमातक पहुँच गया है । भारतमाताके सुपुत्रोंका प्रधान कर्तव्य यह है, कि वह यह उपाय सोचें—जिससे भारतमाताका मंगल हो । मैं सन् १९१२ ईस्वीसे अपनी भारत—माताकी सेवामें लगा हुआ हूँ । अबसे कुछ समय पहले "सबसे निवेदन" ता. १७ जनवरी १९१६ ई० को हिन्दी वङ्गवासी व कलकत्ता—समा-चार पत्रमें "नरेशोंसे प्रार्थना" की थी । उसमें वर्तमान युगके विषयकी बातें थीं, कि जिनको सन् १९१२ ई० से श्रीमान् महाराणा उदयपूर, महाराजा ग्वालीयर, महाराजा इन्दौर, महाराजा गायकवाड़—बड़ौदा, महाराजा दर्भङ्गा, बीकानेर नरेश, महाराजा जम्बू, रीवांनरेश, काशी-नरेश, महाराजा ताहिरपुर, पंडित मदनमोहन मालवीयजी, महामना तिलक, श्रीमती भोपालबेगम सुलतानजहां साहबा, जयपूरके खवास बालाबक्स व नवाब फैयाजुद्दौला वजीर जयपूर आदिको कहा । सरदार गांधी व हकीम अजमलखां, डाक्टर अन्सारी और अनेक हिन्दी समाचार—पत्रोंको भी लिख भेजा । परन्तु जान्ने और कहनेपर भी अच्छे २ बुद्धि-वानोंको भी कालकी गतिहीमें प्रवेश करना पड़ा अर्थात् वर्तमान युगपर किसीका विश्वास ही नहीं होता । क्या होरहा है—क्या होना चाहिये । इसी सेवाके लिये मैंने प्रायः सभी देशीय महिपालोंसे कहा; किन्तु मुझ

जैसे दरिद्रीकी वात किसीने नहीं मानी । नई शिक्षासे शिक्षित जो पुरुष कांग्रेस, मुसलिमलीग आदि सभा-सुसाइटियां, प्रभातफेरियां कर २ के स्वराज्य मांग रहे हैं, उनको उचित है, कि पहले अपने धर्मकी जड़ोंको दृढ़ करें और वर्ण-व्यवस्थाकी रक्षा करते हुये स्वराज्यकी पूर्णरूपसे इच्छा प्रकट करें । भारतके दण्डी स्वामियों तथा राजाओंको उचित है, कि धर्मकी जड़ें दृढ़ करें और सप्तपुरियोंके शास्त्रज्ञ पंचगौड़ पंचद्राविड़ ब्राह्मणों-पंडितोंद्वारा वर्ण-व्यवस्थाकी पूर्णतः रक्षा करें । यदि यह वातें याद रहेंगी और स्मरण होंगी तो इसीके साथ २ यह भी याद होगा, „ यह अक्षरशः वातें सत्य हैं क्या ? मैं यह आशा कर सकता हूँ कि स्वराज्यवादी और महिपालगण मेरी इन वातोंकी ओर ध्यान दें और भारतका जीर्णोद्धार करें ।

यदि देशीय महिपालोंद्वारा यह काम न होसके तो वड़ाही आश्चर्य्य है, फिर जिस तरह "होमरूल गूलरके फूल" या स्वराज्य "वहिष्कारके लिये" चिल्लाया जाता है, उसी तरह वर्ण-व्यवस्थाके लिये भी "हिन्दू सनातनियोंको आन्दोलन करना चाहिये" । यह स्मरण रखना चाहिये, कि जवतक आप हिन्दुस्थानकी हिन्दुशास्त्रमार्य्यादापर विश्वास कर ऐसा न करेंगे, तवतक आपका कोई उपाय फलीभूत हो न सकेगा और वर्ण-व्यवस्थाकी मर्य्यादा रक्षा करनेके लिये शीघ्र ही कटिवद्ध हो जाइये । यदि शीघ्रही ऐसा न किया गया तो सम्भव है, कि दो तीन ही वर्षमें सर्व नाश उपस्थित हो—जैसे आजकल व्यौपारियोंका आन्दोलन व्यौपारके शिरोमणि मंचेस्टरसे दिवाले निकालनेका उपयोग सरदार वैरिस्टर गांधी-द्वारा होरहा है उसी प्रकार भारतके धर्म्मावलम्वि धर्म्मस्तम्भोंको मंजन करते हुए प्रत्येक देशवासियोंको भारत धर्मकी झांकी दिखा हृदयके

उद्गारोंका गुच्छा भादों कृष्णपक्ष अष्टमी रविवारको कृष्णजन्मोत्सवके उपलक्षमें जन्म अष्टमीके एक दिवस प्रथम शनिवारको खेमराज श्रीकृष्णदासके छापेखानेमें एक हज़ार प्रति छपा तैयार करा, अधर्मरूपी कंसको नाश करनेवाले—सखियोंके साथ खेलनेवाले कृष्णरूपी उद्गार प्रकाश नाम जन्म उदय किया भारतियोंको मेरा यह अन्तिम संदेश है।

——स्मरण रखें।

भारतवासियोंको देशकी दशासे कंसके नाश करनेवाली जन्मअष्टमी कृष्णजन्मकी याददाश्तसे स्मरण रखना चाहिये और इसीलिये, इन उद्गारोंका नाम "भारतकी दशा" पुस्तकका नाम रख प्रत्येक भारतवासियोंको सावधान किया है। कितनेही हिन्दू इस समय अपने सनातन हिन्दू धर्म्मकी जो अवहेलना कर रहे हैं—वर्णाश्रमधर्म्मके पीछे हाथ धोकर पड़गये हैं, उन्हें इस "भारतकी दशा" नामकी पुस्तकके इन उपदेशोंपर पूर्ण ध्यान देना चाहिये। देशके जो नेता—ब्रह्ममंडली-शास्त्रज्ञसमूह स्वराज्य प्राप्तिके लिये "भोलेका नाम प्यारा हम आठों याम लेंगे" छोड़कर चर्खा चलाचलाकर—जुलाहे बन २ कर आन्दोलन कर रहे हैं, उनको भी यह "भारतकी दशा" उपदेश है, कि राजनीतिक स्वाधीनताकी प्राप्तिके उद्योगमें अपनी धर्म और सभ्यता रूपिणी अमूल्य सम्पत्तिको नष्ट मत होने दो। साधू संन्यासियोंकी उपयोगिताका भी समर्थन करो। यह उद्गार जन्मअष्टमी भादों कृष्णपक्ष रविवारको लिख महालक्ष्मी खाकचौक वार्डनरोड़ बंबईमें प्रातःकाल नौबजेके उपरान्त समाप्त कर यही भूमिका व प्रस्तावना समझ १९११ ई० में पिता पंडित कन्हैयालालजी दामोदर द्वितीय पंडित मदर्सेः सुलेमानी हाईस्कूल भोपालका स्वर्गवास

होनेसे हिरासा होकर काशीविश्वनाथकी शरण ली। सन् १६ ई० में काशी छोड़ दादाजीकी शरणमें आगया। दर्शन देनेके कारण काशी छोड़ी उनकी यौगिक लीलायें देख इस चित्रमय जगत्में गूलरका कीड़ा बनाहुआ पड़ा जीवन व्यतीत कररहा हूँ।—इति।

दादाजी महाराजकी "हवनपद्धति" अग्नि देवता मालूम पड़ता है, क्योंकि हे अग्ने! तू हविको धारण करनेवाला सब देवोंका मुख है। तू सब प्राणियोंके अन्दर निगूढ़ रहकर साक्षीवत आचरण करता है। ज्ञानी तुझे एक कहते हैं एवं त्रिविध कहते हैं—हे हुताशन! तू जगत्को छोड़ देगा तो तत्काल जगत्का नाश होजायगा, पत्नी और पुत्रोंके साथ विप्र ? प्रणाम करके अपने कर्म्मसे शाश्वत सद्गतिको प्राप्त होते हैं। तू पोषण करता है, तू भुवनोंका जन्मदाता है, तू जगत्की प्रतिष्ठा करता है। हे अग्ने! विद्वान तुझे जलप्रदान करनेवाले मेघ कहते हैं। एवं विद्युत कहते हैं। तुझसे निकलकरके सब प्राणियोंको धारण करती है। इसप्रकार प्रार्थना कर ध्यानमें लाकर मंत्रोंद्वारा अग्निको आहुती देना चाहिये। दैवी सम्पत्तिवालोंको परमात्मसुख है और आसुरीवालोंको आसुरी सु[illegible] नरकके कीड़ोंको नरक सुख जहां सम्पत्ति है वहीं सुख है, परन्तु सम्प-त्तिके भेदसे ही सुखका भी भेद है। सर्वत्र दादा परमात्माकी मधुर मूर्ति देखकर आनन्दमें मग्न रहो जिसको उसकी मूर्ति सब जगह दीखती है, वह तो स्वयं आनन्दस्वरूप ही है, शान्ति तो तुम्हारे अन्दर है। कामना-रूप डाकिनीका आवेश उतरा कि शान्तिके दर्शन हुये। वैराग्यके सत्य महामंत्रसे कामनाको भगा दो फिर देखो सर्वत्र शान्तिकी शान्त मूर्ति-स्व-राज्यका दर्शन ही दर्शन है। ब्रह्मर्षियोंने तो राज्य क्षत्रियोंको दे दिया

था और भोलेके स्मरणमें तन्मय मग्न दिखलाई देख पड़ते थे। आज वर्तमान दशामें भारतकी दुर्दशापर शीघ्र कंसकी तरह कपकपा जाना चाहिये और अपनी २ मर्य्यादापर आरूढ़ हो जाना चाहिये।

अत्यन्त जलके पीनेसे, विषम आसन—भोजनसे, दिनके सोनेसे, रातके जागनेसे, मूत्रविष्ठा रोकनेसे ये छे प्रकारसे रोग उत्पन्न होते हैं।

भारतमें साधुओंमें वीर्य्य प्रधान है। मेधा प्रज्ञादिक सबही इसके आधारपर रहती है। यदि यह शुद्ध और पुष्ट रहें तो मनुष्य बलवान, बुद्धिवान, तेजस्वी, सुन्दर तथा निरोग रह सकता है तबही प्रकृतिका अनुभव कर सकता है।

अय हिन्दू भाइयो! हम सबोंके उपस्थित होते हुये-भारतियोंको हिन्दुओंमें भक्त कहलाते हुये अपने धर्मपर हस्तक्षेप दूसरोंको करते देखते हुयें ऐसा मौका कभी भी शायदही किसी मताबलम्बियोंको "साधुओंपर अत्याचार करना" देखना पडा होगा। अधर्मी कलियुगी इस समयमें हिन्दू गृहस्थ कहलानेवाले जिलाधीशोंने धमनीति छोड राजनीति द्वारा अन्याय के अधर्म फैलाकर आग सुलगा दी है "भारतीयोंने आतिथ्य सत्कार" करते हुए अपना हाकिमानापन आखिरी नई रोशनीके प्रकाशमें चमचमा ही दिया—साधुओंसे दुर्मुख व उदासीन होना एक घातिक सामाजिक राजकीय एवं व्यावहारिक अपराधके समान है। इसलिये, हे सनातन धर्मावलम्बिय गृहस्थो! ईश्वरसे सदैव प्रार्थना करते हुए हिन्दुओंको अपने २ ऋषिमहार्षियोंके नियमोंके पालन करनेकी शक्ति-बुद्धियोंको जोर दे देकर शीघ्रतासे अपने २ परोंसे खडे होजाना चाहिये—"हिन्दू धर्ममें हस्तक्षेप करनेवालोंको क्षणभरके लिये भी कभी न भूलो" अखड वाल ब्रह्म-

चारी दादा अवतारी शंकरस्वरूप ईश्वरीय सवरूपोंकी लीला दिखानेके हेतु इनकी यौगिक लीला देखो (बाइसकोप नाटक आदि बनावटी हैं) यौगिक लीलाकी सत्यतासे मनको न हटाओ—नास्तिको-आस्तिक बनो।

भारतके सभी पत्रोंके सम्पादक महाशयो ! कृपाकर कृष्णजन्मके उप लक्षमें मेरे उद्गारोंकी "भारतकी दशा" नामक पुस्तककी यथाविधि समा लोचना कर "ये श्रीकृष्णसंदेश" पत्रोंरूपी तारसे भारतवर्षकी गोपियोंको यह संदेश दिया जावे कि जो बालिकायें स्कूलोंमें पढ़ाई जाती हैं उनको "स्वर व्यञ्जन" ह्रस्व दीर्घ प्लुत मात्रायें और कौन २ अक्षर कौन २ स्थानसे उच्चारण होता है यदि पाठिकायें व हेड पंडतानियां प्रथम स्वयं पंडितोंसे साफ कर समझलें—तब बालिकाओंकी नीव साफ करदेंगी, तो भविष्यमें वह बच्चियां यौवन अवस्थामें प्राप्त होकर भाव कुभावको खूब समझकर अपने कुटुम्ब व पति अथवा जिस २ से उनका सम्बन्ध होगा उनकी पूर्ण बात समझ सकेंगी। ये अबलाजाति-फिर सहसा क्रुद्ध या आतुर न होसकेंगी। फिर भारतकी ललनायें "पापकाण्डसे" बच अबला कलं कसे कदाचित् रहित होजांय-अपमानसे बचेंगी—फिर सुयोग्य मातायें बन उनके बराबर पालनेहारा कौन होसकेगा—सुयोग्य माताओंके समान संसार में और कौन अनुराग है जो संतानोंके लिये अपने प्राणोंको भी तुच्छ समझती हैं। माताके समान संसारमें और कौन वस्तु है। सुपुत्रोंको उत्पन्न करनेवाली सुयोग्य मातायें जगमें पूजनीय हैं। ये सुखका सदुपयोग उपाय है। भारतीय देखें ! मातापिताओंके चरणोंपर अपने प्राण वारें यही संतानका धुरंधर-धर्मी धीर-धर्म धारें। मसल मशहूर है "चोट बेटेको लगी माताका कलेजा चूर है" आज भारतमाताके पुत्र सुपुत्र कुपुत्र सभी दुःखी होरहे हैं। भगवान् सबको सबकी करें। इति शम्।